

GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A_001_0112**

Classification:

Original File No. 24

Title

Head-Supervisor of Lutheran Schools M.E. & Primary Schools

Volume:

Running from year: 1931 till year: 1932

Content:

- Letter to Sec. Dt. 11-4-32, 5-4-32, 4-4-32, 3-4-32, 6-4-32.
- Inspection report of Lutheran M.E. School, Koronjo by Dist. Inspector of schools.
- Letter to divisional Inspector of School by P. Hurad on 29-3-32.
- Audit Report of Lutheran M.E. School, Takarma.

129
193 .

1931-1932



FLAT FILE

(A. Quality)

le Subject *M. E. & Primary Schools.*

ame *Head-Supervisor of L. Schools.*

om (months) *the 1st May, 1931 to 30th April, 1932.*

Serial Nos. _____ to _____

File No. *24.*

File

Church Council
Received 14.4.32
No. 874
Date 11.4.32
At 24.

To

The Lutheran Church Council
Raneri

Office

Secord W
H. Supr. for
Opinion.

12/5/32

Memo No. 809
d/- 13.5.32.

At the time of making over our Pr. schools to the D.B. an untrained M.E. was teaching in the Konjoba L.P. School on Rs 8/- p.m. consequently the D.B. allotted Rs 8/- only p. month for the Konjoba school. No when a trained teacher has been engaged there it would be very difficult for the S. I/S, to bill for Rs 8/- p.m. for the Konjoba teacher. Moreover the name of Mansid Khalkho is not found in the list of teachers in any school when they were being made over to the D.B.

N. S. S.

Head Supr.

महोदय जरा !

अर्ज शुजारिस तनेदार का ऐसा है, कि मैंने कौन जोबा स्त. प्री. मिसन स्कूल (मददी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) में दो वर्ष तक हो रहा है, मास्टर का काम कर रहा हूँ। परन्तु दोन दास को अपने पास के भुताविक तलब नहीं दिया जाता है। दास त्रेनिंग पास कर अन्य स्कूल में १२ रु. पाता था परन्तु जब से यहां बदली हुई तब से शिफ्ट २ रु. मिलता है। जिससे दास को परिवार पालन पोसन करना मुश्किल होता है। क्या कारण है कि गरीब दास को २ वर्ष हो बीत जाने पर भी रेट के अनुसार तलब नहीं दिया जाता है। मैंने सब-इन्स्पेक्टर के पास दो वर्ष के भीतर बहुत आरजी किया कि मेरा तलब महवारी १२ रु. के दर से दि दीजिए। परन्तु अब तक नहीं दिया जाता है। इसको भलावे मैंने चर्मा प्रोहित हेड सुपर माईजर के पास आरजी किया। उसने जवाब दिया कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को महवारी १२ रु. देको कहना मुश्किल है मेरा कहना नहीं सुनेगा, ऐसा जबाब दिया। गरीब दास लाचार बंध कर चार्ज कौंसिल को यह बिल्य करता है। कि भीमान बहादुरगरा मेरा तलब महवारी १२ रु. के रेट से देने की कृपा कीजियो। गरीब दास पूरा आशा लगाये हैं कि महा-अध्यक्ष गरा मुझ गरीब का दुहाई ग्रहण कर मेरा कृतार्थ करे। (District Board) को किस अर्थ पर दिये है जो मेरा तलब रेट के अनुसार नहीं देता है। कृपा कर दास को सूचित कीजियो। भाइये दुपूरगरा के इच्छा को दया.

११-४-३२

लि. आप का आज्ञा दीन दास
मनसिदु बखला. कोजोबा स्कूल.
प्रो. विनमिल. रानरी.

श्री युक्त महामान्यवर महाशय लुधेरान चर्च कौन्सिल, रांची।

वजरिये हेड सुपरवेजर लुधेरान स्कूल, रांची।

अर्ज विनीत ऐसा है कि "स्कूल का भी खर्च मंडली आमदनी से चलाया जाय" इस के सफल होने के लिये चर्च कौन्सिल ने जो कमिशन बनाकर हमो को आदेश किया, हमो ने यथाशक्ति निम्न तरह से किया।

- (1) हम लोगो ने २६ मंडलियों ^{में} जाकर मंडली तथा स्कूल की दशा बता कर मंडली आमदनी बढ़ाने का उत्साह बढ़ाया।
- (2) इन मंडलियों में छड़ा सिरी पहले की कमीचा बढ़ गया है।
- (3) मंडली पैसा देने में भी मंडली उत्साहित हो गई है केवल पैसा अभाव के कारना आमदनी आना रुक गई है।
- (4) सभी मंडलियों ने मंडली आमदनी से स्कूल के खर्च के लिये देने को मंजूर किया है।

परन्तु इतना होने पर भी स्कूल के खर्च के लिये मंडली आमदनी से कुछ नहीं मिल रहा है।

मार्च ~~महीने~~ महीने को मंडली आमदनी से इतना-इतना कुछ गड़ पर देखा गया कि उस से स्कूल के लिये कुछ नहीं मिला।

जनवरी और फरवरी में स्कूल फीस और सरकारी ग्रैन्ट से हमो को रुपैया पीछे पांच आना हर महीना तलब मिला है।

मार्च महीने में कुछ भी नहीं मिला।

तलब की उपरोक्त दशा देखने से यह ज्ञात होता है कि हम लोगो का गुजर नहीं चलेगा। फिर मंडली आमदनी से भी मिलने की कुछ आशा नहीं है। इसलिये निम्न लिखित अर्ज सोदर पेश करते हैं -

- (१) चर्च कौन्सिल अपने खजाने से हमों की सहायता नोए।
- (२) चर्च कौन्सिल इलाके चेयरमैन को सूचित करे कि मंडली कामदनी से स्कूल के खर्च केलिये यथाशक्ति देवे।
- (३) यदि उपरोक्त दो बातों में से कोई एक ची साध्य न हो तो यहां के स्कूल लड़के लड़कियों को दूसरे स्कूलों में स्थान पावे का प्रवन्ध कर यह स्कूल तोड़ दिया जाय।

आप के विनीत सेवक

P. Drungdung

S. Minj

H. Hujer

D. Hoppo

D. Lugen

S. Hupar

C. H. Hauron

Kinkel M. L. School

5/4/32

Copy forwarded to Ilaka Chairman

Memo No. 653

Dated Ranchi, the 11th April, 1932.

The teachers are earnestly doing their best to raise income in the Ilaka but yet they don't get anything out of the Ilaka income. The Ilaka be urged to give to teachers their share in accordance with the proportion fixed by the C.C. If they are not paid anything out of the Ilaka fund there is no other alternative for the teachers but to resign. Forwarded to C.C. for their consideration and final action.

M. S.

Head Supervisor
Lutheran Schools, Ranchi.

Office

Sent it to the H^d Supr
for his opinion

5/4/32

389

To,

The Secretary
Lutheran Church Council, Rauchi.

Memo No. 646
d/- 6.4.32.

The applicant
has already been
informed about the
matter of his payment
and so the application
is returned to the C. C.

Hd Supr.

Dear Sir,

Dated Gumla, the 4th April 1932

With reference to your letter no. 595
dated 1st April 1932, addressed to the Pastor-Supervision
Gumla, I beg to inform you that I have already sent
up an account to the Head Supervisor, Lutheran Schools,
Rauchi but no answer was given to me as yet. I have
been transferred from Gumla to Kondra and I request
you will be kind enough to remit the dues as sharp
as possible that I might leave Gumla quickly.
The account is as follows: —

1. Salary from Jan. to March 1932 — Rs 105/-
2. The price of gunnatures
still unpaid — Rs 41/-
3. Allowance from Gumla to
Kondra — Rs 40/-
4. Less receipt from September
to December 1931. } — Rs 14/14/-

Total — Rs 200/14/-

P. T. O.

Brought forward — Rs 200/14/1,

Actual Receipts — Rs 33/5/3.

Rs 167/11/9

I shall be waiting for it for this time. At present I am very busy in the Annual Return 1931-1932, which will take a week or so. Being a chief witness in the school garden fencing for which a disturbance arose between the Parish and Revd D. Kufir I am prevented by the Parish for the evidence. So unless I am fully paid I have some objection to start from on leave Gumbala. An early reply is earnestly solicited.

I have the honor to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Ignatius Lakra

Headmaster.

Received 7.4.32
 Register No. 857
 Date 4.4.32
 Page 24
 Reply No.
 Date

38g
 8/2/32

Office

Sent it to the H^d Supr
 for his opinion

7/4/32

To,

The Secretary
 Lutheran Church Council, Rauchi.

Memo No. 646
 d/- 6.4.32.

The applicant
 has already been
 informed about the
 matter of his payment
 and so the application
 is returned to the C. C.

Hd Supr.

Dated Gumla, the 4th April 1932

Dear Sir,

With reference to your letter no. 595
 dated 1st April 1932, addressed to the Pastor-Supervisor
 Gumla, I beg to inform you that I have already sent
 up an account to the Head Supervisor, Lutheran Schools,
 Rauchi but no answer was given to me as yet. I have
 been transferred from Gumla to Kondra and I request
 you will be kind enough to remit the dues as sharp
 as possible that I might leave Gumla quickly.
 The account is as follows: —

1. Salary from Jan. to March 1932 — Rs 105/-
2. The price of gunnities
still unpaid — Rs 41/-
3. Allowance from Gumla to
Kondra — Rs 40/-
4. Less receipt from September
to December 1931. } — Rs 14/14/-

Total — Rs 200/14/-

P. T. O.

7/4/32 ता: ५-४-३२

गुमला ।

महामान्यवर सेक्रेटरी चर्चकौंसिल
लुधियाना मिशन रांची

महामान्यवर पास्टर सुपरवाइजर
लुधियाना मिशन
रांची गुमला ।

Church Council
Received... 7.4.32
Register No... 858
Date.....
File... 24
Reply No.....
Date.....

महाशय ।

भर्ज साबिनय ऐसी है कि हम लोगों का हेड मास्टर
इगनातियुस लन्दर की बदली की बात सुनने में आती है।
इस लिये हम सब स्कूल के छात्र गरा बहुत उदास में हैं। और
हम सब नहीं चाहते हैं कि इन की बदली हो। क्योंकि ऐसा
हेड मास्टर हम लोग नहीं पावेंगे। अगर पावेंगे भी तो ऐसा
नहीं। हम लोगों का हेड मास्टर वृद्धावस्था को प्राप्त किये
हैं इस लिये पिता पुत्र के तौर से हम लोग रहते हैं। बहुत ही
दुलार प्यार के साथ हम छात्रों को चलाते जो शिक्षा देते
हैं। कभी भी मार पीट का नाम तक नहीं हुआ है। इन
के रहने से स्कूल की तरकी दिनों दिन बढ़ती होती जा रही
है। और अंग्रेजी बढाई में हम लोगों को तन मन से लग कर
शिक्षा देते हैं। इसी तरह से कई अन्य अच्छे गुरा के कारण
हम सब इन की बदली नहीं चाहते हैं। अगर इतने पर
भी जबर्जस्ती बदली हो जायगी तो स्कूल की हालत
और भी खराब हो जायगी। हम नहीं समझ सकते हैं कि
इन की बदली होने से हम सब इस स्कूल में रहेंगे। क्योंकि
कि हम सब डेस्कबेलर हैं, जहां मन लगेगी वहां चले जा-
येंगे। इसी तरह से एक और भी दरखास्त हुजूर में हम
छात्रों की ओर से दिया गया था। पर उसका जबाब
आया कि चर्च कौंसिल में अर्जो पेस किया जाय।
इस लिये यह और एक दरखास्त हुजूर में अर्जो पेस
करते हैं कि हम लोगों का यह दीन हीन अर्जो पेस
कर संजूर किया जाय।

Received
7/4/32
S. S. S. S.

ता: ५-४-३२

गुमला ।

आईन्दे हुजूर मालिक है ।

आप का आज्ञाकारी -

स्कूल के सब छात्र गरा ।

- 1 भरसा निरंजन साहु कृष्ण V
- 2 विनोद दास कुजूर भास II
- 3 देवता कांशी कृष्ण II
- 4 लरुवा कुजूर कृष्ण II
- 5 शांती प्रकाश मित्र II
- 6 जेगा मित्र कृष्ण II
- 7 विनोद मोहन कुजूर कृष्ण II
- 8 प्रसाद नाग कृष्ण II
- 9 जगन्नाथ लक्ष्मण कृष्ण II
- 10 जगन्नाथ कटुना कृष्ण II
- 11 सुखदेव कुजूर कृष्ण II
- 12 मंगेया कुजूर कृष्ण II
- 13 सुरंग लक्ष्मण कृष्ण II
- 14 नासरी लक्ष्मण कृष्ण II
- 15 छोटा रोपपो कृष्ण II
- 16 गन्दूर कुजूर कृष्ण II
- 17 प्रगुम्बुन बखला कृष्ण II

1 विनोद शय मिश्रा II

2 पुरन सिंह स्काल II

3 सरवा वीरम कृष्ण II

4 प्रेम प्रकाश II

5 श्याम मित्र लक्ष्मण III

6 दऊद बखाल कृष्ण III

7 जाली मिश्रा कृष्ण III

8 सुखी लीगा कृष्ण III

9 मीनवा बैक कृष्ण III

हेड सुपर वेंजर

लुचेराज की यज्ञ स्कूलस रांची ।

5.4.32

834 महाशयः

गुजला ता 3-8-32.

3.4.32

24

हम लोग जो गुमला स्कूल ने बिधाचिपी

को मां काप और गाडियन है, आप को जनाते हैं कि हमी

यहां की-यू.पी. स्कूल सचि बच्चे की बात में बहुत बुरी
खलत में है। फिर मराडली की दशा भी अच्छी नहीं है।

इस बीच में यहां की हेडमास्टर काकू इत्यादि युस लकड़ा
से स्कूल और मराडली सम्बन्धी दोनों बातों में बहुत

लाभ पहुंचा और पहुंच रहा है। इस लिए हम लोग

हेडमास्टर काकू के कोरडा बदली की बात में भारी

ऊजूर कर पेश करते हैं। उसके बदली से स्कूल और

मराडली दोनों की भारी नुकसानी है। फिर

फिर बात है कि हमी की स्कूल की गिनती

को यज्ञ स्कूल में है जिसके नाम से (30) का ग्रांट

कोर्ड से मिलता है। पर लड़कियों के दो ह्कास

मिलान करने के कारण मिस हेनरजे (10) से अलग

कर के लड़कों विभाग में लेने चाहती है। इसमें

हम लोगी का भारी ऊजूर है। हम लोग ले लड़कियों

का उचित पुबन्ध करके मास्टरों की संख्या घटाने

का विचार कर रहे हैं। अगर इस तरह ग्रांट

टुकड़ा कर दिया जाय तो हमी की बहुत नुकसानी है।

आप लोगी का बिस्वस्त

1 नथानिएल लकड़ा गुमराटोली ता: 3-4-32

2 जम्मसीह गुजुर चहा ता: 3-8-32

3 पाकुन बड़ा चेदे ता: 3-8-32

4 धामदास गुजुर चहा ता: 3-8-32

Office
Sundil W. A.
Head Sup. for
Opinion.

Memo No. 640
1/7.4.32.

The petition is not
endorsed by
neither the
Ilaka Chairman
nor the Ilaka
panch consequently
the recommendation
is that it should
be forwarded to
the Ilaka panch
before any action
is taken by the
C. C.

Head Supervisor,
Luth. Schools, Ranchi.

૨. પિરિલિપ બુમ્મુ લેડીમાપડી ૩-૪-૩૨

૬ મુસ રજાડા હુલો ન: ૩-૪-૩૨

૬ - છમલ નપ બીસે સુલોલો ૩-૪-૩૨

૭ Julius Tega, Darutoli ૩/૪/૩૨

૭ John Panna Chetter ૩.૪.૩૨

૧૦ સુના નુસા કિન્ડો હા, દોલો

૧૧ Dharmprakash Rhethe

૧૨ - અમલસ લમજા હુમ્બા દોલો તા. ૩-૪-૩૨

૧૩.  દેખા-
પરસ મિંજ

૧૪.

 દેખા, હાકલ દોલો-

૧૬. સોલ શા તુરકો પ્રસનો

૧૭.

 દેખા,
મોલ મિંજ

૧૮.

 દેખા,
અમલસ
હા.

૧૯

 દેખા,
સુમલ મિંજ

૨૦.

 દેખા,
હુમ્બા
હુમ્બા

૨૧.

 દેખા,
અમલસ લમજા

૨૨.

 દેખા,
વેત્તામીજા
મિંજ

૨૩.

 દેખા,
હાકલ હુમ્બા

૨૪. Nauman Rhethe

૨૫

Chleashu

25- - Patras Kupar Hutta

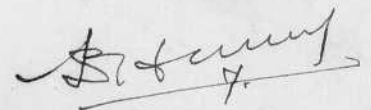
Memo No. 1053/32.

F. - 24.

Dated Ranchi, the 6th. April, 1932.

The petition of the Lutheran Christian of ^{Gumla Par}~~Chaha Village~~

regarding the transfer of master Ignatius Lakra from Gumla to
Kondra forwarded to the Head-Supervisor in original for favour
of opinion.



Secretary,
G. E. L. Church.

File
order issued
16/5/32 19/4/32

70

Church Council
Received... 18.4.32
Register No. 880
Date... 6.4.32
File... 24
Reply No.
Date... ..

The Secretary of Church Council
Lutheran Mission
Ranchi

Maha manyawar Church Council Ke
Sabhagan ko mera yeshu bahai.

Office

Hebunbada Kisi
letter w a P. Card
I tell him that
we shall consider
his case

12/5/32

Age mera likhne ka karan yehi
hai. Ki mai ap sabhon ke mission men
12-13 barsh se ghati talap sah kar
kam karke chale aye, apsoh ki but
kyonki shaka panch ish samai 4 hi
master rakhe hain, aur ish samai
mai hi kewal seduction men hun
aur aisi abhi mere pas 2 tuwar
larken hain jo bahut chote hain
mala him hone se un ka aur
mera halat bahut hi kudasha
men hai, aur age piche mera
koi bhi nahi ki un se aisi halat
par sahaita pawan. Dusri bat talap
ke na aane se mujh ko kin karua hi
para jis se un ko bhi dena jarurat
hai, mere ghar ke lachari halaton
ko manyawar miss diltas, do manyawar
m. shibe bahut kuch jante hain
aur abhi bhi yehi halat hai.

P. T. O

So much din hin aggya
dash ki yehi arzi binti
hai ki ~~Kripa~~ Kripaya
mere aisi halat par
koi Khayana dwara mere
talap men se kuch —
sahaita mile. ant men
mera yishu Sahai.

Prem se ap
sabhon ka agy kari
dash

Da 6.4.32

S. Kerketta
Karimatti

Church Council

Received 16.4.32

Register No. 884

Date 3.4.32

File 24

Reply No.

Date 0/0

13/4/32

The Glaka chairman Hinkel.

From, to

Golidih mandli.

Sir,

आप को हम गोलीडीह मंडली के भाई बहिनों का योशुसहाय ।

महोदय,

जो जानते हैं कि गोलीडीह स्कूल जशपुर स्टेट को मिले। यह खबर हमें को तारिख १८-२-३२ को डिपुटी साहब के जरिये स्कूल मुलाहिजे के जरिये मालूम हुआ। उस समय डिपुटी साहब स्कूल की जगह गोलीडीह से उठा कर तुमला गांव में रखा है और हम जारी किये हैं कि जल्दी से तुमला में स्कूल घर तैयारी करो। इस बात में हम लोग नखुश हैं हमें का राय है कि स्कूल गोलीडीह ही में रहे। स्कूल का जगह तुमला में न होवे। क्योंकि तुमला हमों से नदी पार है बहुत रोक् टोक् हमों के लड़के लड़कियों को होशो। सो हम लोग भाई बहिन इस बात का आप के पास पेश करते हैं कि इस बात का लिखा पढ़ी आप पोलिटिकल सजेन्ट और जशपुर दीवान साहब के पास लिखा पढ़ी

सहस्र. पंच.

सही-पुनारक, पुसक, वेक

श्रीमोन रुक्मा

लायस एका

कुलेमान केरनेरा

श्रीमोन वेक

ईश्वर सहाय एका

हस्तरा एका

खिस्तो राय खलशो

सामुराल लकडा

विनुस दोप्यो

सरसका

करिये।

दूसरी बात आप को ज्ञाते हैं कि एक मास्टर को स्कूल काम नहीं दिये। डिप्टी साहब बोल दिये हैं कि इन साल का केवल एक मास्टर को रखते हैं। क्योंकि दो मास्टर गोलिडीह में हैं। सो हमें को नहीं जनाये। इससे केवल एक मास्टर का शान्त निकाला गया है। यह कह कर एक मास्टर को काम नहीं दिये और काम बन्द करवाये हैं। सो हम लोग इस बात को आप के पास पेश करते हैं कि काम के लिये लिखा पर्दा करिये। जिससे मास्टर को काम मिल जाय। जिससे दोनों मास्टर मिल कर काम करें। क्योंकि स्टेट के स्कूल में दो मास्टर काम करते हैं एक मास्टर एक मनिटर। इससे यहां भी इन्हीं साल से मिले। सो हमें की प्रार्थना पर आपका ध्यान करेंगे।

Guram Masih Doka

H.D. Master Golidih
School, Gashpore State

C..R.

3/4/1932

Church Council
Received 28.4.32

Register No. 908

Memo No. 679

File
28/4/32

21.4.32 Office of the Head Supervisor, Lutheran Schools, Ranchi.

24

Dated Ranchi, the 21st April, 1932.

The undermentioned document is forwarded to the Church Council, Ranchi, for information that the Divisional Inspector of Schools, Ranchi, does not permit sweeping away free student-ships ~~entirely~~ entirely for the period of stringency from our schools but leaves it open to Managing committees to relieve cases of hardships.



Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Copy of letter No. 1676/4 F-1-32, dated 20. 4. 32, from the the Divisional Inspector of Schools, Chotanagpur, Ranchi.

" With reference to your letter No. 604, dated nil, I have the honour to state that I do not think it necessary to give such a sweeping permission for the period of stringency. Free-studentships can be given much more sparingly and restricted to very clear cases of special hardship. This will in some cases no doubt mean the temporary abolition of free studentships but will at the same time leave it open to Managing Committees to relieve cases of hardship."

File
28/4/32

Inspection remarks on the Lutheran M.E. School at Koronjo
dated 13-4-32, by the District Inspector of Schools, Ranchi.

Church Name

Received 28.4.32

Register No. 910.

Date 27.4.32

Page 24

Signature

Date

I visited the G.E.L. M.E. School this morning. The school was closed on our arrival due to "Chaitra Shankranti" but shortly ^{after} our arrival the boys were assembled six teachers also turned up. There are 8 teachers in the staff, against 9 at my last visit. The Bible teacher has recently been transferred to the church work, as stated this day, and with this solitary exception there has been no change in the personnel of the teaching staff. I could not see the Head Master as he was not in the station.

The school is held in the same building. There are 137 children on the rolls, out of whom 69 were present this day and were distributed as follows:- Class VII 15/23 Class VI 8/16 Class V 10/30, Class IV (a) 8+4 / 12+4 Class IV (b) 9/19 Class III 6/8 Class II 0+2/ 5+5 Class I 3+4/ 9+6 = 59 10/ 122+15 = 137

There has been a rise in the number on the rolls since my last visit. The need of duplication in class IV is not so urgent in view of the attendance being below 30 I am given to understand however, that a few girls are waiting admission or transfer. If that be so, it would be altogether different but step should be taken to secure their early admission.

Noted

The supply of furniture and equipment seems almost adequate for the present needs of the school. The black boards stand however badly in need of a fresh paint. The school library has recently had a number of good books, added to it but I was disappointed to find no more than 17 books issued to teachers this year, up to date which is a ludicrously small number to be of any real use that a part, these were only text books. The teachers will do well to make constant use of our books and to turn fully to account of the school library. The children should likewise be encouraged to read

The Hdmaster's attention has been drawn to this.

Noted.

juvenile out books from the school library. These are a few ^{such} books even now, but they have not been thus far placed in the hands of children, who could willingly take to them if encouraged by the class teacher concerned.

The following is the last year's examination results: - Class VII 8/15 class VI 14/16 class V 18/22 class IV 24/25 class III 11/13 class II 6/8 class I 5/5. The results in class VII are barely over 50 percent, which is any thing to be proud of. I trust the teachers concerned will make up their mind to ensure brighter result henceforth.

The teachers have been paid in full up to March last, as evidenced from the acquittance roll of teachers. The monthly expenditure on the up-keep of the school is Rs 307/3/- i.e. Rs 269/8 on account of teachers salaries Rs 10/- for building repairs, Rs 3/8 for prizes and library Rs 8/- for contingent charges, Rs 9/- for servant, and Rs 7/3/- for contribution to the Teachers Provident Fund. The monthly income against this is Rs 35/- on an average from the school fees, and Rs 87/- from Govt as grant-in-aid, the deficit being met by private contribution from the local Mandli. I am ~~am~~ afraid the school authorities are already feeling the pinch of scarcity in these days of universal financial depression. If that be so they would be well advised to put their heads together and explore all possible avenues of retrenchment, so as to have the situation well in hand. It would be a wise policy after all to cut their coat according ^{to} their cloth.

It is being done.

The building should be kept scrupulously neat and clean. There is one Hostel attached to the school with 72 boarders. One of the Asstt teacher Babu Gossner Minz is stated to be incharge of the hostel. He gets Rs 6 a month as hostel allowance.

The classes were examined. Schemes of daily lessons should be neat and tidy. The following are the results of our examination: -

Noted.

Noted.

Class VII Arithmetic poor. None could do the sum set English conversation not bad but the boys are expected to look smart and to answer quickly and for that they need to be given plenty of drilling in English conversation. English spelling and writing require increased attention. Map drawing in geography should be done to a scale Hindi composition poor. Corrections should be undertaken on an extensive scale. Class VI geometry poor. Geometrical ideas need to be driven home to the children. English conversation need increased attention pronunciation should be strictly accurate and slovenly habits should never be put up with Arithmetic poor Hindi composition fairly good.

Class V English pronunciation defective. In English conversation the children should get rid of their shyness. They are at present far too slow. Arithmetic poor Hindi pronunciation lacks accuracy Hindi composition and purport giving require closed and constant attention.

Class IV English conversation poor. Arithmetic poor. composition likewise poor Class IV (other section) Hindi below the average Arithmetic also below the average Geography require increased attention. Hygiene and History fair on the whole.

Class III Hindi weak Arithmetic fair but 3 children were not found quite up to the standard and need to work hard Hygiene fair Geography rather neglected.

Class II Reading and writing fair but the class is poorly grounded in understanding and purport giving Arithmetic much below the mark. Class I Of the new comers only two could make out letters and numbers. The rest seemed to be quite at sea, and have made little or no headway in 3Rs small split bamboo sticks should be forthwith introducing for the teaching of numbers and should be in constant use Reading sheets are also conspicuous by their absence and need likewise to be introduced. Of the advanced children, only one seems to have made

Teachers concerned
have been warned.

Hd.m.

some slight headway in Rs 3

The S.I. of schools Simdega East was also with me and assisted me, in examining the children.

Sd/- Harbans Lall
District Inspector of Schools
Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

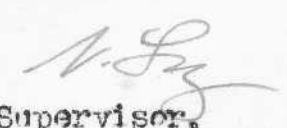
Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the the District Inspector of Schools, Ranchi.


Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 728

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

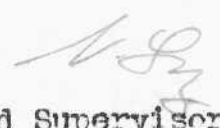
Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the the G. E. L. Church Council, Ranchi, for information.


Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

Copy with marginal notes by the undersigned is forwarded to the Headmaster, M. E. School, Koronje, for information and guidance and compliance.


Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

file

29/4/32

चर्चकोसिल सेक्रेटरी लूथेरन मिशन रंची के निकट
निवेदन पत्र ।

Memo No. 743
d/- 29.4.32.

मारफत लूथेरन मिशन स्कूल हेड सुपर मैजर रंची

The petition contains no signature, probably written by only one person. The teacher concerned however is warned and the petition is forwarded to you.

N. S. Jy
Head Supr.

महाराज, दीनता उपरि उपाहर पूर्वक कजूर के पास यह निवेदन पत्र पेश हो जानित कि जो जाता है कि हम लोगों के बालक गारा गुमला लूथेरन स्कूल में पढ़ने जाते है जो वहां धांच गारा है बीते साल उपकोवर नोवेंबर में वहां के स्कूल मस्टर शोपिल पुका श वरवला बहुत ही क्रोधो उपरि निर्दय है जोड़ा न जानने के कारणा वह बहुत ही हाथ बोलता है हां वह बड़बुद लोगो को जो पांचवा क्लास में बीता साल पढ़ता था वह उपमा पास करके इटकी मिडिल स्कूल में पढ़ता है इतना मार मारा कि निंदो तीन मिनट के लिये वे होस गिर गयो, पर पानी पिलाने पर दम उठाये वह रुक गरीब माली का लडका है ।

फिर खुसोदास कजूर को जो उपमा वहां पांचवा क्लास में पढ़ता है उसके को पांजा में ऐसा घुंसा मारा कि वह को कुछ समय लो डुबेल डेरक में बेहोस सिंकुंड गयो, उपरि बहुत ही दर्द से कहने लगा ऐसा हो वह छोटा बड़ा मार बराबार करता है मालूम नही, क्या जाने कोई दिन यहो खूनी मास्टर किसी बालक का जीव ले लेगा हां वह मारने में उपमा गुला को व्यवहार करता है यह मास्टर हत्यारा है सो वहां से निकल दिया जाय कि हम लोगों का जीव बचे वरुको का उपाइन्द उपाय लोग मालिक है । उपमा लोगों के उपजाकारी धात्रों के

गारिव खी उपप्रेल सन १९३२ ईश्वी । गजियम को माता पिता

OFFICE OF THE SECRETARY LUTHERAN CHURCH COUNCIL CHOTANAGPUR & ASSM
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHKI KA MANTABYA.

Ta: 22 April, 1932 Shukarwar.

-----oOo-----

29. SCHOOL FUNDON KA KHOLNA.

School aur Hostelon ko chalane athwa unka kharch dunrhne ko jo upay bataya gaya us par batchit hui arthat ki bhala hoga ki samuchi mandali ke ilakon ko akhtiyar diya jay ki sadharan mandali chanda aur sirniyon ko chhor kar we bisheshrup se School Fund kholen jiske liye we Ritu men dhan wagairah chanda kar jama karen athwa khrishtiyan aur akhrishtiyan sabhon se masik chanda grahan karen. Kyonki shiksha bibhag ka kam paropkari kam hai aur uske liye khrishtiyanon ko chhor dusre sampraday ke log bhi hamari sahayta kar sakenge.

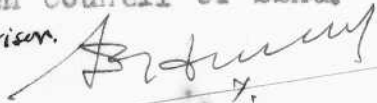
SANKALP: Ki ab se lekar mandali ke ilakon ko adhikar diya jata hai ki we ilaka schoolon aur hostelon ko chalane ke liye mandali ke logon se tatha anya sampraday ke jan-sadharan se bhi rakam aur rupaiya men chanda ugahne ka parishram karen usse school fund khola jay aur school kharch chale. Yah ek bishesh fund hai jiske liye Council ilakon se shaykre Rs 20/- ki dabi nabin karegi.

Memo No. 72-101/32.

F.-24.

Dated Ranchi, the 22 2nd. May, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 22nd. April, 1932 forwarded to all the Ilaka chairmen & Hd. Supervisor. for information, guidance and compliance.


Secretary,
C. E. L. Church.

OFFICE OF THE SECRETARY, LUTHERAN CHURCH COUNCIL, CHOTANAGPUR & ASSAM.
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHI KA MANTABYA.

Ta: 25 April, 1932.

-----cOo-----

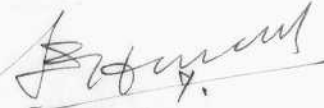
33. IGNATIUS LAKRA KI BAILI.

Ignatius Lakra ki badli aur uska ujur- Ignatius Lakra ka darkhast aur larkon ka darkhast aur bhaiyon ka darkhast parhe gaye. Tinon darkhaston par bahut batchit hui aur yah phaisla hua ki Church Council ke hukum ke anusar I, Lakra turant Kondra jakar kam ka bhar lewe kyonki Kondra abhi khali hai aur usko agar koi ujur karna ho to wah wahan se Ilake Panch ke marphat ujur bheje. Bhaiyon ka darkhast Gumla Ilake Panch ke pas bheja jay jo apna mat prakash kar Church Council ko lauta dewe.

Mem No. 51-52/32.
F. -24.

Dated Ranchi, the 29th. April, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 25th. April, 1932 forwarded to the *HD. Supervisor Rev. J. Toppe, Gumla.* for information, guidance and compliance.


Secretary,
G. E. L. Church.

OFFICE OF THE SECRETARY, LUTHERAN CHURCH COUNCIL, CHOTANAGPUR & ASSAM
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHKI KA MANTABYA.

Ta: 25 April, 1932.

-----oOo-----

35. TOKAD SCHOOL KE LIYE CHANDA.

Tokad Padri ki chitthi - Chitthi parhi gai aur Raja sahib ke danon ke bishay kuchh batchit hokar yah phaisla hua ki J. Lakra, Secretary aur N. Soy ka ek deputation Chakradharpur raja ke pas School ke liye dan ke bishay unse batchit karne ko bheja jay aur Secretary sahib unko ek chitthi ke dwara mulakat ke liye arji karen

Memo No. 53-54/32.

F. 24.

Dated Ranchi, the 29th. April, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 25th. April, 1932 forwarded to Mr. N. Soy and Rev: J. Lakra for information, guidance and compliance.


Secretary,
G. E. L. Church.

OFFICE OF THE SECRETARY, LUTHERAN CHURCH COUNCIL, CHOTANAGPUR & ASSAM.
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHI KA MANTABYA.

Ta: 25 April, 1932.

-----000-----

36. SAMUEL TOPONO KI BAILI.

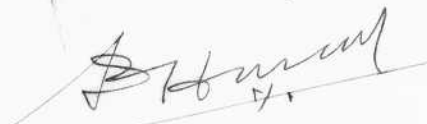
SAMUEL TOPONO KA APNI BAILI KE LIYE DARKHAST - Yah darkhast parha jakar uspar batchit hui aur Sabha ki ray yah hui ki yah darkhast Head-Supervisor ko tay karne ke liye diya jay (darkhast abhi Head-Supervisor ko diya gaya).

Memo No. 55-56/32.

F.-24.

Dated Ranchi, the 29th. April, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 25th. April, 1932 forwarded to the Hd. Supervisor. A. Maskey Samuel Topono for disposal.


Secretary,
G. E. L. Church.

OFFICE OF THE SECRETARY, LUTHERAN CHURCH COUNCIL, CHOTANAGPUR & ASSAM
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHI KA MANTABYA.

Ta: 25 April, 1932.

-----000-----

37. BISHRAM MINZ KI DAKHAST.

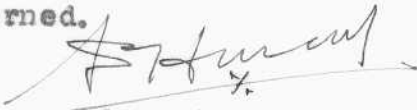
Bishram Minz ki Head-Supervisor ke pas chitthi- ~~XXXXXXXX~~
Chitthi parhi gai aur Head-master ki chitthi bhi parhi gai. In
chitthiyon aur C.C. ka agle phayle par batchit hone ke piche yah
phaisla hua ki C.C. ka yah hukum ki wah swapalan prasaran ka kam
kare kaym rahe.

Memo No. 57-58/32.

P. - 24.

Dated Ranchi, the 29th. April, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 25th.
April, 1932 forwarded to the H. Supervisor & Rev. U. S. Kumar.
for information and communication to the concerned.


Secretary,
G. B. I. Church.

OFFICE OF THE SECRETARY LUTHERAN CHURCH COUNCIL CHOTANAGPUR & ASSAM
PURM CHURCH COUNCIL KI BAITKI KA MANTABYA.

Ta: 25 April, 1932, Somar.

-----oOo-----

Kerketta
38. KARIMATTI SAMUEL ~~TOPONO~~ KA DARKHAST.

KARIMATTI KE SAMUEL KERKETTA KA DARKHAST .. Darkhast parha gaya aur Head-Supervisor ke kahne par ki uska talab baki hai yah phaisla hua ki usk a bakaya talab rupaiya hone par de diya jayga.

Memo No. 34-35/32.

F.-24.

Dated Ranchi, the 28th. April, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 26th. April, 1932 forwarded to the Rev: M. Inland. Master S. Kerketta, Karimatti through H.D. Singh for information.

[Signature]
Secretary,
G. E. L. Church.

Council

7.6.35

BOARD OF TRUSTEES OF THE G. E. L. CHURCH PROPERTY, RANCHI.

SUCCESSORS TO

THE MISSION TRUST OF NORTHERN INDIA
Adminstrating the former G. E. L. Mission Properties
(Incorporated under Act IX of 1921)

Register No. 2

Date: 6.6.35

File No. 29

Reply No.

Deputy Secretary & Manager :-

D. M. PANNA, Esqr, B. A.,
Deputy Magistrate & Deputy Collector.

Purulia, Manbhum .

Ref. No. 174/35

Dated 6th June 1935

The undersi gned begs to acknowledge receipt of the following papers from the office of the Church Council of the G.E.L.Church Ranchi :-

1. Memo No.1065/35/F.-43 dated the 24th May 1935 with the copy of the Minutes of the Church Council Executive forwarded therewith ,per favour of the Rev.M.Prehn who came to Purulia on 25.5.1935 .
2. Memo No.21/35/F.-29 dated the 31st May 1935 with extracts from the Minutes of the Full Church Council mentioned therein, meant for the Board of Trustees by post .

D. M. Panna
Secretary to the Board of Trustees.

6.6.35

To ,

The Secretary ,

The Church Council of the G.E.L.Church , Ranchi .

To,

The Director of Public Instruction,
Patna.

Through the Inspector of Schools,
Chota Nagpur Division,
R A N C E I .

The humble petition of the Council of the Gossner
Evangelical Autonomous Lutheran Church of Chotanagpur and
Assam, Ranchi,

Most respectfully sheweth,

1. That the said Council maintains one H. E. School at Ranchi and administers six M. E. Schools for boys and 115 Boys Primary Schools besides one M. E. School for Girls and seven Primary Schools for girls spread all over Chotanagpur particularly in the Ranchi District.
2. That these Schools have been in existence for a good long time and have rendered valuable service in the country both for Christians and non-Christians, particularly Aborigines.
3. That having recognised the utility of the Schools maintained by the said Council of the Church, the Ranchi District Board undertook to manage - Primary Schools of the said Church when the financial condition of the Church became bad in 1928 and the Government very kindly voted ^a special sum of money for their maintenance and this arrangement with the Ranchi District Board still continues as the financial condition of the Church has not improved, but has become worse instead.
4. That the said Council of the Church used to raise a total sum of Rs ^{37,218/-} ~~37,2112/-~~ annually for the maintenance of these Schools from various sources including those from the foreign countries and particularly from Germany and these resources have entirely been stopped because of the terrible financial condition in Germany and elsewhere and there is absolutely no hope for any funds from such resources in the near future as the present situation of the world and of the Central Europe in particular clearly indicates.

5. That the total expenditure of these Schools calculated at a very modest rate amounts to Rs 56078/- annually.

6. That the total income for these Schools from different heads as indicated marginally amounts to Rs 35929/-

*G. Gr. reduced rate - Rs 17765
Fees & Local sources Rs 17864
Total Rs 35929

annually and thus there is a deficit of Rs 20149/- in the Annual Budget of these Schools.

7. That unless the said Council of the Church obtains a help of Rs 20000/- for 1932-33 they will be obliged to close down the schools which will be an incalculable loss to the country.

In the circumstances your humble petitioners pray that in order to bridge over the present crisis, the Government will be pleased to make special provision for the Schools maintained by the said Council of the said Church and to sanction a sum of Rs 20000/- in addition to the present grant of Rs 17765 for the maintenance and continuance of these Schools and for this act of kindness your humble petitioners, as in duty bound shall ever remain grateful.

We have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servants,

J. Topond
6-4-32

[Signature]
6-4-32

[Signature]

The Executive members of the Council.

To The U. P. J. P. M.

Through The Director of Schools
Chotanagpur District, Ranchi.

The humble petition of the
Council of the Evangelical
Lutheran Autonomous
Church of Chotanagpur and
Assam, Ranchi.

Most respectfully sheweth,

1. That the said
Council maintains ~~and administers~~
one H.E. School at Ranchi
and administers six M.E. Schools for Boys and
~~Six Boys M.E. Schools~~ 115 Boys Primary
~~M.E. School for girls~~
Schools, six Boys H.E. Schools and
besides one M.E. School for
Boys, H.E. School and seven Girls H.E.
Schools spread all over Chotanagpur
particularly in the Ranchi District.

2. That these
Schools have been in existence for
a good long time and have rendered
valuable service in the country
both for Christians and non-Christians
particularly Aborigines.

3. That having recognised the utility of the schools maintained by the said Council of the Church, the Ranchi District Board undertook to manage — primary schools of the said Church when the financial condition of the Church became bad in 1928 and the Government very kindly voted special sum of money the maintenance and this arrangement with the Ranchi District Board, still continues as the financial condition of the Church has not improved, but has become worse instead.

4. That the said Council of the Church used to ^{raise}~~collect~~ a total sum of Rs 37,218/-

annually for the maintenance of these schools from ^{various}~~foreign~~ sources particularly from Germany and ^{the foreign countries} and ^{these funds} ~~these funds~~ have entirely ^{been stopped}~~ceased~~ ^{including those from} ~~ceased~~ for reasons well known because

of the terrible financial conditions
in Germany ^{& elsewhere} and there is absolutely no
hope for ~~any~~ ^{from such resources} funds in the near future
as the present situation of the ^{world & of the} Central
Europe ^{in particular} clearly indicates.

5. That the total expenditure of
these schools calculated at the a ~~very~~ ^{very}
~~modest~~ ^{modest} rate amounts to Rs 56078/-
annually.

6. That the total income of the for

these schools from different heads
as indicated marginally
amounts to Rs 35929/-
annually, and thus

* G. Gov. reduced rate -	Rs 17765
Fees & Local sources -	17864
Total Rs	35929/-

there is a deficit of Rs 20149/- in

the annual budget of these schools.

7. That unless the said Council of the Church obtains
a help of Rs 20000/- for 1932-33 they will be obliged to close
down the schools which will be an inevitable loss to the country.

humble petitioners pray that in
order to bridge over the present
crisis, your honour will
be pleased to make special
provision for the schools main-
tained by the said Council
of the said Church and to
sanction a sum of Rs 20000/-

Rs 17765/-

and continuance

in addition to the present grant for the maintenance of
these schools and for this
out of kindness your
honorable petitioners, as in
duty bound shall ever
remain grateful.

Andreas Terno.
Immanuel Lakre.
Kethannul Mundu.
Merces Sanga.
Julian Bage.
Samuel Turkey
David Soren
Mauside Hemson
Indarshaw Lakre.

For have the honor
Sir

Your most obedient servant.

The Executive

Head Inpr.

May I know if the
draft to the Minister of Educa-
tion or to the D. P. I. through
the Doc. Inspector is ready.
The D. P. I. was to start
on Conference early this week
+ if our appl^y misses him,
it will be a disappoint-
ment on our part.

I have asked
Mr. Sakra to draft Agreement
the representation ✓
a SO hope that he ✓ 4/32
is doing it.

N. G.
5.4.32

Church Council

Received 1.4.32

Register No. 822.

Date.....

File.....24.....

Reply No.....

Date.....

File

1/4/32

secretary.

Luthera Church.
Ranchi

Dear Sir,

I have just returned
from Pootia. I can see you
at Mr. Lakra at my office
this afternoon at 2 P.M.

I trust this will be
convenient. Yours sincerely
H. D. Datta

50 Mr. Lakre for
perusal

Mr. Lay will kindly
come over so that we
can discuss his
Statement.

Agony
1.

Church Council

Received. 4 7 32

Register No. 76.5.

Date..... 16.3.32 The Secretary,
Church Council, Ranchi.

File..... 24

Repl. to..... Dear Hural Babu,

Date.....

No. 517

Ranchi.
March 16, 1932.

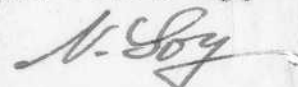
955/32

With reference to your letter No. -----

F. - 24

dated 16. 3. 32 I beg to say that the Rajgangpur people don't send me their bill for teachers' salaries name by name but simply write down 1st teacher or the 2nd teacher and so I cannot inform you if a teacher, Nuas Soy by name, is working in the Dahijira School. In Dahijira School there are two teachers, one who is paid out of the C. C. is getting Rs 5/8 p.m. but I cannot say whether the teacher is Nuas Soy. Rajgangpur teachers have not been paid since last August and so if the C. C. teacher of ~~Rajgangpur~~ Dahijira is Nuas Soy Rs 27/8 is due to him.

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi

The Cassner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845. — Autonomous 1919. Secretary: P. Hurad, Ranchi (Behar)]

No. 1045/32
F-24.

From,

P. Hurad, Esquire.
Secretary, G.E.L. Church.
Chota Nagpur & Assam.
Ranchi.

To,

The Superintendent.
Jashpur Political State. C.P.
J A S H P U N A G A R.

Subject: TRANSFER OF SCHOOLS UNDER THE CONTROL OF G.E.L.CHURCH.

Dated Ranchi, the...31st...March...1932.

Sir,

I have the honor to acknowledge receipt of your Office letter No. 782/28, dated the 25th. March current on the above subject, and to say that the matter will now be laid before the Full Council next week when Messrs. A. John and M. Schiebe too are expected to be in Ranchi.

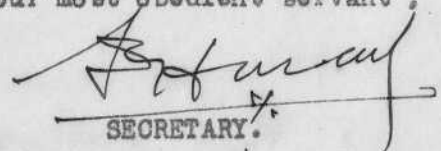
Of course, we do not and can not ask the administration to depart from its Educational Policy of being strictly non-religious for State Schools.

I have now come to know definitely that your administration has no system of giving grants ^{-in-aid} and stipends to organised bodies for the encouragement of education.

I have the honor to be,

Sir,

Your most obedient servant,


SECRETARY.

Burju M. E.

Actual	Minim
70	50
42	35
30	25
22	20
22	15
22	15
15	15
15	15

231 190

Ir & L	7-3-6	4-15-
Rep	3-8-	3-8-
Conti	10	10-
	16-8-	16-8-

Total 268-3-6 224-15-

Act No of teachers 8

No of classes 27

No of periods

Minim No of teachers 15.27
Roll Number ... 130

Act. income from fees Rs 32

Grant Rs 88

Ilaka contr. Rs 20

Total Rs 140

Deficit Rs 84-15-

Govindp.

Actual	Minim
80	50
40	35
30	35
30	25
30	25
30	15
18	15
16	15
15	15

304-15 240

Pr.	9-8-	7-8-
Pr. L	4-	4-
Rep	10	10-
Cont	16-8-	16-8-

Tot 344 278

10

9

9

165

Rs 60

Rs 88

Rs 30

Rs 178

Rs 100

Kinkel

Actual	Minim
52	50
35	35
28	25
22	20
17	15
15	15
15	15

184 175

5-12-	5-7-6
4-	4-
10	10
15	15

218-8- 209-7-6

7

7

7

120

Rs 30 2m.

Rs 57

Rs 15

Rs 102

Rs 107-7-6

Koronjo.

Actual	Minim
55	50
40	35
35	25
30	20
24	15
30	35
15-8-	15
15	15

244-8- 210

7-3-	6-9-
3-8-	4-
10	10
16	15

281-3- 245-9-

8

8

8

13.8

Rs 35 2m.

Rs 88

Rs 20

Rs 14.8

Rs 102-9-

Lohardaga

Actual	Minim
50	50
40	35
30	25
30	25
30	20
24	15
20	15
15	15

239 210

8-3-	6-9-
4	4
10	10
16	16

277-3- 246-9-

8

8

8

19.9

Rs 65 2m.

Rs 88

Rs 20

Rs 173

Rs 73-9-

Takama M. E.

Actual	Minim
60	50
35	35
30	35
30	25
28	20
22	15
18	15
15	15
15	15
<u>253</u>	<u>225</u>
7-7-6	7-
4	4
10	10
16	16
<u>Total</u>	<u>262</u>
290-7-6	

Act. No. of teachers. 9
 Roll Number 146
 No of classes 8
 No of periods
 Minim No of teachers 9
 Actual income from fees .. . Rs 50 P.M.
 Grant Rs 88 "
 Ilaka contrib Rs 30 "
 Total Rs 168 "
 Deficit Rs 94 "

NO 591
 Buder Ranchi the 30th March 1932

N. Sry
 Head Supervisor,
 Lutheran Schools, Ranchi.
 30- 3- 32.

The Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845. — Autonomous 1919.]

LUTHERAN COMPOUND.
RANCHI, (Behar.)

D.O. No. 1031/32
F-24

Dated the.....29th March.....19...32.

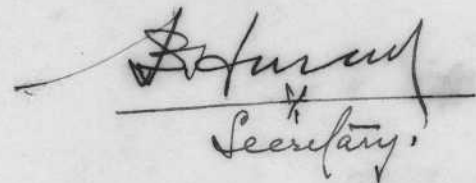
Dear Sir,

The Church Council has been considering the question of putting the schools under sound economic basis from April next. Mr. Lakra and I myself think it desirable to have some consultations with you on certain matters with regard to this question.

We shall be glad and thankful if you could grant us an interview on the 31st. instant or the day after. Any time you appoint on these dates will suit us.

Thanking you in advance,

Yours sincerely,


Secretary.

To,

H. Dippie, Esq.

Divisional Inspector of Schools.

Chota Nagpur Division.

R a n c h i.

Church Council
 Received... 29.4.32
 Register No. 7.
 Date... 29.4.32
 File... 24.
 Reply No.....
 Date.....

29/4/32

Audit Report of The Lutheran M.E. School,
 Takarma, District Ranchi.

I audited the accounts of the school for the period April, 1929 to February 1932 from the 20th to 22nd March, 1932. During this period Mr. C.H. Herenz up to December 1930 and Mr. J.J.P. Tiga since then have been the headmaster of the school, Mr. N. Soy has been the Secretary all along.

Receipt and expenditures of the school during this period under different heads are given below-

(a) General Fund 1929-30.

Receipts	Expenditures
Opening balance Rs 54-14-	Teachers Rs 3937-8-0
Fees and fines 795-5-6	Provident Fund 78-4-0
Government grant 1140-0-0	Contribution to prize 24-0-0
Mission contr 2503-4-6	do to Library 24-0-0
	do to building repair
	do to contingency 120-0-0
	Travelling all. 252-0-0
	Admission fees and fines 18-6-0
	transferred 9-15-0
	Closing balance 29-7-0
Total Rs 4493-8-0	Total Rs 4493-8-0

General Fund 1930-31

Receipts	Expenditures
Opening balance Rs 29-7-0	Teachers Rs 3379-8-0
Fees and fines 926-8-0	Provident Fund 82-14-0
Government grant 1140-0-0	Contr to Prize 24-0-0
Mission Contri 1923-13-6	do to Library 24-0-0
Miscellaneous 2-0-0	do to Contingt 230-10-0
	do to building repr 120-0-0
	Admission fee tranfe--
	rrred to Libr 12-13-0
	Closing balance 147-15-6
Total Rs 4021-12-6	Total Rs 4021-12-6

General Fund April, 1931 to February 1932.

Receipts	Expenditures
Opening balance Rs 147-15-6	Teachers Rs 1679-15-0
Fees and fines 792- 9-3	Provident Fund 45-3-0
Government grant 798- 0-0	Contribution to prize 20-0-0
Mission Contribution 720-11-0	do to Library 20-0-0
Fine 4-7-0	do to building repair 60-0-0
	do to cotn 216-10-0
	Admission fees and fines
	transferred to library 7-1-0
	Fine transferred to
	contingency 0-8-0
	Deposited with Church
	council 249-0-0
	Closing balance 165-5-9
Total Rs 2463-10-0	Total Rs 2463-10-9

The headmaster has been asked to adjust the mistake, a difference of -/10/6, by refunding it.

(a) Closing balance was wrongly shown to be Rs 164/11/3 owing to mistakes in various places.

(b) Prize

Opening balance Rs 9-9-6

Contribution 29-30 24-0-0

Do 30-31 24-0-0

do April 31 to Feb 32 20-0-0

Total Rs 77-9-6

Expenditure 29-30 Rs 24-8-6

Do 30-31 24-8-0

do April 31 to Feb 32 24-0-0

Closing balance 4-9-0

Total Rs 77-9-6

(c) Library

Opening balance Rs 12-7-0

Contribution 29-30 24-0-0

do 30-31 24-0-0

Admission fee transf 12-13-0

Presented by Deputy
Collector 20-6-0

Contribution April
31 to Feb, 32 20-0-0

Admission fee and fine
transferred 7-1-0

Total Rs 120-11-0

Expenditure 29-30 nil

do 30-31 Rs 55-9-6

Transferred to contg 13-4-0

Expenditure April, 31
to Feb, 1932 47-8-0

Closing balance 4-5-6

Total Rs 120-11-0

(d) Building repairs

Opening balance Rs 26-4-6

Contr 29-30 120-0-0

do 30-31 120-0-0

do April 1931 to
Feb 1932 60-0-0

Total Rs 326-4-6

Expenditure 29-30 Rs 71-15-0

do 30-31 63-6-0

do April 1931
to Feb, 32 130-2-0

Closing balance 60-12-9

Total Rs 326-4-6

(e) Athletic

Opening balance	Rs 32-12-0	Expenditure 29-30	Rs 48-0-0
Collection 29-30	94-5-0	do 30-31	158-0-0
do 30-31	63-14-0	do April 31 to Feb 1932	97-5-0
do April 31 to Feb 1932	135-10-6	Closing balance	31-14-0
Sale proceeds	2-10-0		
Total Rs	329-3-6	Total Rs	329-3-6

The headmaster has been asked to refund -5- to the former hdmaster to adjust the account.

Closing balance was wrongly shown to be Rs 32/3/- owing to mistakes in April and October 1930. (f) Contingency

Closing balance at the end of February was Rs 6/14/9 only

Thus the total balance in credit of the school at the end of February 1932 was

General Fund	Rs 165-5-9
Prize	4-9-0
Library	4-5-6
Building repair	60-12-0
Athletic	31-14-0
Contingency	6-14-9

Total Rs 273-9-0

The headmaster has been asked to deposit the money at once in the P. O. Savings bank.

The amount was in the hand of the Headmaster. School money should be deposited in Post Office.

The following irregularities were noted in checking the five accounts noted above:-

<u>General Fund</u>	
May 1929 Fine	1/3/-
December, 1929 Admission fee	-/4/-
January, 1930 do	8/8/-

9/15/-

The present headmaster has been requested to ask the former headmaster to refund Rs 9/15 to the general fund.

This amount was transferred from general fund but no account was however credited with the amount. Hence this should be redeposited.

Why not utilise this money for Contingent Fund.
2/5/32

One teacher of the school, Nathan Tuti, was in the Ranchi Tr. school in April, 1929. He used to get Rs 10/- April 1929 here in Ranchi. The hdm. showed the full amount of Rs 304/- in the cash book while the acquitt was only for Rs 294/- because Rs 10/- was paid in Ranchi. The same also was done in May and June, 1929, by the hd.m. In June Nathan was paid Rs 8/2 IN

Rs 8/2 for his supplementary stipend. shown in C.B. but acqtt not taken. In July, 1929, the hd.m. billed for Rs 306. (6/- for the incrt of 2 teachers) but he received only Rs 300/- 6/- less, but in anticipation of getting Rs 30 6/- he entered that amount in the C.B. in August, 1929, but for July, 1929, he received only Rs 300/- in Aug for which he could take the acquitt.

In January, 1930, the hd.m. sent a bill for Rs 300/- but he was paid Rs 302/8 (2/8 incrt for a teacher) B. are getting the remittance the hd.m. entered in C.B. Rs 300/- b he actually received 302/8 for which he got the acquitt. In Febr he billed for Rs 302/8 but because he already received 2/8 more in Jan, 1930, he entered both these incrts in Febr, 1930, i.e. Rs 305/-. All this was very irregular and objectionable. The hd masters have been asked never to commit such irregularities.

Month	Actual payment to teachers as per Acquittance roll	Amount entered in Cash book
April 1929	294/-	304/-
May 1929	300/-	310/-
June 1929	318/2/-	310/-
August 1929	300/-	306/-
January 1930	302/8/-	300/-
February 1930	302/2/- N.S.	305/-
July 1930	278/8/-	275/8/-

The difference should be redeposited in to general fund

Salary for December, 1930 of Rs 275/8/- was twice entered into the Cash Bok this should be redeposited. (explanation attached on the next page)

July 1931 - Rs 249/- was deposited with the Church Council, this amount should be recovered and refunded to general fund. (explanation attached on next page)

Prize		
18-12-29	24-8-6	Vouchers were not stamped Stamped vouchers should be obtained
29-12-30	24-8-0	
10-12-31	24-0-0	

Contingency.

January 1930 - Closing balance was Rs 1/2/- this has not been carried forward, this should be refunded. April, 1930 - Rs 6/- was transferred to Games account but the amount has not been entered into the Games account. This should be redeposited. (explanation attached on next page)

November, 1930 - Transferred from General fund Rs 17/4/- but entered in

0
d
Explanation of discrepancy in July, 1930.

In July the hdmaster billed for Rs 275/8 but he received Rs 278/8

i. e. Rs 3/- more for ~~the~~ a teacher who had been transferred to Takarna M. E. Before he was paid the bill he entered in the C. B. Rs 275/8 but when he got Rs 278/8 he took the acquittance for Rs 278/8. This was also very objectionable.

Explanation for the salaries, etc. The former headmaster entered in the C. Book Rs 275/8 in anticipation of getting for December, 1930, entered twice. the money from Ranchi although he had not actually received it nor paid it to teachers but when the present headmaster joined the school he actually got the money in in January, 1931, and paid it and entered it again in the Cash Book. The former headmaster of the school ought not to have shown the amount in the C. Book because he did not have the money. This was his greatest irregularity for which he was warned never to commit such irregularities.

Explanation for stamped vouchers. Headmasters have been instructed to ^{obtain and} keep stamped vouchers in future.

Explanation re: contingency.

Rs 1-2-0 and annas four (-4-) are to be refunded by the former headmaster. Regarding Rs 6/- the explanation of the former headmaster is that he spent Rs 6/- for conting. out of the games fund but when he got the money for contingency he transferred the amount from his C. B. but he did not enter it in the games register for reason that he had not shown it there that he spent it. When he borrowed Rs 6/- out of games fund he ought to have shown it in the register that he borrowed it. This is another objectionable irregularity which should never occur again

July, 1931, Rs 249/-

This was Government grant which had been deposited with the C. C. but was paid to the school in September, 1931. Vide C account of the school for September, 1931.

December, 1930, Rs 18/-

The same explanation as that of December, 1930, salary. The former headmaster entered the amount in the C. B. though he did not receive the money but when the present headmaster received the money he entered it again.

The difference Rs 1-2-6 has been refunded by the present Hd.m.

The practice has been discontinued.

Hd.m.

The instruction has been noted.

Now drawn and paid to schools.

contingent register Rs 17/- only. -/4/- should be refunded.

December, 1930- Contingent expenditure of this month of Rs 18/- (servant's pay for December 9/-; other expenses 9/-) has been entered twice, one in December and once in January ; Rs 18/- should be refunded. (explanation attached on preceding page)

December, 1931- Postage for October, November and December, 1931 was really Rs 2-12- 6 but entered as Rs 3-15-. the difference should be refunded.

There is a practice in this school of supplying the teachers with one anna stamps every month for acknowledging their salary, this is highly objectionable and should be discontinued at once.

5. Stock Book of Furniture.

There is a stock book and all the articles in stock were duly entered therein.

6. Annual Returns.

Checked the figures for 1930-31. The statement was not correctly submitted. The procedure has been explained to the headmaster.

7. Government Grant.

Recurring Rs 95/- per month up to 28-2-31

do Rs 89/- .. to 31.8.31

do Rs 88/- from 1.9.31 to 29.2.32.

Grant for the last quarter has not yet been drawn. There was no special grant during the period.

8. Acquittance Roll.

The teachers were paid up to August, 1931, during the period under audit but in March 1932 they have been paid for the remaining 6 months (September, 1931 to February, 1932

9. Provident Fund.

9. Provident Fund.

The stamped statements are not kept in this office but submitted along with the grant bill. The schools also are instructed to keep stamped statements with them.

Original stamped statements received back from post office have not been kept in the school as required in Paragraph 13 of Appendix VI of the Education Code. Only copies of these have been kept of which several are missing. In future all these should be carefully preserved in the school office for check. Provident Fund contributions have been deposited only up to September, 1931.

10. Collection of Fees and Fines.

Before 1931 there was no fee collection register. From January, 1931 one register is used for noting collections from boys of all classes mixed up together and hence is not of much use for checking. However with the help of this register I compared fee collections and found that all fees collected have been deposited except Re 1/- games fee collected on 8.7.31. This should be refunded.

Re 1/- has been refunded to games fund.

Hd.m.

Fee collection register should be introduced for each class in the form supplied.

11. Conclusion.

Instructions have been given to keep fee collection registers for each class.

Accounts of the school have not been kept satisfactorily as will be evident from the foregoing pages. Vouchers have been preserved only from 1931 and pasted in the account books. In future a guard file should be used for the purpose. Government grants have been spent on the subjects for which they were given except that prize and library contribution @ Rs 2/- each is in arrear for one month and building repair contributions are in arrears for five months. Financial condition of the school is not satisfactory.

attempt is being made by the Church Council to improve the financial condition of schools.

Sd/- Govinda Chandra Mitter,

Auditor.

Dated Ranchi, the 29th April, 1932.

Copy forwarded to the Head master, M. E. School, Takarma, for information with the request to adjust the
Memo No.
accounts as pointed out.
Dated Ranchi, the 29th April, 1932.

Copy with explanation by the undersigned is submitted to the Dy. Inspector of Schools, Gumla.

~~Head Supervisor~~

~~Lutheran Schools, Ranchi.~~

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 738

Dated Ranchi, the 29th April, 1932.

Copy with explanation by the undersigned is submitted to the G. E. L. Church Council, Ranchi, for
information.



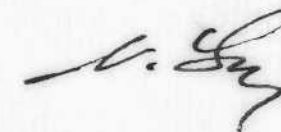
Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 29th April, 1932.

Copy forwarded to the Head master, M. E. School, Takarma, for information with the request to adjust the
accounts as pointed out.



Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

The C.C. Ranchi.

महा मान्यवर महाशय चर्च कौन्सिल को योशुसहाय ।

महाशय आप को खबर दिया जाता है कि हमारी
मंडली को आर्थिक बुरी अवस्था में होने के कारण
स्कूलों को भी बहुत तकलीफ है । इस लिये हम
जो टोकद में रहते हैं वहां के M.P. स्कूल के लिये
पोड़ाहार राजा Narspat Singh से अर्ज करने को
गये थे कि उनके तरफ से ऐसा प्रबन्ध किया
जावे कि उक्त स्कूल न टूट जावे पर लागे ही
चलता रहे । इसपर राजा साहेब ने हम लोगों
को कुछ आशा दी है ।

हम लोगों ने राजा साहेब को बतला दिया है कि
जब वे कहते थे कि जर्मनी का रुपैया तो कब
से लाता बन्द है तो वृत्तवा दिन स्कूल कैसे
चलाया जाता था । कि C.C. जो अभी मिशन
का मालिक है जिस उपाय करके रुपैया
पुलता था, पर अब नहीं सकता है ।

इस लिये C.C. से अर्ज है कि एक दो
मेम्बर आप के समीप सम्मिलन करने राजा
साहेब से अर्ज करने में मदद करेंगे ।
मार्च महिना में वे मसूरी जायेंगे ।

आप का सेवक,
C.K. Jaisi
Toked Parish.

PLEASE ADDRESS REPLY BY
DESIGNATION AND NOT
BY NAME.
JASHPUR NAGAR
Via Lohardaga, B. N. Ry.

No...782/20

28/3/32

Church Council

Received...29.3.32

Register No. 801

Date...25.3.32

File...24

Reply No.....

Date.....

FROM,

Khan Saheb Abdul Ghaffar Khan, B.A.

SUPERINTENDENT,

Jashpur State, C. P.

To,

The Secretary,

G.E.L.Church in Chotanagpur & Assam,

R a n c h i.

Dated 25th March 1932.

Subject:- Transfer of schools under the control of
Sir, G.E.L.Church.

In reply to your letter No. 1027/32
F-24 dated the 23rd
March 1932 on the above subject, I have the honour to say that
I regret I did not take the words 'Stipendiary schools under
State supervision' in the sense, as you interpret them to mean.
I took them to mean that those schools would ^{get} stipends from the
State and would be under State supervision. If you had made
your meaning clear from the beginning, we would have allowed
the matter to remain where it was. As a tangible token of our
sympathy and co-operation, we have secured allotment for
running those schools at the State expense.

There is no system in this State to give grant-in-
-aid. If the schools were to remain under State supervision and
receive stipend from the State, they will have to adapt them-
-selves to the Educational Policy of the State, that policy
being strictly non-religious.

There is yet time for reconsideration. If you want
to retain those schools, as before, we have no desire to have
that wish changed. We will apply our allotment to the opening
of new schools in ^{other} places where their need is felt.

I have explained to you before the policy of the
State in the matter of giving education and I am extremely
sorry we can do nothing which is against the established
policy of the State.

I have etc.

28/4/32

Inspection remarks of the District Inspector of Schools, Ranchi
on the Lutheran M.E. School, Kinkel dated 12-4-32.

Church Council

Received 28.4.32

Register No. 909.

Date 27.4.32

24.

Reply No.

Date

I paid a visit this day to the G.E.L. Mission M.E. School at Kinkel. The school is held in the same building. Classes III-VII have got 11 class rooms of their own, but classes I and II are taken on the verandah. This is not quite satisfactory, but it has to be put up with till more funds are forthcoming.

The staff consists of 7 teachers, inclusive of the two teachers for English. They have been paid up to March 1932, which is satisfactory. There are 126 children on the rolls, namely 96 boys and 30 girls, out of whom 115, namely 86 boys and 29 girls were present this day distributed as follows:-

Class VII 17/18, class VI 5/12+5 class V 12
22+3, class IV 11+4/ 12+4, class III 11+9/ 12+10. class
II 8+4/8+4, class I 5+4/5+4 86 boys 29 girls
96 boys 30 girls = 115/126

The following is a statement of the number of dual desks in each class at present:- Class VII-8
class VI- 12 Class V- 12, class IV- 8, class III- 12
have now been re-arranged. class II-7, class I sits on the cemented floor on the
southern verandah. A more re-arrangement of dual desks
according to the actual requirement of each class
will thus solve the slight difficulty on the score
of accommodation.

Hd.m.

Noted.

The headmaster has
been instructed to see
to this.

The school library is pretty well furnished, but the teachers do not seem to make any use of it. The Headmaster is requested to bring pressure to bear on the teachers to make real use of good books in the library in future. He should also arrange to purchase a number of up to date publications on the art of teaching. Only 20 boys seem to have taken books from the juveniles library though it can hardly be said to be worth the name. This won't do. The children should be as trained as to take a delight in reading

The following is a statement of the monthly income and expenditure on the up keep of the school.

Particulars	Monthly income	Particulars	Monthly Ex
Govt grant	Rs 51 57	Teachers salary	Rs 184/-
Aver fee receipt	Rs 30/-	Servant	7/-
Local contribution	127/5/-	Prov.Fund Cont	5/5-
		Lib & Prize	4/-
		Building Repr	10/-
Total	214/5/-	Contincies	4/-
		Total Rs	214/5/-

The balance at the credit of the school at the close of March 1932 was Rs 219/4/1 as detail below:

1. General Cash Book	Rs 24-2-0
2. The building repair Fund	114-4-9
3. The Athletic Fund	138-12-6
4. The Prize Fund	21-15-9
5 The Library Fund	17-14-7
6. The Contingent Fund	2-2-6

Total Rs 219-4-1

The amount deposited in the P.O. saving Bank book is Rs 82/3/7. Taking into account subsequent expenditure to pay off the teachers dues and other item an amount of Rs 101/- remains in the hands of the Headmaster which is in contravention of the relevant provisions of the Code and should as such be deposited in the school P.O.S.B. book at an early date and a report should be made to me after due compliance.

The Committee of management have not deposited their contribution of Provident Fund to the P.O. Saving Bank after January though the teachers have been paid up to March last once.

Writings and cutting should be avoided in accounts in future and corrections, if necessary should be made and duly initialled. Dates should also be fixed for the actual collection of fees and other

The headmaster has been asked to report that the money has been deposited in the P.O. savings bank.

The C. C. could pay only the salaries. Attempt is being made by the C.C. to pay up all.

Noted. The hdmaster
has been warned never
to do it again. *a general* 9

ed. The postmaster
s been warned never
do it again. he a General
shd. be as I
There re this as I
similar re Govt Spur
circumstances that
some were also sent
ages were also very
also very clumsy.

50
Date have been fixed.
th² m.

dues which should not be collected throughout the month as at present.

Noted.

45 admissions were made this year, out of which 9 were cases of 1st admission and other came with transfer certificates, while 23 boys were examined before admission. The guardians declaration will have to be obtained from the guardian of Aita Khess (serial No. 19

The results of the last ~~XXX~~ annual examination are as follows:- class VII 10/17, class VI 6/6, class V 12/16 class IV 16/18, class III 9/18, class II 9/10 class I 6/8.

The results are fairly satisfactory except in classes III and VII, which fared badly and in which the teachers concerned will have to spare no pains to achieve better result in future.

The following are the dates of the last six meetings of the Managing Committee:- 22-2-1932, 9-1-1932, 30-10-1931, 27-8-1931, 30-7-1931 and 12-6-1931.

The building is being whitewashed and is under repairs. There are 2 hostels attached to the school & namely (1) for boys with 46 boarders and (2) for girls with 12 boarders. There is a lady Superintendent to look after the girls-boarders with a monthly allowance of Rs 4/- while the Superintendent who looks after the boys hostel gets Rs 4/- ~~MX~~ a month likewise.

The classes were examined with the following results:- Class I - Date of admission should be noted against each boy in the attendance register. None could read or write nor could they make out numbers, though, 1 girl has been reading since 1930. Reading sheets should be forthwith introduced and talked fully to account. The small sticks are there but they seem to exist merely in name, and have hardly been made use^{of} up to date.

Noted.

Noted.

Class II- 2 of the children could write out figures. Reading and writing below the average.

Class III Hindi reading and explanations require :

increased attention. Spelling weak. Arithmetic below the average, History more attention is needed

The hdmaster has been asked to see to this.

Class IV - English conversation fair, but leaves much to be desired. Arithmetic - only 1 boy has made some headway, but the rest are deficient, Hindi Composition much neglected Hindi literature progress as made is far too slow Geography; - maps have not been drawn up to date.

Class V Arithmetic very weak Geography map pointing needs to be practised on an extensive scale. English fair Hindi not understood properly.

Class VI - English progress fair on the whole, though there is plenty of room for the further improvement Hindi Composition requires increased attention Arithmetic only 2 could do the sum set Geography fairly satisfactory.

Class VII English fair but in conversation the boys need plenty of drilling Accuracy of pronunciation in the case of grown-ups should be carefully and invariably insisted on, Arithmetic far below the mark None could do the sum set, Geometry fair but more careful attention to this subject will more than repay the care bestowed on it in future, Hindi Composition should be absolutely accurate after an exercise has been scrutinised by the class teacher.

The Dy. Inspector of Schools Gumla and the S.I. of Schools Simdega West were with me and assisted me in examining classes.

Sd/- Harbans Lall

District Inspector of Schools,
Ranchi

Memo No.

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the Deputy Inspector of Schools, Gumla, for information.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 732

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the G. E. L. Church Council, Ranchi, for information.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 27th April, 1932.

Copy ~~will~~ forwarded to the headmaster, M.E. School, Kinkal, for information and guidance.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council

Received..24.3.32

Register No. 787

Date.....14.3.32

File.....24

Reply No.....

Date.....

No. 577

Ranchi.
March 24, 1932.

The Church Council,
G. E. L. Church of Chotanagpur and Assam, Ranchi.

Sir,

I beg to report that owing to low roll number of schools in the current year the services of the candidates in the M. E. Schools at Takarma, Koronjo and Govindpur were not required because some of the duplicated classes of the schools were combined into one class. I was therefore required to send them away from their respective schools and request you to so arrange that they may be engaged in the congregational works and thus to utilise their services for the G. E. L. Church.

Yours sincerely,



Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

1027/32.

F.-24.

P. Hurad, Esq.,
Secretary, G. E. L. Church in
Chota Nagpur and Assam,
Ranchi.

The Superintendent,
Jashpur Feudatory State,
Jashpurnagar C. P.

23rd. March, 32.

Referring to your Office letter No:683/28 dated the 10th. March current, enclosing a copy of Rev: A. John's letter of 2nd. February 1932, for my information I have the honor to say that the letter of Rev: A. John is self explanatory. His letter does not mention that the Schools should be transferred to the State and converted into State Schools unconditionally. He has clearly stated "we request to make stipendiary schools under State Supervision." The word "stipendiary" has its own meaning and makes a difference between a State School and a stipendiary School.

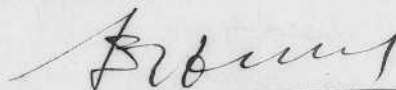
I regret there has been some misunderstanding on this matter. So far what we know from the Education Codes is that the aided Schools and stipendiary schools have been given certain privileges which can not justly be claimed either in Government or State institutions. In our stipendiary schools we seek larger cooperation from the authorities in whose jurisdiction our schools are situated and therefore Mr. John expressing the Council's views wrote "State supervision".

I do, therefore, request that you will be pleased to give this matter your careful and sympathetic consideration and favour us with an early response.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,



Secretary,
G. E. L. Church.

We, The Church Council of the G. E. L. Church of Chotangpur and Assam, declare herewith that we would pay up all the amounts of salaries due to the teachers up to December, 1931, for the M. E. Schools at Burju, Govindpur, Kinkal, Koronjo, Lohariaga and Takarna.

Ranchi, the 22nd March, 1932.

Church Council Officers : Pres. *J. J. J. J.*
Secy. *J. J. J. J.*
Treas. *M. J. J. J.*

Church Council
Received... 24.3.32
Register No. 776...
Date... 21.3.32
File... 24...
Reply No.
Date,

To

The Church Council Lutheran Church
Ranchi.

Through

The Supervisor Lutheran Schools to
Ranchi.

The Alaska Chairman
Lohard

L. The Headmaster Lutheran M.E. School
Whardaga

Dated Lohardaga the 18th March 1932.

Inc.

With reference to the H. Supervisors letters No 493

2513 of the 10th & 16th inst I have the honor to lay
the following for your kind and favorable consideration

1. That I am quite unable to work such
touring work with proportion salary.
2. That I am also quite unable to do touring ^{work}
every week without a conveyance.
3. That the post in which I have been

Recommended
forwarded to
The Head Supervisor
O. H. Gray
H. J. M. J. 18/3/32

Ref. H.D. Supervisors' reasons.
 Letter No. 513. 8/16³/₃₂
 के प्रस्ताविक भार C.C. मल्लाका Supervisor
 के लिये कुछ नहीं कर सकती है तो इलाका में
 करा कर सकेगी। इलाके में पुराने काम को पुनरुत्पादन
 को पुनरुत्पादन मात्र का काम दे दिया है, तो पूरा
 इलाके में पूरा का काम दे दिया है, तो पूरा
 का भी देने के साथ ही नये स
 Rev. M.S. Kujur
 Malakhalai
 18.3

(1). I have been ^{placed} in the place of
Babu Shanti Prakash Bhatla
and vice-versa he has been placed
in my place at Gmmla for one
year (ie for the year 1934.)

That Babu Shanti Prakash's
Post in the Gharaga M.E. School
was not temporary nor his appoint-
ment was due to the sections of Class
VI

4. That if I am regarded as a temporary Teacher for the Lohardaga M.E. School, then I may not

25.3.32
27.3.32
28.3.32
24

Memo No. 578

Dated Ranchi, the 21st March, 1932.

The petitioner may be a permanent church worker but as far as M. E. School is concerned he is only a temporary one. It can be said whether the C. C. will allow him some sort of conveyance for his touring work in the Ilaka Others do not say anything about it. The petition is however forwarded to the C. C. for their consideration.

V. S. Singh

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

*Received
21.3.32
V. S. Singh
Head Supervisor
Lutheran Schools
Ranchi*

*Received
21.3.32
V. S. Singh
Head Supervisor
Lutheran Schools
Ranchi*

27332
276
21332
24
he regarded as a temporary teacher for the Gumbela school, so I have sufficient ground to claim for the Gumbela school as well as for the Lohardaga M.E. school. So to say that my permanent post in these two schools has become ultimatum i.e. either I may be placed at Gumbela or at Lohardaga permanently according to the last year's arrangement.

5. That if I am not sent to Gumbela school then I have every right to remain as a permanent teacher in the Lohardaga M.E. school without any dispute unless and until I am given certain preferences and privileges.

6. That because I am not sent away to my destined place (i.e. to Gumbela) at the end or at the beginning of the years 1931 & 1932 respectively, therefore my post in the Lohardaga M.E. school becomes permanent by itself.

7. That as one of the sections of Class VI is abolished this ^{year}, so the teacher was employed on account of section classes of class VI may be sent away, and this will be the justice.

8. That my service is not at all junior than many teachers of the school in the mission or am doing no less work in the Akaka than others.

9. That present difficulties and troubles which I am enduring in the school is quite sufficient for me.

10. That under the above circumstances I crave your indulgence that you will kindly not send me away to raise money with a proportion salary and without a conveyance and allow me to remain in the school and also allow me to wait for the reply having been in the school, for which act of your kindness I shall remain ever grateful to you.

I have the honor to be
your most obedient servant.

Chait Bishram Minge.

Church Council

Received.. 17.3.35

Register No. 767

Date.. 17.3.35

File.. 24

Reply No.

17/3/35

To

The Lutheran Church Council
Ranchi

Through The Missionary Revd St. John
Chainpur.

श्री ईश्वरी मान्यवर ए.ए. को यीशुसहाय ।

अति दीनता पूर्वक यह भाषीन दास नीचे लिखित
चन्द वाक्यों आप के उदार विचार के साम्हने रखने के लिये
विनित प्रार्थना करता है ।

१. आप को मालुम है कि मेरी बाल्यावस्था में ही मेरे पिता जी
का देहान्त हो गया जिस कारण मुझ को परिवारिक भरण पोषण का
भारी बोझ उठाने पड़ा ।

२. आप ही के उदार पुरी महल में छोटी से नौकरी पाकर दुबरा माई
बहिनों को मोटी शिक्षा दिलाने में मैं थोड़ी सी सफलता पाया हूँ
जिसके लिये हार्दिक धन्यवादी हूँ ।

३. पर जब से मेरी बदली कोन्डरा से गुमला में हुई है तब से
मेरी आर्थिक अवस्था दिनोंदिन बुरी होती जाती है । यहां शहरी
रहने शहने में रहना और लड़का लड़की को विद्यालय में शिक्षा
दिलाना कठिन ही नहीं बरण असम्भव हो गया ।

४. इस लिये दीनता पूर्वक भर्त्ता है कि इस बन्दे पर कृपा
वृष्टि कर फिर कोन्डरा बदली किये जाने का हुक्म फरमाया
जाय ।

आप का आज्ञाधीन दास

Kaeman Khess

Gumla
12th March
1935

Forwarded

St. John
17.3.35

2.
970/32.

F.-24.

P. Hurad, Esq.,
Secretary, G. E. L. Church in
Chota Nagpur and Assam,
Ranchi.

The Inspector of Schools,
Chota Nagpur Division,
Ranchi.

18th. March, 32.

In acknowledging receipt of your office letter No: 1225
dated Ranchi the 14th. March 1932, addressed to the Vice-Chairman,
Ranchi district Board, on the subject of Lutheran Schools in the
district, I have the honor to submit the following for your information.

1. That from your letter now under reference I have come to know that you have been informed something with regard to the future control of our Schools in this district. To make it definitely clear I beg to say that there has been certain misunderstanding as to this matter. The Church Council is not going to hand over or transfer the administration of the Schools to any Local Committee owing to the sudden stoppage of the foreign resources which thus far supplemented the financing of these institutions, but rather wishes that the Ilaka Panches (Church district Committees) should make special great efforts to collect more funds towards the support of the Schools and hostels and have thus a larger scope for cooperation which is a necessity in an Autonomous Church where the Local Committees subordinate to the Church Council must help it in shouldering the financial burden in carrying on the educational work of the Church.

2. The Church Council has already been considering the question of retrenchment in the Schools with a view to put them on a sound economic basis.

I have the honour to be,

Sir,

Yours most obedient servant,

Sd/- P. Hurad.

Secretary,
G. E. L. Church.

2.

Memo No. 971/32.

F. - 24.

Dated Ranchi, the 18th. March, 1932.

Copy forwarded to the Vice-Chairman, Ranchi district Board, for information.

Sd/- P. Hurad.

Secretary,

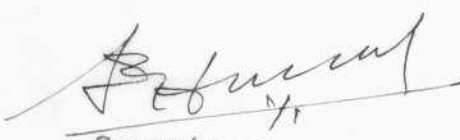
G. E. L. Church.

Memo No. 972/32.

F. - 24.

Dated Ranchi, the 18th. March, 1932.

Copy forwarded to the Head-Supervisor of Lutheran Schools for information.


Secretary,
G. E. L. Church.

Church Council

Received. 17.3.32

Register No. 767.

Date. 17.3.32

File. 24

Reply No.

Date.

No. 520

Ranchi.
March 17, 1932.

The Church Council,
G. E. L. Church, Ranchi.

Sir.

While forwarding the petition of the Govindpur M. E. staff I beg to ~~xxxxx~~ make the following remarks :-

1. That similar disputes might arise in other Ilakas in matters of distribution of the Ilaka income among the pastors, preachers and teachers and unless something is done by the C. C. in this respect the matter may grow serious.
2. That the teachers in many Ilakas are giving their heart and soul to the Ilaka work that more income may be received from congregation but if the teachers be disappointed by the Ilaka people they may be again slackened and sufficient income from the congregations can never be expected. It is through the labour of teachers something more is received and whatever is received ought to be distributed among the workers in accordance with the instruction already given by the C. C.

Now because the Ilaka income is very little and if out of this little nothing be given to teachers I should propose the following :-

That I may be permitted to ask the Department to allow me to charge from our aboriginal boys the same fee as it is charged from the non-aboriginals.

2. That no freestudentships be granted to any boy because the sources of income from all other sides are entirely dried up

3. That I may be permitted to cut down the high expenditure of schools by sending away high salaried teachers and keeping only the standard scale of expenditure which may be covered only with school fees and Government grant.

The workers in school department and those in congregation cannot be put in the same level. The workers in congregations may manage to live without getting any salary from the Church but those who work in schools cannot do it and therefore I should say that the Ilakas be requested to obey the instruction of the C. C. in matters of distribution of the Ilaka income among the workers

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council

Received..17.3.32

Register No. 266.

Date.....17.3.32

File.....27

Reply No.....

Date.....

Memo No. 524

17/3/32

Office of the Head Supervisor, Lutheran Schools, Ranchi.

Dated Ranchi, the 17th March, 1932.

The undermentioned document is forwarded to the Church Council, Ranchi, for information, with the request to so arrange that from January, 1932, teachers of our Lutheran schools may be paid their salaries regularly month by month free from debts of all kinds.

N. Singh

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Copy of the letter No. 1225/3P-3-32, from the Inspector of Schools, Chotanagpur Division, to the Vice-Chairman, District Board, Ranchi.

" With reference to your letter No. 1599, dated the 4th March, 1932, on the subject of payment of grants-in-aid to Lutheran Mission Schools, I have the honour to state that I have the same trouble with the Middle Schools and have been put off with hopes and promises for six months. In my opinion the time has now come when these schools must be put on an economic basis. To help the Lutheran Church as far as possible in this matter I propose to pay all the grants that are due up to the end of this financial year. No good purpose would be served by allowing these sums to lapse and the condition of the schools would be made hopeless if we did so. Before any grants-in-aid are paid in the next financial year however I shall require all the teachers in all the Middle schools to be paid up to date and that their future financial prospects shall be made certain by reduction of staff, by reduction in the pay of teachers and by the raising of local subscriptions. I do not regard the present proposal of the Church Council to pay salaries up to December 31st, 1931, and thereafter to hand over the schools to local committees as at all satisfactory. This will mean that the local committees take over the schools with a debt of roughly three or four months salaries due. If the schools are to be handed over to the local committees they should at least be handed over entirely free from debts of all kinds."

Church Council
Received...15.3.32
Register No. 258..
Date.....14.3.32
To.....24.....
From.....

No. 1225
3P-3-32

~~15~~
15/8/32

The Inspector of Schools, Chota Nagpur Division,
To

The Vice-Chairman, Ranchi District Board.

Ranchi, the 14th March, 1932.

Sir,

With reference to your letter No. 1599, dated the 4th March, 1932, on the subject of payment of grants-in-aid to Lutheran Mission Schools, I have the honour to state that I have had the same trouble with the Middle Schools and have been put off with ~~xx~~ hopes and promises for six months. In my opinion the time has now come ^{when} ~~with~~ these schools must be put on an economic basis. To help the Lutheran Church as far as possible in this matter I propose to pay all the grants that are due up to the end of this financial year. No good purpose would be served by allowing these sums to lapse and the condition of the schools would be made hopeless if we did so. Before any grants in aid are paid in the next financial year however I shall require all the teachers in all the middle schools to be paid up to date and that their future financial prospects shall be made certain by ¹reduction of staff, ²by reduction in the pay of teachers and by the ³raising of local subscriptions. I do not regard the present proposal of the Church Council to pay salaries up to December 31st 1931 and thereafter to hand over the schools to local committees as at all satisfactory. This will mean that the local committees take over the schools with a debt of roughly three or four months salaries due. If the schools are to be handed over to local committees they should at least be handed over

(2)

handed over entirely free from debts & of all kinds.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Sd. H.Dippie,

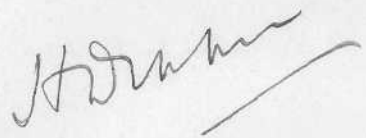
Offg. Inspector of Schools.

D.P.

Memo. No. 1228

Ranchi, the 14th March, 1932.

Copy forwarded to the Secretary, Lutheran Church Council,
for information.



Offg. Inspector of Schools.

D.P.

12/3/32

PLEASE ADDRESS REPLY BY
DESIGNATION AND NOT
BY NAME.
JASHPUR NAGAR
Via Lohardaga, B. N. Ry.

No. 693/28

12/3/32

Church Council

Received 14.3.32

Register No 255

Date 10.3.32

File 24

Reply No

Date

FROM,

Khan Saheb Abdul Ghaffar Khan, B.A.

SUPERINTENDENT,

Jashpur State, C. P.

To,

The Secretary,

G. E. L. Church, Main road

RANCHI.

Dated the 10th March 1932.

Subject :- Transfer of schools.

Sir,

With reference to your letter No.903/32 F.- 24. dated the 27th February 1932, I have the honour to send herewith a copy of paragraph 2 of Rev. John's original letter dated the 3rd February 1931. In that letter, a request was made for the transfer of your Mission schools at Sarhapani, Golidih and Bipatpur without any conditions. Upon that letter we have obtained Political Agent's sanction for taking those schools in our charge.

Now you put forward for the transfer of those schools 5 conditions as mentioned in your aforesaid letter. I beg to give my opinion on those conditions as noted below :-

- Condition 1 :- If present Lutheran teachers are found upto our mark, their services will be retained, otherwise not.
- " 2 :- This State carries on educational institutions strictly on non-religious line. We regret, after the school houses come into our charge, we cannot agree to any religious teaching -- whether it may be for a Hindu religion or Islam or Christian religion, in those buildings even out of school hours. This will give rise to several complications in future. School hours are meant purely for educational work and moral teachings.
- " 3 :- In Sarhapani there is a separate Chapel. In Golidih and Bipatpur a common hut is used both for purposes of school and worship. The State has given permission to re-open school at Golidih where one was in existence

existence. But no permission was given for building a chapel at Galidih and at Bipatpur. Besides, the school at Bipatpur came into existence without any knowledge of the State. The present order of the Political Agent is that nowhere in the State, when it will be under management, any chapel whether Catholic or Lutheran could be built without his express orders. In view of these considerations, we regret we shall not be able to spare the huts at Galidih and Bipatpur to your mission for use as chapels. If you do not want to give those huts to us, we are prepared to have separate huts made for our school purposes but you will kindly apply to Political Agent for converting those huts openly into chapels.

Condition 4 :- If the school houses are made over to the State with the existing equipments, the State will be very grateful. There is no equipment worth the name in any of those three schools.

" 5 :- We regret we cannot accept also this condition. Appointment of teachers and their mutual transfers are carried on in this State on purely non-religious lines. Teachers are recruited on consideration of merit, irrespective of their caste and religions and are freely transferred according to the need of the State from one school to another only upon consideration of efficiency. We cannot bind ourselves to keeping only Lutheran teachers in those schools.

In the end I beg to say that on account of subsequent developments, I regret I could not issue letters of appointment for teachers to work in those schools.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,

A. K. Sharma
Superintendent,
Jashpur State, C. P.

Copy of paragraph 2 of Rev. John's letter dated
3-2-31 to the address of Ruling Chief, through
Dewan Saheb, Jashpur State, C.P.

X X X X X

2). Whereas we find it difficult to maintain
and increase our Primary Schools in this State, we
request to make the U. P. school at Sarhapani and
the L. P. Schools at Gulidih, Bipatpur and Ichkela
stipendiary schools under State supervision.

X X X X X

True Copy.

Heenan
Superintendent,
Jashpur State, C.P.

926/32.

12th. March,

32.

P.- 24.

Rev: F. Schulze,
Lutheran Compound,
Rajgangpur.

Dear Mr. Schulze,

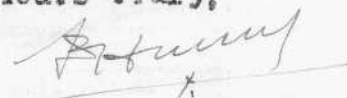
I have your letter of the 1st. instant and thank you. In reply I wish to say as follows:-

1. Regarding Master Nuas Soy's application for money - I have asked the Head-Supervisor to let the Executive know how much is due to this man as his remuneration. On receipt of this information I shall try to do something for him. Now another thing is that just at present the Council Treasury is not in a position to help any body, as we have to look into the maintenance of the schools or else we lose Government Grant.

2. With regard to Teachers' Allowance - The Church Council Executive think that when the teachers are paid in full, any allowance over and above their regular salaries is not permissible and should be discontinued as such. We, however, advise that the Deputy Inspector should be consulted before you take any final action ⁱⁿ the matter.

With sincere hearty Vishusahay.

Yours truly,



921/32.
F.- 24.

P. Hurad, Esq.,
Secretary, G. E. L. Church
Chotanagpur and Assam,
Ranchi.

The Inspector of Schools,
Chota Nagpur Division,
Ranchi.

11th. March, 32.

In continuation of Para 2 of my letter No: 872/32 of the
F.- 24.
13th. February, 1932, I have the honour to submit, after my personal
inspection, the accompanying Note on the financial situation of the
Govindpur M.E. School.

There had been certain irregularities in Book-keeping and
I have made adjustments with a view to make the whole financial
position clear and up to date, with special instructions to the
Head-Supervisor and the Head-Master to keep the accounts correct.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Sd/- P. Hurad

Secretary,

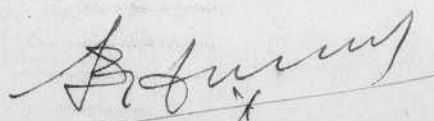
G. E. L. Church.

Encl: Note of Inspection
Govindpur Accounts.

Memo No. 922/32.
F.- 24.

Dated Ranchi, the 11th. March, 1932.

Copy of the Secretary's Inspection Note on the Govindpur M.E.
School Accounts Registers submitted to the Inspector of Schools,
Chotanagpur Division, forwarded to the Head-Supervisor of Lutheran
Schools for information and guidance and communication to the
Head-Master of the School.


Secretary,
G. E. L. Church

Note of
Inspection of Govindpur M. E. School
Accounts.

-----000-----
Date 22nd, February, 1932.

I examined the School Account Registers and found the followings :-

I. The C. Form Registers. It was found that the Abstract account for the month of September 1931 was actually for the month of June 1931, although it was wrongly written July 1931, because from further examination it was found out that the Abstract Form C for the month of November is also for July and it is rightly so. The former is therefore only a clerical error made in the Office of the Head-Supervisor in making the declaration for application of Grant, a copy of which remains filed in the office of the Head-Supervisor.

II. The Cash Book. On inspection of the Cash Book it was found out that at the close of the year there was an opening balance of ----- Rs 316- 8-0.

Add collections made in January 1932.

School Fees -----	Rs 86- 9-0.
Athletic and Game Fees -----	Rs 125-10-0.
Game Fees (later collection) -----	Rs -12-0.
Government Grant -----	Rs 264- 0-0.
Borrowed from Athletic Funds -----	Rs 6- 9-0.
Total up to date of Divisional Inspector's inspection	Rs 800-0-0.

(i) Out of the above Rs ⁸⁰⁰~~800~~ a sum of Rs 126-6-0. (i.e. 125-10-0 plus -/12/-) was transferred to the Account of Games and Athletics, and, of this amount two remittances of Rs 50/- each i.e. Rs 100/- was sent to the Head-Supervisor for Deposit in Post Office Savings Bank as per instruction of the Department. The two remittances are dated 13-1-32 and 28-1-32 and are supported by the two Post Office receipts produced as vouchers. It is therefore clear that on 9.2.1932 on the day of inspection by the Divisional Inspector, the Head-Master should have in his hand Rs 26-6-0. on this Athletic Accounts.

(ii) Further, the Head-Master had made a total advance of Rs 316-8-0 to the teachers on their salaries during the months of June to December 1931, which have not been entered in the Cash Book on the disbursement side. I have verified these advances made to the teachers from time to time during these months and which have been entered in an Advance Book main-

maintained by the Head-Master, and are as follows :-

June and July -----	Rs 130- 2-0.
August -----	Rs 68- 9-0.
September -----	Rs 0- 0-0.
October -----	Rs 87- 1-0.
November and December -----	Rs 30-12-0. =Rs 316-8-0.

Besides this, there was another advance of Rs 80-15-0 during the month of January which has also been noted by the Inspector.

The total of advances thus made, therefore, comes to Rs 316-8-0. plus Rs 80/15/- = Rs 397/7/- up to the date of inspection by the Divisional Inspector.

Now in January out of a total of Rs 800-0-0. in the ~~XXXXXX~~ Cash Book if deductions be made of all amounts disbursed on all accounts there is left a balance of Rs 5-10-0 excluding Rs 26-6-0 on Athletic Accounts or a total of Rs 32-0-0. only.

Now a word of explanation. In the Cash Book, the entries on the Receipt side have all been regularly made while some entries (i.e. the amounts given in the form of advances) have not been made on the Disbursement columns since June last and therefore it is not at all possible to strike the correct balances at the ends of the months. From the point of book-keeping this is mistake and an irregularity. But the Head-Master did this on instruction given by the Head-Supervisor for the reason that entries of smaller amounts of advances made to individual teachers will make the Cash Book not only clumsy but will also go to make a material difference from the entries in the Acquittance Roll which has ultimately to be filled in whenever payments have been made either in that month or any subsequent month. The Head-Supervisor thinks that the entries in the Cash Book should be made only when the teachers are paid in full, and, that the Acquittance Roll Register can not be filled in until full payments of salaries have been made and according to the Head-Supervisor it was advisable to make only such entries in the Cash Book as was to have been made in the Acquittance Roll.

In my opinion, the best system would be to make entries each month of all amounts, big or small, given in the form of advances in the Cash Book, as the case may be, and, if the salaries of any month are paid in any subsequent month the entries in the Acquittance Roll will show the date or dates when the payments have been made. I have now made all adjustments in the Cash Book and cleared up and brought the accounts up to date.

Now as to the question why money was remitted to Ranchi while the teachers were five months in arrears, I should also say that the Head-Master was quite competent to use the Games fees etc. as he used the School fees, to meet a part of the salaries of teachers in the form of advances and later to recoup the same on receiving the contributions from the Church Council. The only explanation offered by the Head-Supervisor and the Head-Master regarding the games fees has been this that they did not think it proper to use this money (Games Fees) for purposes other than those for which they are collected, and for which there had been special orders from the Department to deposit the same in the Post Office Savings Bank.

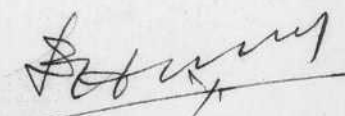
After making all adjustments in the Registers I have found the cash balance of Rs 32-0-0 (Rs 5-10-0. plus 26-6-0.) in the hands of the Head-Master which is the true and correct account of the School finance. I have thus cleared up the whole solutionⁿ of financial position in that School.

One word more in connection with the Head-Master Supervisor's statement on this subject which has already been sent to the Divisional Inspector, as usual. I regret that the Head-Supervisor did send it without previously consulting me. His phraseology "th Head-Master ought to have in his hand" in 2 or 3 places in his statement is very misleading.

He is directed in future to audit all school accounts invariably from time to time and embody the result of his inspection in his Report to the Church Council.

Further I have found that there is a Credit Balance of Rs 180/- in the Post Office Savings Bank. I don't think that *this* money should lie idle at a time when we need it so badly and I have directed that the Head-Supervisor should see that Rs 150/- be withdrawn from the Postal Account and spent on the teachers' salaries.

Ranchi.
The 11th. March, 1932


Secretary,
G. E. L. Church.

From: Rev. F. SCHULZE,
G. E. L. MISSION.

RAJGANGPUR.

Dated 1.III. 1932

Church Council No. 21/32

Received... 4.3.32

Register No. 738

Date... To the

File... 18.10.32

Reply No.

Date... Dear Mr.

Church Council

R a n c h i

Hurad,

I send ^{an} application of a former teacher of Deihijira. He is in great need of money for the mentioned reasons. If possible the C.C. may grant him some money as it is due to him.

2. The Non-Christian Teachers of our A.E. School get some allowance from the School-Fees in addition to the salary which the State pays. Should it be continued or not. I request the C.C. for final decision.

Your faithfully

Office

F. Schulze.

Ask the Hd Insp's office to find out what amount is due to Bn: Nwas Soy teacher of Dalijira as his remuneration as a school teacher there.

Booamf
12/3/32

Church Council

Received... 2.3.22

Register No. 235

The Church Council,
C. E. L. Church, Ranchi.

Date 1.3.32

File 24

Reply to Sir,

No. 457

Ranchi.
March 1, 1932.

I beg to inform you that the Headmaster of the Lehardaga M. E. School reports to me that Babu Yakub Lakra who has been asked to leave the School for Ilaka work should not be called back for school work for reason that by constant change in the staff brings great loss to the school. He wants that Babu Yakub be allowed to remain in the Ilaka work and in his place no other teacher be asked to leave the school. Babu Yakub also is not against going to the Ilaka work but his old age does not allow him to go out in the Ilaka. He is not able even to do the work of the Lehardaga pracharak who also has to visit some villages outside Lehardaga.

Under the circumstances I beg to consult the C. C. how I should reduce the number of the staff in the Lehardaga school and which teacher ought to be sent out to the Ilaka work to raise more income for the Ilaka.

Soliciting an early reply,

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council

Received 27.2.32

Register No. 730

Date... 26.2.32

File... 24

Reply to...

Date...

File

Grounds
26/2/32

24 Dear Mr Hurst

Received your letter just yesterday and
am sending per bearer the following books.

1 Cash Book

1 Acquittance roll.

1 C. Form file

2 Advance registers.

5.

If the bearer is not needed to stay on, please direct him to return. But if the books are due returned at once after verification ^{please} let him return with the books.

With regards
Yours lf
J. Luffey
Adm

903/32.

F. - 24.

P. Hurad, Esq.,
Secretary, G. E. L. Church in
Chota Nagpur and Assam,
Ranchi.

The Superintendent,
Jaspur Feudatory State,
Jashpurnagar C.P.

27th February 1932.

With reference to the correspondence with the Revds: A. John and M. Schiebe on the subject of transference of the management of the G. E. L. Church School to the State control, I have the honor to send in a separate cover a copy of the printed Minutes of the Church Council, and to say that on the conditions laid down there in (Page 21. of the Minutes) the District Board of Ranchi and Singbhum have taken over the management of our Primary Schools.

I am also enclosing for your perusal the English copy of the Conditions a translation of which appears in Hindi in the printed Minutes.

I may be permitted to say that the first 5 Conditions are the ones which are important from our standpoint and are of a nature which would call for no serious objection, and will be acceptable to you.

I do hope these 5 conditions only will be accepted and you will direct your Educational Officers to take over charge of the Schools

1. Sarha-pani. named in the margin.*

2. Gulidih.

3. Bipatpur.

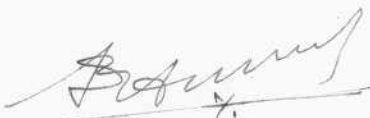
The Revds. John and Schiebe are also being communicated with this Order of the Church Council.

An early reply on the subject is requested.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,


Secretary,

G. E. L. Church.

From,

P. Hurad, Esq.,
Secretary, G. E. L. Church in
Chota Nagpur and Assam,
Ranchi.

To,

The Superintendent,
Jashpur Feudatory State,
Jashpurnagar C. P.

Dated Ranchi, the 27th. February, 1932.

Sir,

With reference to the correspondence with the Revds: A. John and M. Schiebe on the subject of transference of the management of the G. E. L. Church School to the State control, I have the honor to send in a separate cover a copy of the printed Minutes of the Church Council, and to say that on the conditions laid down there in (Page 21. of the Minutes) the District Board of Ranchi and Singbhum have taken over the management of our Primary Schools.

I am also enclosing for your perusal the English copy of the Conditions, a translation of which appears in Hindi in the printed Minutes.

I may be permitted to say that the first 5 Conditions are the ones which are important from our standpoint and are of a nature which would call for no serious objection, and will be acceptable to you.

I do hope these 5 conditions only will be accepted and you will direct your Educational Officers to take over charge of the Schools

* 1. Sarha- named in the margin.*
pani.

2. Gulidih. The Revds: John and Schiebe are also being communicated with
3. Bipatpur. this Order of the Church Council.

An early reply on the subject is requested.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient Servant,

P. Hurad
Secretary,
G. E. L. Church.

See Overleaf

No. 905/32.
F. 24.

Memo 904-905/32.

Secretary, G.E.L. Church in
Ranchi.

Dated Ranchi, the 27th. February, 1932.

Copy of the letter to the Superintendent Jashpur State for-
warded to the Revds: A. John and M. Schiebe for information, and
guidance and for direction to those in charge of the Schools to
carry out State Orders, in case Council's conditions are accepted.

Secretary,

G. E. L. Church.

With reference to the correspondence with the Revds: A.
John and M. Schiebe on the subject of transfer of the manage-
ment of the G.E.L. Church School to the State control, I have the
honour to send in a separate cover a copy of the printed Minutes of
the Church Council, and to say that on the conditions laid down there
in (Page 21 of the Minutes) the District Board of Ranchi and
Binghwa have taken over the management of our Primary Schools.
I am also enclosing for your perusal the English copy of the
Conditions, a translation of which appears in Hindi in the printed
Minutes.
I may be permitted to say that the first 5 Conditions are the
ones which are important from our standpoint and are of a nature
which would call for no serious objection, and will be acceptable to
you.
I do hope these 5 conditions only will be accepted and you will
direct your Educational Officers to take over charge of the Schools
named in the margin.*
The Revds: John and Schiebe are also being communicated with
this Order of the Church Council.
An early reply on the subject is requested.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

G. E. L. Church.

10

Conditions on which the Church Council will hand over the
Primary Schools to the Ranchi District Board.

-----oOo-----

1. That all qualified Lutheran teachers be retained in the D.B. Service.
2. That religious teaching be permitted out of School hours.
3. That the D.B. be given the free use of chapels for School work on week days (excepting Sundays and religious occasions) till the D.B. has not made separate arrangements for School accommodation.
4. That School houses (not chapels) too be made over to the D.B. for free use with the existing equipments, if any.
5. That the claims of Lutheran candidates for teachership may be given preferential consideration so long as the students attending these Schools are mostly Lutheran boys.
6. So long as there is a majority of Lutheran boys in any of these Schools, either the Principal of the G.E.L. Mission High School or the Head-Supervisor may be on the Education Committee of the Board as at present and may be consulted when making appointments, transfers or dismissals of Lutheran teachers.
7. That this transfer of control take effect from 1.4.28 and hold good till 31st March 1930.
8. That the question of reassuming charge of these Schools after 31st March, 1930, remain open for further negotiation.

Ranchi.
The 12th. September, 1928

Sd/- P. Murad,
Secretary to the Church.

Rev. Felix Schulze
Rajgangpur. GEL. Mission.

Jour. No 17

Eng. 29 FEB. 1932

Beant. 29 FEB. 1932

Dahijira

26 - 2 - 32.

Beant. 29 FEB. 1932 Mahamaneawar, Schulze.

Ap ko mera bahut 2 Gishu -
sahay. Aage yah bat hai ki mera fila

Prabhudayal Say aur mera bara Man-
mashi Suria ye donong lite sal arthat
1931 ko tanr bhitār ka har gaekh ko kati
the, us ke bare men admi picchhe 25.
donong ka jorne se Rs 50. ek t gaekh ka
gurmana hua. Ane wala machine ke
5 tarik ko wah rupaia na dakhil karne
se jamanat ko sajai milegi aur we do
jan jo gurmana hue hai un logon ko
jehel jana hoga. ye sab rupaia khojne
ke liye idhar udhar gaye. Aur apna tanr
ko bandha karne chake par koi bhi khet
ko nahin liya. Bail ko we sab bikri karne
de gaye par Bails bhi bikri nahi hui.
Rupaia rin khaje lekin rupaia bhi nahin
mila. Is karan se main ap se arji o
binli karta hun ki kriyaya jo mera
mission se talaf baki hai arthat ki
mujh ko january se April tak ki mili
hai. Kinlu mujh ko mission ki or se Rs 4.
kar ke aur dehat se Rs 4. ye donon mila
kar Rs 8 kar mahina kar milte thi,
kinlu mujh ko dehat ki or se bhi kuekh na
mili. Ab mera fila in sab bharon ko
mere upar men rakh diya hai, ab main
ilne rupaiyon ko kahan paunga.

Islize main af. se prarthna karla
hun, keonki is samay af ab lo mera
fila o malik hai, se af Councilon
se af report kar mang dijiye. Keonki
is samay men rupaiye ki bahut jarurat
hati hai.

sahay. Age af Malik hain.

Bhul chukon af map kijiye.

Dahijira } af ka sewa.

26-2-32.

Kuas Soy.

5 tarik ko jab rupaiya na dakhil huan
se jamanat ko saji miligi aur isse
jan jo gurmana hue hai un logon ko
jail se nikal diya jaye. Aur apna khar
se logon par sudhar gaye. Aur apna khar
ko band ho kar chla. Par koi bhi khat
ke nahi diya. Qail ko us sab likh kar
ke gaye. Par Baida bhi likh kar hui.
Rupaiya hin chahi lekin rupaiya bhi nahi
mila. Jo karan se main af se arji o
binti karke hun ki rupaiya jo mera
mission se talaf kahi hai arthat ki
mugh ko January se April tak ki mili
hai. Binti mugh ko mission ki o se kaq
kar ke aur dehat se ke ke ye donon mila
kar ke 8 kar machine kar milte thi.
Binti mugh se dehat ki o se bhi kichhna
nhi. Aur mera fila in sab kharan ko
mera uparman rakhi diya hai. Aur main
ab is kharan ko kharan kar rahi.

No. 887/32.
F. - 24.

Lutheran Compound
Ranchi.
24-2-32.

Dear Mr. I. Toppe,

Please send the under mentioned Registers through your Chowkidar as soon as possible, as they are required very urgently.

1. The C. Form Register.
2. The Cash Book.
3. The Advance Register.
4. The Acquittance Roll.

Deputy
24/2/32

Chure.
Received... 22.2.32
Register No... 221
Date... 20.2.32
File... 24
Reply No...
Date.....

Memo No. 397

file

Office of the Head Supervisor, Lutheran Schools, Ranchi.

Dated Ranchi, the 20th February, 1932.

The undermentioned document is forwarded to the Church Council, G. E. L. Church, Ranchi, for information that the Rev. M. Schiebe seems to have made over the Luth. Primary Schools in the Jaspur State to the management of the State.

N. Sz

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Copy of letter from Rev. M. Schiebe of Kinkel to the Superintendent of the Jaspur State, dated 16.2.32.

" Replying to your letter No. 169/28, dated the 23rd January, 1932, I beg to say that we agree to make over the Schools at Gulidih, Bipatpur and Sarhapani to the Jaspur State on the condition laid down in your letter.

We only request that Christian masters should be employed in these schools, who of course should be efficient according to your own standard."

Received.. 22.2.32

Register No. 716

Date..... 18.2.32

File..... 10

Reply No.

Date.....

मान्यवर - C.C. आपर छोटा नागपुर और असम को इलाका का
यीसुसहाय-1

महाराय

इलाका का आमदनी घटी होने के कारण
लड़कों स्कूल और मिडल स्कूल का घटा तलप (deficit) को
इलाका आमदनी में मिलाकर अनुपात में तलप बांटा जाय तो
मंडली विभाग के लिये कर्मचारियों को बहुत कम तलप
होता है इसलिये

अर्ज है कि जितना आमदनी दोनों स्कूल
में ग्रेन्ट और प्रीस मिलाके जमा होगा उतना ही आमदनी
मंडली विभाग के लिये भी अलग कर उससे जो बाकी
बचेगा सो अनुपात में दोनों विभाग (मंडली और स्कूल विभाग)
के कर्मचारियों को तलप बांटा जाय ऐसा नहीं करने से
मंडली विभाग के कर्मचारियों को बहुत तकलीफ है जब
लों कि आमदनी अधिक न हो।

आप के आज्ञाधीन

गोविन्दपुर

१६-२-३२

D. Hono.

19-2-1932

C. K. Bhengra

19-2-32

From : Rev. F. SCHULZE,
G. E. L. MISSION.

No. 3

File
RAJGANGPUR.

Dated 16. Februar 193 2.

Reg: M.No.858 -59/32
F.-24

Church Council
Received... 18.2.32
Register No. 704.
Date..... 16.2.32
File..... 24.
Reply No.....

To the

Church Council.....

R a n c h i

Dear Mr. Hurad,

Afer a long private conversation with the Dep. Insp, of Schools Mr. Misra I am glad to inform you thatwe may easily solve our School problem.Their is one more difficult point as regards our Padri Eliazar Ekka.It is possible that he is entangled in the present affairs.

The date for the meeting has been appointed for the 26.th of Februrary 1932.

=====

I shall wait for the Members of the C.C. at the station on the 25th in the evening.

Your faithfully

F. Schulze.

Received 17.2.32

Register No. 703

No. 374

Ranchi.

February 17, 1932.

Date 17.2.32

File 24 The Church Council,
G. E. L. Church, Ranchi.

Reply No.

Date Dear Sir,

I beg to bring to the notice of the Church Council the following and request to show me the way how the matters will be straightened out :

1, That to reduce the number of teachers in the Burju M. E. Babu Joel Hemrom was asked by me to work in the Burju Ilaka to try to get more income from the congregations for the Burju Ilaka. The Burju Ilaka ~~is~~ is not willing to take him in the Ilaka work for reason that the Ilaka is unable to pay him. If the C. C. will pay his salary they will have no objection to taking him. Now, I don't know what I have to do with the teacher because he is already come out of his school work and the C. C. does not like to throw away any teacher without giving him any work for his livelihood.

I have one suggestion for him and it is this - that the Burju Girls' School wants one more teacher and so if the C. C. will request the Correspondent of the Girls' School to receive him in that School this problem can very easily be solved out. I, therefore, request the C. C. to see to this.

2, That in Lohardaga M. E. Babu Yakub Lakra was asked to come out but because he is too old to go about in the Ilaka he sent a petition to me and it was taken into favourable consideration by the C. C. and in his place the Chairman of the Ilaka was requested to nominate another teacher in consultation with the headmaster for the work. The Chairman and the headmaster both are unwilling to nominate the teachers themselves but wish that he should be appointed by the higher authorities. I, therefore, suggest the name of Babu Bishram Minz for the work in the place of Babu Y. Lakra and I request the C. C. to approve of it and authorise me to serve a notice to him for that purpose.

3, I beg also to report that from Gumla U. P. also one teacher was to be sent out and Babu Premprakash Kujur was asked to go to his former School at Kendra. Now, if in Kendra the number of teachers is enough he should be asked to do the Ilaka work there but in case the Kendra School can take him there will be no trouble for which I have written to the Kendra Chairman. In case, the teacher cannot be taken in the school he should be asked to work in the Ilaka to raise more income for the congregation.

Soliciting an early reply,

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

16/2/32

Inspection remarks on the Lutheram M.E. School at Takarma,
dated 18-1-32, by the Divisional Inspector of Schools.

Church Council
Received 16.2.32
Register No 677
Date 16.2.32
File 24
Reply No
Date

The Church Council is trying its best to pay the teachers soon by taking loans but uptill now it has not been successful.

The C. C. has been informed of this.

The staff has now been reduced by one.

I visited this school on the 18th January, 1932. The total fee income averages this year about Rs 59/- which with the Government Grant of Rs 88/-, makes a total income of Rs 147/-. The ten teachers on the staff receive Rs 270/- a month and the total monthly expenditure amounts to Rs 309/-. There is thus a monthly deficit of 160/- which in the past has been met by the General Council of the Lutheran Church. This source of supply has now been dried up and the result is that the school is a bankrupt. The teachers received their August pay on January the 12th, and are thus four months in arrear. The building repair fund is six months in arrear and the total school indebtedness at the present moment is something like Rs 1250/-. The teachers here as at Korenjo are eking out a precarious existence by dividing the small income of fees, but the situation obviously cannot be allowed to continue and immediate action must be taken by the school authorities to raise money to pay the teachers. All that could be done in the way of economy has not been done.

There are at present ten teachers for eight separate classes, Classes IV, V and VII being duplicated. The two sections of class VII however number only 18 and 16 respectively and could, therefore, be combined and the staff reduced by one. The pay of the staff is as follows: Head Master I.A. and Bachelor of Divinity - gets Rs 60/- Three Certificated teachers get Rs 35/-, 30/- and 30/- respectively. Two Vernacular Masters get Rs 28/- and Rs 22/- respectively, and Three Elementary Trained Teachers Rs 18/-, 15/- and 15/- respectively.

The school presented 32 boys for the Middle School Certificate Examination last year and 24 passed, which is a considerable improvement on the previous year.

results. The school struck me very favourably on the whole and is ably managed by the Headmaster. As usual I noticed the very high average age of the boys. To remedy this, which, I believe, to be essential in this interest of the aboriginies themselves, it will be necessary to work at the bottom of school, viz. in class I where

The attention of the headmaster and also of the station pastor has been drawn to this.

(a) the recruitment must be of real beginners of five and six and

(b) these very small children must be systematically taught in a fashion which will secure steady progress.

Notation was very weak^a in Class VII- the result of very bad Arithmetic teaching in the lower classes and the valuable Geography syllabus of Class III, viz- practical measuring and drawing of plans had not been done.

The attention of the headmaster has been drawn to this.

do.

English was promising, but suffered from the usual effects of narrowness. English has to be used as a practical language and must therefore cease to be treated merely as a literary exercise. Even from class VII boys at present, questions like "3 from 7", obtained no response and yet these boys will in the next year have to listen to complete lessons in English, on Mathematics, History and Geography.

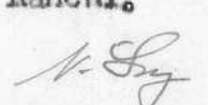
Sd/- H. Dippie

Offg- Inspector of Schools,

Chotanagpur Division.

Memo No. 359
Dated Ranchi, the 16 February, 1932.

Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the Divisional Inspector of Schools, Chotanagpur, Ranchi.


Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 360

Dated Ranchi, the 16th February, 1932.

Copy submitted to the District Inspector of Schools,
Ranchi, for information.

N. G. S.

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 361

Dated Ranchi, the 16th February, 1932.

Copy submitted to the Church Council, Ranchi, for
information.

N. G. S.

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 362

Dated Ranchi, the 16th February, 1932.

Copy forwarded to the Headmaster, M. E. School, Takarma,
for information.

N. G. S.

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

16/2/32

Inspection remarks of the Divisional Inspector of Schools,
 Chotanagpur, on the Govindpur Lutheran M. E. School, dated 9. 2. 32.

Church Court
 Received.. 16.2.32
 Register No. 698
 Date..... 16.2.32
 File..... 24
 Reply No.....
 Date.....

Visited 9. 2. 32.
 The School was closed for Idul-Fitr. I looked into
 accounts and found them in an appalling state of muddle.

The teachers have been paid up to August, 1931. On
 January 1st, there was a balance in hand of Rs 317- 5- 0

Fees for Jan.	86- 9- 0
Games fees	<u>125-10- 0</u>
	Rs 529- 8- 0

Explanation
 attached.

Advance paid to teachers in January	<u>80-15- 0</u>
	Rs 448-11- 0

Explanation
 attached.

July salaries were
 paid in November but
 in September the sa-
 laries for June were
 sent out and so in
 grant application
 (Form C) when July
 appears in September
 C it ought to be
 Jun. It was only
 a clerical mistake
 and the Headmaster
 has been instructed
 to correct it.

Where is this money ? There are entries in a rough
 book of remissions to Head Supervisor of Rs 50/-. Why
 money should be remitted to Ranchi while the teachers
 are five months in arrears with their pay must be ex-
 plained. I note too that the payment of salaries for
 July took place on 27. 11. 31 but it was declared in
 the application for grant to have been paid in September
 All this leaves a very unpleasant impression of ~~errand~~
 crookedness and the whole solution must ^{be} completely ~~be~~
 cleared up before any further Government grant is paid.

Memo No. 355

Ranchi, the 16th February, 1932.

Copy with marginal notes of the undersigned and the
 explanation from the Headmaster enclosed herewith are
 submitted to the Divisional Inspector of Schools, Cho-
 tanagpur Division, Ranchi.

N. Roy
 Head Supervisor,
 Lutheran Schools, Ranchi.

A.

Explanation of the undersigned on the remarks of the Divisional Inspector of Schools, Chotanagpur, on the Lutheran M. E. School at Govindpur, dated 9. 2. 32.

R e c e i p t s		Ex p e n d. shown in Cash Bk.	Advance pd to teachers not shown in Cash Bk.
July. Bal of June Rs 77-3-			
Jly fees .. 83-15-	161-2-	Rs 31-	Rs 130- 2- 0
Aug. Aug fees	102-10-	.. 25-	.. 68- 9- 0
Sept. Septer fees Rs 62-4-			
Remitt from			
Hd supr 289-4-	351- 8-	.. 360-9-	..
Oct. Oct fees	87- 1-	..	.. 87- 1-
Nov. Nov fees....Rs 122-15-			
Remitt from			
Hd. supr 264-	386-15-	363- 1-	..
Dec. Dec. fees	6-14-	..	30-12- 0
Total Rs	1096-2-	779-10-	316- 8- 0

In the end of Dec, 1931, the Hd master had Rs 316- 8- as balance in the cash Book but already paid as advance to teachers in another Book because in the cash Book is shown the teachers' salaries when they are paid in full.

Then again, the Hd master received games fees in December Rs 0-13- 0

Total Rs 317- 5- 0

In January the Hdmaster collected fees 86- 9- 0

.. .. Games fees 125-10- 0

Total Rs 529- 8- 0

But paid to teachers as advance in January 80-15- 0

Rs 448- 9- 0

So on the day of inspection the Hdmaster ought to have instead of Rs 448-11-

Rs 448-9- 0 only out of which he already spent in paying advance to teachers Rs 316- 8- 0

do for getting articles for

games 0-13- 0

Total Rs 317- 5- 0

Therefore he ought to have actually in hand as balance (Rs 448- 9- 0)

minus (Rs 317- 5- 0) Rs 131- 4- 0 on the day of inspection.

With regards to games fee and money for the repair to building the schools have been instructed by the department for the sake of their safety deposits

deposit to deposit them in the post office savings bank and so the Headmaster sometimes sends the money to me to deposit it in the Ranchi Head post office savings bank that whenever the money is needed for the repair of the school building or for obtaining articles for games it may be withdrawn from the bank. The school account in the post office savings bank has therefore been opened in the joint names of the secretary of the school managing committee and the headmaster of the school.

N. S. S.

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 356

Ranchi, the 16th February, 1932.

Copy submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi, for information.

N. S. S.

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 357

Dated Ranchi, the 16th February, 1932.

Copy submitted to the Church Council, Chotanagpur and Assam, Ranchi, for information.

N. S. S.

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

18/2/32

Inspection remarks on the Lutheran U.P. School at Chainpur

Church Council dated 12-1-32, by the Divisional Inspector of Schools.

Received... 16.2.32

Register No. 689

Date.....

File.... 24.....

Reply No.....

Date.....

The Headmaster and the Missionary in charge of the School have been requested to find young children for class I and that they should see that counting and other teaching materials be obtained for the school.

It is clear from the figures that the weakness of the school lies at the bottom almost only four boys got promoted from Class I last year. From what I saw of the teaching of Class I I am not surprised at the result.

There were no counting materials in use and the boys in the higher section were unable to recognise and write numbers.

So long as this neglect of the infants goes on we must expect very high average ages in the higher classes. High average ages mean a wasteful school and a wasteful school in discouraging Education rather than furthering it.

The children must be got young - say 6-, must be taught systematically and progressively and must above all be treated as small children and not miniature adults.

Noted

Sd/- H. Dippie

Inspector of Schools

Chotanagpur Division

Memo No.

Dated Ranchi, the 12th February, 1932.

Copy with marginal notes of the undersigned is submitted to the Inspector of Schools, Chotanagpur Division, Ranchi.


Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Ranchi,
Copy to the District Inspector of Schools, for information.

Copy of letter No 656. dated the 10th. February 1932 from
1G-12-32.
the Inspector of Schools, Chota Nagpur Division, Ranchi to the Secretary, G.E.L. Church in Chotanagpur and Assam, Ranchi.

-----oOo-----

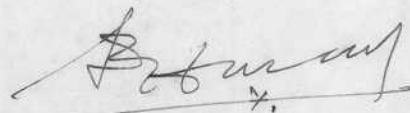
In continuation of my letter No. 394, dated the 31st. January, 1932 I have the honour to say that I visited Govindpur on the 9th instant. The accounts in the boys' school were in such a condition as to make a true estimate of the financial condition of the school impossible. The balance in hand on January the 1st according to the cash book was Rs 317/5/-. Fees collected in January amounted to Rs 86/9/- plus Rs 125/10/- as games fees. Against this amount of income Rs 80/15/- had been disbursed to the teachers in the form of advances leaving a balance in hand of Rs 446/11/-. The Headmaster could not tell me where this money was, but since the teachers are in arrears of pay since August last it is quite obvious that it ought to be disbursed to the teachers at once. I saw a recent entry in the cash book of a remittance of Rs 50/- to Ranchi. Why any school whose teachers are in arrears with their pay should spend Rs -/8/- in remitting Rs 50/- to Ranchi I cannot understand. The whole condition of things at this school left a very unpleasant impression on me. A further illustration of apparent crookedness is that the disbursement of the teachers' pay for July actually took place on the 27th. of November 1931 whereas it was declared in the application to the District Inspector of schools for the Government grant to have taken place in September. This kind of thing cannot be tolerated and I have been obliged to instruct the District Inspector that no further grant is to be paid to this school till the financial position is cleared.

Memo No. 876/32.

F. - 24.

Dated Ranchi, the 15th. February, 1932.

Copy of Inspector Dippie's letter forwarded to the Head-Supervisor of Schools for favour of placing such explanation on the situation at Govindpur as will be found out on inspection of the registers and account books thereof, at an early date.



Secretary,

G.E.L. Church.

872/32.
F.-24.

P. Hurad, Esquire,
Secretary, G. E. L. Church,
Chota Nagpur and Assam,
Ranchi.

The Inspector of Schools,
Chota Nagpur Division,
Ranchi.

13th. February 32.

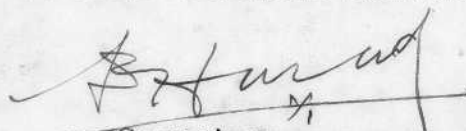
I have the honour to acknowledge receipt of your letters No: 394, dated the 31st January 1932 and No. 656 of the 10th. 10-12-32. February current and in reply I beg to say that the subject of M.E. School finances has engaged the special attention of the Council and I can assure you that the Council will be in a position to pay off the arrear salaries of all the teachers in the Middle English Schools before long. The word of our Bank was awaited to give you a reply.

As to the irregularities at Govindpur pointed out by you in your letter under reference, I am to say that the same will receive my personal attention and I will be writing you on the same as soon as the financial position there has been cleared.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,


Secretary,

G. E. L. Church.

No.....

From

REV: JOEL LAKRA, M. A., B. D., S. T. M.

Principal,

Gossner High School, Ranchi,

To

The Inspector of Schools, Chota Nagpur Division.

Dated Ranchi the 13th February 1932.

SIR,

With reference to your Memo No. 658, dated the 10th instant, forwarding me a copy of your letter No. 656, dated the 10th instant, to the Secretary of the Church, I have the honour to report that the Secretary of the Church is being ~~ax~~ immediately deputed to Govindpur to investigate into affairs there. I assure you an immediate rectification of the financial position at the Govindpur M.E. School.

Please await further correspondence.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Joel Lakra
Principal,

Gossner High School, Ranchi.

Copy forwarded to the Secretary C.C. for information.

Joel Lakra
PRINCIPAL

Church Council
Received... 12.2.32
Register No. 692
Date... 8.2.32
File... 24 or 18
Reply No.
Date.....

No. 353E

From Baboo Bairagi Misra B.A. D. Ed.
D. I. Schools, Gangpur

To

P. Hurad Esq/
Secretary

G. E. L. Mission

dt 8-2-32

Lutheran Compound
Rauchi

Dear Sir,

I am in receipt of your most esteemed letter dt 6-2-32 and with copy of the resolution passed in the Church Council & executive meeting for which I heartily thank you.

I am very glad to learn that Rev F Schulze is reaching Raigangpur on 9-2-32, where I am coming on 13-2-32. I shall stay there 2 or 3 days to consult with him and settle ~~many~~ things with him for the time being, till the much hoped for congregation meets at Raigangpur by the end of this month.

Most sincerely
yours

Bhm

D. I. Schools

Gangpur State

Received 12.2.32
Register No. 691
Date 10.2.32
File 24
Reply No.
Date

No. 656
1G-12-32

12/2/32

From

The Inspector of Schools, Chota Nagpur Division,

To

The Secretary, Lutheran Church Council, Ranchi.

Ranchi, the 10th February, 1932.

Sir,

In continuation of my letter No.394, dated the 31st January, 1932, I have the honour to say that I visited Govindpur on the 9th instant. The accounts in the boys' school were in such a condition as to make a true estimate of the financial condition of the school impossible. The balance in hand on January the 1st according to the cash book was Rs 317/5/-. Fees collected in January amounted to Rs.86/9/- plus Rs.125/10/- as games ~~fx~~ fees. Against this amount of income Rs.80/15/- had been disbursed to the teachers in the form of advances leaving a balance in hand of Rs. 448/11/-. The Headmaster could not tell me where this money was, but since the teachers are in arrears of pay since August last it is quite obvious that it ought to be disbursed to the teachers at once. I saw a recent entry in the cash book of a remittance of Rs.50/- to Ranchi. Why any school whose teachers are in arrears with their pay should spend Rs.-/8/- in remittting Rs.50/- to Ranchi I cannot understand. The whole condition of things at this school left a very unpleasant impression on me. A further illustration of apparent crookedness is that the disbursement of the teachers' pay for July actually took place on the 27th of November 1931 whereas it was declared in the application to the District Inspector of Schools for the Government grant to have taken place in September. This kind of thing cannot be tolerated and I have been obliged to instruct the District Inspector that no further grant is to be paid to this school till the financial position is cleared.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Your

Handwritten signature

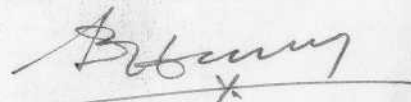
D.O. 861/32.
F. - 24.

6th. February, 32.

Dear Mr. Misra,

I have pleasure to inform you that the Church Council has accepted your suggestion for a representative gathering in Rajgangpur. I am sending you a copy of the Resolution of the Council which is self explanatory. I should be glad if you will kindly fix a date with Rev: F. Schulze and let me know the same at the earliest date possible. I would suggest that any date towards the end of the current month will suit us as well as other people who should get ample time to chose their representatives for the meeting. Rev: Mr. Schulze is due to reach Rajgangpur by the 9th. instant. Kindly make it a point to meet him if not ~~in~~ convenient to you.

Yours sincerely,



To,

Baboo Bairagi Misra B.A., D.E.I.,
Deputy Inspector of Schools,
Gangpur State .

Church Council

Received 6.2.32

Register No 675

Date... Manyawar Secretary Sahib ko mera yishusahar.

File... 24.6.32 Mere likhne ka matlab yah hai ki yahau

Reply No... Darwe men hamen ke Missim men Koi. M.E. School
Date... nahin hai; par kusal R.C. Missim men M.E. School hai.

Hamen ke Missim ke kitne bhai log garibi
halat ke Karan apne larkon ko bohardaga hamare
Missim ke M.E. School men ^{gahin} bhej sakti hain. We
apne larkon ko yahau ^{Waddi} ya Tongo R.C. Missim
ke M.E. School men rakhne chakti hain. Par apsoch
ki bat yah hui hai ki R.C. Missim wale ek to larkon
ke bat se ikrarnama chakti likhane chakti hain
ki larka R.C. Missim ka ang ho gawe, to we unko
apne schoolon men rakhna chakti hain, par bina
ikrarnama ke we rakhne nahin chakti hain. Main
janna chakti hun ki we aisa kar sakti hain wa
nahin Sarkari grant to un schoolon ke liye bhi diya
jata hai.

Phir yah bhi bat hui hai ki hamare
Missim ke kitne larke Sindaga R.C. Missim ke
M.E. School men parhate hain. Ek bar hamare
Missim ke larke "Good Friday" ke din men school
nahin gaye jiske Karan unko purbana dena
hua. To bhala yah kaisi bat hai? ki "R.C. Missim
wale "Good Friday" bhi nahin manate hain. In
bahr ko ab log hichar karke mugh ko hal dijiye ki
age ham log kaise kar sakti hain.

Age ch.

A. J. M.

Church Council

Received... 5.2.32

Register No... 671

Date... 5.2.32

File... 24

Reply No.....

Date.....

No. 292

Ranchi,
February 5, 1932.

The Church Council,
G. E. L. Church, Ranchi.

Sir,

I ~~being~~ beg to report that from the underquoted letter it appears that the Jashpur State is quite in favour of taking over our primary schools situated within the State but it wants that the authorities in charge of the schools should formally make ~~over~~ them over to it together with their buildings. Now, I should think that the authorities ought to be the Church Council which should formally transfer the schools to the State.

The Primary Schools situated withⁱⁿ the Jashpur State are :
1, Sarhapni, 2, Gulidih and Bipatpur. The State is prepared to take them over immediately from the beginning of this year.

Copy of the letter from the Superintendent of Jashpur to The Rev. M. Schiehe, dated 23. 1. 32.

" I have the honour to invite your attention to Rev. John's letter dated 3-2-31, paragraph 2, of which a copy is enclosed for your reference. In that connection, please read also this office letter No. 1120/28 dated 14-4-31, paragraph 3, of which a copy is also enclosed. We have now decided to take under State's control according to your request the schools at Sarhapni, Gulidih and Bipatpur this year immediately. I solicit your favour of ordering the authorities in charge of these schools of transferring the school buildings in these places and the school children to the State. On receipt of your reply I will send my staff to take charge of these schools.

" If the masters already in service of your Mission in those schools are willing to serve under us on our terms, I am prepared to absorb them provided they come up to our standard in efficiency. At present, we have got sanction for entertaining one master at Gulidih, one at Bipatpur and two at Sarhapni. We can give room only four of your Mission School masters."

Yours sincerely,



Head Supervisor
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council

Received... 5.2.32

Register No... 670

Date... 5.2.32

File... 24G. E. L. Church, Ranchi.

Reply No... Sir,

Date...

No. 293

~~5/2/32~~
Ranchi,
February 5, 1932.

I beg to report that the Karimati Ilaka sent away three teachers out of seven from the Karimati so called M. E. School and wants that the school be run as an M. E. School with only four teachers. In my opinion the school may be run with only 4 teachers but it cannot be conducted as an M. E. because the headmaster (the present one) is not an competent master. Babu Samuel Hemrom, former headmaster of the school resigned his teachership and his resignation was accepted by the Ilaka and so the school can never be an M. E. School with a headmaster who is only an undermastric.

I should, therefore, request the C. C. to advise me how the Karimati school ought to be conducted in future, whether an an M. E. or only as U. P.

The teachers were engaged by the Ilaka itself and so it may have some right to give leave to them if it finds it necessary.

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

OFFICE OF THE SECRETARY LUTHERAN CHURCH COUNCIL CHOTANAGPUR & ASSAM

-----oOo-----

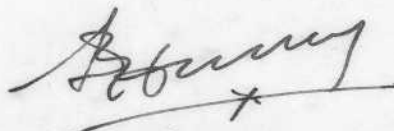
Read a letter No: 320E from Babu Bairagi Misra Deputy Inspector of Schools, Gangpur State, regarding certain irregularities and drawbacks in the conduct of the School affairs at Rajgangpur. The subject was considered and discussed in all its aspects including the running of the hostel and how to mend the existing abuses in the institutions. The suggestion of the Deputy Inspector to call a meeting of the representatives of the Christian Community and of the Church Council was found very helpful and it was -

Resolved : That in order to straighten out the difficulties and to remedy the grievances in the Rajgangpur School, a deputation should go to that station to meet the representatives of the local congregations and the State educational authorities, on such date towards the end of February as will be fixed by the Rev: F. Schulze in consultation with the Deputy Inspector of the Gangpur State and that due and timely notice of the same be given to the congregations for such a meeting.

Memo No. 858-59/32.
F. - 24.

Dated Ranchi, the 4th. February, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council Executive of the 3rd. February, 1932 forwarded to the Rev. F. Schulze, Ranchi
Babu. Bairagi, Misra, Gangpur State.
for information, guidance and compliance.


Secretary,
G. E. L. Church.

Church Council
 Received... 3.2.32
 Register No. 662
 Date... 2.2.32
 File... 24
 Reply No. 9
 Date... 30,

W. 129.

The Secretary, Lutheran
 Church Council, Ranchi.

Through,

The Head Supervisor,
 Lutheran Schools, Ranchi

Memo No. 243
 D/- 2. 2. 32.

Forwarded to the
 Secretary, C. C. Ranchi.

V. Sry

Head Supervisor,
 Lutheran Schools, Ranchi.

Dated Gumla, 11th 1st February 1932

Dear Sir,

Owing to the absence of Masihdas
 Chowkidar of Gumla Hata who had gone to his house towards
 Sonapur, it is too late indeed to submit his explanation
 of the report made by the Pastor Supervisor. On enquiry
 and their statements it is quite clear that the Pastor
 has done it falsely through his envy and malice. Their
 written statements can prove how far the matter is true
 or untrue. It is put up before you to your kind information
 and favourable disposal.

I have the honor to be,
 Sir,
 Your most obedient servant,
 Ignatius Lakas
 Headmaster.

मैं मसीहदास चौकीदार यह बरकरार करता हूँ कि
ता. 2 जनवरी 1932 को नयानिएल लक्का एक
बोतल दास लोके हेडमस्टर को दिया वह इसे पादरी
दाऊद बाबु को नहीं बहा है, और नयानिएल
लक्का उस रोज दास ला दिया जो लोके नहीं
बनलाया है। —



मसीहदास चौकीदार
गुमला हाता
31.1.32.

मैं नथानियल लकड़ा सच्चे मन से यह कबुल
करता हूँ कि मैं ता: २ जनवरी १९६२ साल में एक
रोतल दास ला के हेड मास्टर को दिया वह के
चौकिदार मही दास को कर्म नही कहा है उस
तारिख को ना मैं दास लाया ना लाने का बात
कहा है। यह बात का रीपोर्ट जो पादरी कौंसिल में
दिया है सो ईषा और डाह से भर कर मादमी
को गिराने के लिये यह करता है।

नथानियल लकड़ा वं: स:

उम्बर टोली।

ता: ३१-१-६२

Church Council
 Received 2.2.32
 To, Registrar No. 654
 Date 1.2.32
 File 24
 Through, The Secretary, Lutheran Church Council, Ranchi.
 Date

The Secretary, Lutheran Church Council, Ranchi.

The Head Supervisor Lutheran Schools, Ranchi.

Sir

Most humbly and respectfully I beg to lay before you a few following lines with reference to the letters nos. 1908, 28 5/10/12/31 and 5/1/1932 respectively and others also, for your kind and favourable consideration.

That the confiscation of books, only meant to discourage the boys from keeping the government proscribed books. Further you again write me to hand over the books to the boys which are never allowed in the schools. Some unprohibited books are with me the reason is this that they never came to me for their books. I have never told a lie neither before you ~~nor~~ before the fadri. I have told you that it may be possible that some books have not been given back, only, because they never appeared before me.

That the inconveniences and difficulties were duly shown in my petition to you 5/27/11/31 but no reply as yet except a reply sent to me as per letter no: 1908 5/10/12/1931 which gave me information of the complaints by the fadri. That regarding the letter no: 28 5/5/32 I beg to state that the petitioner realises himself his inconveniences and difficulties who has had the experience of them.

Further as regards the climates I beg to state that geographically and scientifically there appears difference in climate ^{of the different places} within the area of a square mile on a piece of earth's crust and other natural phenomena therefore there will certainly appear difference in climate at the distance of 30 miles that is, to say, the place which is at the distance of half the geographical degree. It is also known to all that the climate of a place may be favourable to the one but may not the same to the other on a piece of differences in the altitudes of different bodies. Regarding the diseases I never make false reports but it is the fact. The people of the whole mission compound are the witness and the body of my wife is itself a witness.

P. T. O.

I have been serving under you since about 7 years, I never showed you any signs of dis-obedience and other bad qualities but I am sorry, in Gumla, I am going to rule over the C.C. Know this sir, sure, that I am now the same as was six years before, I want to serve under the Church Council as served before. The C.C. gave me a promise in 1931 to take me back to the M.E. School, so I sent a memorandum to it, not an order.

Further you never gave me informations about the pecuniary difficulties except the information given by the Head Supervisor on 22-12-1931.

That as far as my poor opinion goes I am not a servant of the mission alone but I am the servant of the mission plus the government. Because if the mission fulfils the conditions of the government then only exists a school. And if she violates the rules and regulations then the government brings the school into non-existence. I therefore thought it better to give information to the next authority, the government. May I draw your kind attention to these articles of the government, viz, arts: 33, 34, 344 & 359 ^{sect. 325} and others also. These show that the government has full powers upon schools except a very few.

Further regarding the last letter to: 110 of this month I regret greatly to hear that the case is very serious. I am at the loss to understand how the case is very serious. The ^{the teachers} padri asked about taking money they said we don't know then he also asked the Headmaster he also said he does not know. The case may have been made serious by the headmaster or the higher authority the Church Council or the Head Supervisor himself. The charge is brought against from the back side. This kind of complain may never be made serious. This kind of charge and management has brought great evil to men.

As regards a strong hand like that of the Local pachi
I have the honour to state that on Sunday the 6th Dec. 31,
I was sent to Chaha to disallow the Julius party
to go into the church for service. I did not know that
the pachi has brought a charge against them into the
thana. I reached Chaha at about noon. When I reached
the village I saw a police outside and only 3 inmates
in the Church. I enquired about it and learnt that
a charge has been brought against the other party and
the S.I. P. is expected soon. I waited for him. When he
came, I took him to the church. He got into the church
and said to me, "Why have you come here?" I said to him,
"I came not to allow the Julius party to come inside the
church." He went on saying, "If they go inside it forcibly
what will you do them?" I said to him "I will do nothing."
He again said to me "Why do you disallow them to come in the
church?" I said to the S.I. P. "I do not know." I said this
because I did not know what charges ^(the pachi) he brought to the
thana against them. Again the police daroga said to me "
"Is it proper that the pachi should report to the thana and
he should lie down on his bed; Call for him". At these
words I said to him, "Had I known that the pachi has
brought a charge against them regarding religion I would
have not come. The daroga gave emphasis to the same
sentence and pointed out. This very sentence ~~produced~~ ^{and others}
also were against the will of the pachi. Further the pachi
thought that there is breach of peace. The Daroga
said to the pachi thrice "There is no breach of peace".
This very sentence kindled his anger. He could do
nothing to the Daroga or the police. He is therefore
tracing path for quarrels and enmity. He came to ~~the~~
his house with pale and smitten face.

P. J. O.

He was insulted by the thana with these words you bring false charges. The sun went to the west ^{and} when we all departed from the thana. When I came down the steps I said to a young man, Mikhael by name "Why do you tell lies to make the padri's evidence quite true".

It was dark and the clock struck ^{about} seven. The padri came to the mission quarter from his red bungalow with his lantern. The lantern was too strong to allow the padri to see me who was in my verandah. He called me by my name and said to me come to my house. He reached his quarter first and with his lantern in his hand went into the room, and called out to his sons "Paper, paper". By that time I reached his verandah. I am not sure whether he got a piece of paper or not but I know these following things which I write you for information and favourable consideration.

That he came out of his room after a few seconds with his lantern and seated himself on the long bench, lying on his verandah. He did not ask me to sit down as it is usual among us. I saw his countenance, posture and gesture that his anger was great. Had there been angels sent from heavens to extinguish his anger they would have easily failed to do it. He cried out with thundering voice "I sent you to see the matter not to fathom the knowledge". I said to him "Would you send me and the police as well. He again said "Why did you insult Mikhael. I said to him "Who will be responsible for not allowing me to attend the church service". He said to me "Your wife does not come to church". I said to ^{him} me for the last time "How many times have you come over to my house?". At this he said "Well, go and I came to my house. I came to my house but I had no mind to take meal only my conscience beat strongly. I kept the whole night awake only, thinking over the matter which took place at night. However the longest night passed away Monday came. Early in the morning before the sunrise I went to the padri to beg forgiveness for trespasses. The padri was sitting on his long bench lying where lay before.

True copy.

में। म गुना सुरेन उम कर्षक १५ वर्ष ५६ (सौ ८ लिखता हूं कि मुझ
को क (ग) पर्व रोज ता: ६-१२-१९३१ को पाई जाऊ दाअपकुल
ने बुलाया २॥ नित प्रकार मापु (को बारे १६ १६ दोष लालक
पुधा सो सहा सहा अ: (क: ११: २-१२-१९३२ ^{६६} जंशुवा सहे

True copy.

ਮੁ ਮ ਅਤ ਅਤੀ ਅਤੀ ਹਿਮ ਹਿਮ ਅਤੀ ਹਿਮ: 72-7339 ਅਤੀ ਅਤੀ
ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ
ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ ਅਤੀ

ਅਤੀ ਅਤੀ Sd Hellen Lata

8-12-1931.

I sat down by the side of the padri and prayerfully with very low voice spoke these words. Last night I troubled you by my words, please forgive me. The words delayed to come out of the mouth but the ^{eyes immediately} ~~tears~~ showed sorrow with tears. He may not know it but I and the Almighty God knows it. The padri did not say anything about forgiveness but said this much "I sent you there because those who were sent before you were immature". In this way he means to keep me under discipline as he is doing. Therefore he rules over the world by his cunningness. He manages his works in such a way that none can easily find faults with them. His tricks are all in all. Further it may be known to you that he has never forgiven me. In spite of forgiving and forgetting all the he-passes he has hoarded them for future and frequent uses as is usual. He is now trying his utmost to ruin me and bring me losses. The superior authority may bear in mind that his anger, grudge, revengefulness and other bad qualities are great. He always unnecessarily adopts a hole and corner policy for the prosecution of his malicious design. I know because he has brought charges against me. The charge may have reached you through the headmaster or the parents or guardians. But instead of these the charge is brought by the local padri himself. It is not only the charge but the judgement. This kind of treachery is ruining us all. This is a reminder and hope you would kindly investigate into the matter. He brings charges saying "Shanti Prakash does not take part in services". I say why does he not allot turns for services now-a-days. He has evil thoughts against me.

He compels me to cough his son on gratis. He is ^{indignant} ~~indifferent~~ then how should I go on with him in future regarding religious rites and ceremonies. I attach copies of evidences of witnesses here.

Regarding ^{money} ~~my~~ I beg to state that the monitors had the full responsibilities and I have no record of them. I attach the record of the monitors and keep vouchers and other receipts with me.

Under the above mentioned circumstances I pray that you would kindly discontinue to humiliate me on a/c of the local padri but give him instructions to walk as a padri and have a spirit of a padri, for which act of kindness I shall ever remain grateful to you.

Gumla. 19.1.1932

} I have the honour to be,
Your most obedient servant,
Shanti Prakash

Memo No.

Dated Ranchi, the 1st February, 1932.

The petition of the applicant shows how insubordinate the writer is. His matter has already been attended to and on account of his insubordination he has been asked to in the Gunla U. P. School. From January, 1932, he is no longer in the M. E. School staff and consequently he is no longer entitled to the provident fund provisions. The petition however is forwarded ~~to him~~ for the C. C.'s action.

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

True copies of accounts.

1. देर क (मेरु) के कामों का पत्र लाना का हिसाब १२३९
गरीब लड़कों को दान

नं०	आमदनी	मास	लक्ष	ता०
१	पत्रागाम -	१	— २०-६-३१	देमना कांसी
२	गन्धू -	६	— ३-२-३१	गमिस्ता कागाम - १॥ — १२-२-३१
३	पुस्तक सिद्ध -	१	— १६-२-३१	देमना कांसी (पे: ५) — ३८-२-३१
४	पुस्तक रोमो -	१	— १२-२-३१	अरवा गमिस्ता कागाम — १॥ — २२-२-३१
५	गाली लम्बा -	१॥	— ३-१०-३१	बलिमा वपेसिम - १॥ — १४-६-३१
६	अरवा दान -	६	— ६-१०-३१	

जमा. ११॥

जमा. ३॥

३॥

गरीब लड़कों

पुस्तक सिद्ध मोनिटर को

दिया

२-१०-३१

मोनिटर का लक्ष

सद. प्रकाश गारा ०-१२-१२३९

सद. अर. लिखा दाल अरु

2.

नं०	आमदनी	मास	लक्ष	ता०
१	पत्रागाम -	१॥	६-१०-३१	११२॥ को सिद्धा १२-१०-३१
२	अरवा दान -	१॥	२-१०-३१	१. बलिमा - १॥ — ६-१०-३१
३	हरे लक्ष -	१॥	६-१०-३१	२. अरवा - १॥ — ६-१०-३१
४	पत्रागाम -	१॥	६-१०-३१	३. अरवा - १॥ — ६-१०-३१

११॥

११॥

अरवा दान

मोनिटर मोरु कुरु

०-१२-३१

हिसाब मोरु के लो न लक्ष

०

Church Council

Received.. 27.6.32

Register No. 643

Date..... 27.1.32 The Church Council,
G. L. Church, Ranchi.

File..... 24

Re No..... Sir,

Date.....

No. 223

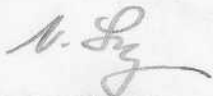
27/1/32 Ranchi.
January 27, 1932.

In continuation of this office No. 214 dated 26-1-32 I beg to report that there may not be further delay I have given notice also to the three teachers, namely, Babu Yakub Lakra of Lohardaga, Babu Samuel Minz of Kinkel M. E. and Babu Joel Hemrom of the Burju M. E. in anticipation of your approval that their work in their M. E. schools ceases temporarily for a year with effect from the 1st of February and they are transferred to the mandli work of their work. Their headquarters will remain where they are now and from those places they will have to go ~~about~~ about in their Ilaka to rouse the people in the congregation ~~that~~ to contribute more for the Church. Wherever they may be whether in the school or in the mandli work their salaries have to be paid to them from the mandli amdan from the 1st of January, 1932. I hope that you will agree to this and approve of my action, for, I do not wish that they should be thrown away without any job when they have served the Church faithfully for so many years.

Yours sincerely,

P.S.

The Ilaka chairmen of their Ilaka have all been request to arrange with them as to how they should proceed in their work ~~in~~.


Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Journal L.A.P.

Church Council
Received 30.1.31
Register No. 652

16/1/1932.

16.1.32

बुधवार मिरन गुमला यू.पी. स्कूल टिचर्स एसोसिएशन की पहली बैठकी 16/1/1932 को हुई। सभापति मान्यवर सचिव - इन्सपेक्टर चोन्हासलकड़ा आसनपर विराजे और इस प्रकार का संकल्प किया गया।

निधमावली

1. इस स्कूल में द्विगुण काम दिखाई देता है
(अ) स्कूल सम्बन्धी नाना प्रकार का विषय।
(ब) आर्थिक अवस्था - इसी कारण गुरु सेंटर्स में शामिल होने में असुविधा होती है।
2. मान्यवर हेड मास्टर इगनातियुसलकड़ा आम्बिका के काम के और बैठकियों का दि के बुलाने के लिये सेक्रेटरी चुने गये
3. माहवारी टिचर्स मीटिंग, बैठे और जब जरूरत हो तो केरी बुला सकते हैं।

१ स्कूल सम्बन्धी

मिस्टर एच० डी० डी० इन्सपेक्टर अब स्कूल्स, दोरानागपुर की पहली श्रेणी की पहली पढ़ाई के कार्यक्रम के बारे में बातचीत और उसी के अनुसार उस श्रेणी में पढ़ाई प्रारम्भ होने का संकल्प किया गया अर्थात् बहुत ही प्रिय शब्दों का प्रयोग करने हुए अचर की पहचान करना चाहिए।

2. आर्थिक विषयक:

1. १.१.१८३२ की मेनेजिङ्ग कमिटी की बैठकी में यह संकल्प किया गया कि स्कूल के मास्टर बिल्कुल स्कूल फीस और ग्रांट पर निर्भर रहे जब तक कि 'गुमला ग्राम सभा' की बैठकी न हो और जिस ग्राम सभा की बैठकी की तारीख की निश्चयता भी नहीं की गयी।
2. गुमला यू.पी. लड़का स्कूल के ६ शिक्षकों को सेप्टेम्बर महीने से तलब नहीं मिली है। बीते साल १८३१ के चार महीनों का अर्थात् सेप्टेम्बर, ओक्टूबर, नोवेंबर और दिसम्बर का ग्रांट १२०) रु० आया है, सोही १२०) रु० शिक्षकों को मिल जाना चाहिए। संकल्प यह भी हुआ कि सेक्रेटरी महोदय इसे सुपर वेंजर के पास अपनी पेश करें कि कम से कम १२०) रु० ग्रांट भी अपनी शिक्षकों को मिलाने
3. १८३२ साल के लिये शिक्षकों की तलब के बारे में यह कहा गया है कि शिक्षक ग्रांट और स्कूल फीस से गुजारा चलाने।

हिसाब लगाकर देखने से पता लगता है कि गान्धे और क्रिश्चियान जोड़ के बल ३० रु + १५ रु = ४५ रु. होता है जिसको यदि ५ शिक्षक बांटे तो औसत ४५ रु ÷ ५ = ९ रु. होता है

४. इस स्कूल के कुल ५ शिक्षकों को तब का खर्च १०० रु. है ऊपर के १२ परि. अनुसार १०० रु - ४५ रु = ५५ रु. की घटती होती है।

ऊपर जो चिन्ता या ग्राह है कि प्रत्येक शिक्षक को औसत ९ रु. मिलेगा इस ९ रु. से अधिकांश शिक्षकों को अपना साधारण माहवारी गुजारा चलाना बिलकुल अनहोना है। इस कारण "टिचर्स एसोसिएशन" मेने जिहु, कमिटी से अजी करती है कि वह जल्द इसी महीने के भीतर "गुमला अम सभा" को बुलावे।

sd/ Ignatius Lakra
sd/ Shanti Prakash Bakshi
sd/ Kauran Khess.
sd/ Premprakash Khyen
sd/ Gurau Nasri Sar.

Approved.
sd/ Chon has Lakra
President
16/1/1932.

Memo no. 7g (L)

Forwarded to the Secretary, Lutheran S. P. Managing
committee, Guwla, for information.

Ignatius Lakra
Secretary.
18/1/32.

Church Council

Received... 27.1.32

Register No. 642

The Church Council

G. E. L. Church, Ranchi.

File No. 24

Sir, Reply No.

Date.....

No. 224

fil

Rec.

27/1/32

Ranchi.

January 27, 1932.

841-43/32

Complying with your memo No. ----- dated 23.1.32

F.- 48

I beg to submit herewith a list of teachers in our schools under my supervision to gether with their qualifications and length of service

The qualifications and length of service of the teachers in Gangpur State are not fully given for some of them have been newly engaged and so those from them have not yet been collected.

Yours sincerely,

N. Singh

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

List of teachers in schools under the Head Supervisor with their qualifications and length of service.

M. E. Schools.

School	Name of teachers	Qualification	Serv	Pay.
Burju	1. Mr. B. Mundu	B. Sc.	7 yrs	70
	2. , A. Here	I.A. fd.	13 ..	42
	3. , J. Kendir	Matr. C.T.	3 ..	30
	4. , J. Henrom	V. M.	17 ..	28
	5. , K. Perti	V.M.C.T.	9 ..	22
	6. , Ph. Perti	V.M.C.T.	8 ..	22
	7. , M. Tiru	M.V.E.T.	16 ..	15
	8. , Th. Tepene	M.V.E.T.	16 ..	15
	9. , P. Guria	M.V.G.T.	1 ..	15
Gevindpur	1. , I. Teppe	I.A. L.T.	16 ..	80
	2. , M. Mundu	Matr Tr.	14 ..	40
	3. , J. Here	Mat. C. T.	8 ..	30
	4. , P. Kerketa	V.M. C.T.	15 ..	30
	5. , M.P. Tiru	V.M.C.T.	5 ..	30
	6. , M. Tepene	C. T.	5 ..	30
	7. , N. Mundu	Candidate	5 1/2 ..	22/8
	8. , P. Kengari	M.V.E.T.	18 ..	18
	9. , M. Lakra	M.V.E.T.	19 ..	16
	10. , Sam Barla	M.V.E.T.	16 ..	15
	11. , S. Tepene	M.V.E.T.	16 ..	15
Kinkel	1. , P. Dondung	I. A.	6 ..	52
	2. , S. Minz	Matr.C.T.	13 ..	35
	3. , B. Surin	Matr.C.T.	5 ..	30
	4. , J. Kujur	V.M.C.T.	19 ..	28
	5. , D. Teppe	M.V.C.T.	9 ..	22
	6. , D. Lugun	M.V.E.T.	22 ..	17
	7. , A. Kujur	M.V.E.T.	10 ..	15
	8. , C.H. Henrom	M.V.E.T.	10 ..	15
Koronjo	1. , N. Tepene	I.A.	6 ..	55
	2. , Y. Bage	I.A. fd	11 ..	40
	3. , G. Minz	Matr.C.T.	15 ..	35
	4. , J. Tepene	Matr.C.T.	6 ..	30
	5. , S. Minz	W.M.	11 ..	24
	6. , E. Aind	V.M.E.T.	10 ..	30
	7. , Ph. Bage	M.V.E.T.	20 ..	15/8
	8. , P. Tepene	M.V.E.T.	17 ..	15
	9. , M. Henrom	Candidate	1 ..	25
Lohardaga	1. , CH. Herenz	I.A.	4 ..	50
	2. , H. Kujur	Matr	26 ..	40
	3. , C.B. Minz	C.T.	6 ..	30
	4. , Dh. Lakra	C.T.	6 ..	30
	5. , Hanukh Teppe	V.M.C.T.	14 ..	30
	6. , Y. Lakra	Cl. XII	33 ..	30
	7. , N. Kujur	M.V.M.C.T.	11 ..	24
	8. , I. Khalkho	Cl XII	11 ..	20
	9. , P. Baba	M.V.E.T.	1 ..	15
	10. ,			
Takarna	1. , J.J.P. Tiga	B.D.	3 ..	60
	2. , M. Bhengra	Matr.C.T.	8 ..	30
	3. , N. Tuti	Matr.C.T.	7 ..	30
	4. , J. Dhen	Matr. C.T.	5 ..	30
	5. , S. Bage	Candidate	4 ..	22/8
	6. , D. Minz	V.M.	15 ..	28
	7. , J. Guria	V.M.	8 ..	22
	8. , P. Surin	M.V.E.T.	5 ..	15
	9. , J. Kirt	M.V.E.T.	3 ..	15
	10. , M. Surin	M.V.E.T.	2 ..	15

Primary Schools.

School	Name of teachers	Qualification	Service	Pay
Gumla	1. Babu I. Lakra	Matr	24 yrs	30
	2. .. S.P. Bekhla	Matr.C.T.	6 ..	30
	3. .. N. Khess	M.V.E.T.	20 ..	15
	4. .. P. Nasri	M.V.E.T.	2 1/2 ..	8
	5. .. P. Kujur	M.V.E.T.	8 ..	12
	6. Miss Ch. Minz	M.E.	1 ..	8
Kendra	1. Babu M. Kujur	Matr. C.T.	8 ..	30
	2. .. N. Toppe	M.V.E.T.	15 ..	12
	3. .. E. Toppe	U.P.E.T.	20 ..	10
Chainpur	1. .. H. Toppe	Matr. C.T.	9 ..	30
	2. .. S. Lakra	M.V.E.T.	19 ..	12
	3. Miss M. Toppe	U. P.	2 ..	9
Amlesa	1. Babu N. Bhengra	Cl. X	27 ..	15
	2. .. P. Purti	M.V.E.T.	19 ..	13/4
Tokad	1. .. J. Heranz	Matr.C.T.	7 ..	30
	2. .. Y. Mundu	M.V.E.T.	4 ..	12
	3. .. I. Topone	M.V.E.T.	6 ..	12
Tatangha	1. .. N. Kandula	M. E.	2 ..	8

Teachers of other schools in Tokad Ilka are paid by the Singbh D.B.

Purulia	1. .. S.K. Sendil	Cl XII Tr	9 months	30
	2. .. Malachi Arohan	Cl VIII	2 yrs	12
	3. .. S. Sekh	U.P.E.T.	17 ..	9
Rudra	1. .. S.K. Punoria	Cl X	6 ..	12

Chaibassa... The teachers of Chaibassa school are paid by the Ilaka

Karimati	1. Babu S. Hemrom	I.A.	3 yrs	40
	2. .. D. M. Guria	Cl XI	5 ..	20
	3. .. M.P. Tirki	V. M.	28 ..	20
	4. .. A. Aind	Cl X Tr.	9 ..	15
	5. .. P. Jojo	Cl VIII IX	5 ..	13
	6. .. S. Kerketa	M.E.Tr.	18 ..	10
	7. .. S. Kandulna	U. P.	11 ..	8

Teachers of other schools of the Ilaka are paid by the Ilaka plus a small grant paid by the C. C.

Rajgangpur	1. Babu Pr. Tiru			15
	2. .. Urbanus Lakra	Cl XI		15
	3. .. Malachi Toppe			10 8
	4. .. S. Topone	M.V.E.T.		10

Other teachers are paid by the State

Jarakudar	1. .. M. D. Lakra	Cand		22/8
	2. .. Chr. Hore	M.V.E.T.	18 yrs	8
	3. .. Masihcharan			10
	4. .. Biranjharie	L. P.	12 yrs	12

Other teachers of the Jarakudar Ilaka receive only a part of the grant sent to the Ilaka

N. G. S.

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

27.1.32

Church Council

Received... 27.1.32

Register No. 641

Date... 27.1.32

The Church Council,
C. E. L. Church, Ranchi.

Reply No. 24

Date... Sir,

No. 214

27/1/32

Ranchi.

January 26, 1932.

I beg to report that because of the low roll number in our M. E. Schools it has been found necessary to reduce the number in the M. E. Staff. Consequently I propose to transfer the following teachers from their school work to that in the Ilaka. Wherever the teachers may be, whether in the schools or in the Ilaka work, the Ilakas are to pay them out of their Ilaka income because I don not wish that they who have served the Church for so many years be thrown away without any work. I have consulted the teachers and the Ilaka chairmen about this and they all agreed to this. These teachers who have thus been transferred from the school work will work in their Ilakas, visit all the pracharakpans, and rouse the congregations to raise more income among themselves wherewith to pay the Church workers, teachers and padris and pracharaks, their proper salaries. The teachers proposed to be transferred are the following :-

1. From the Keronje M. E. Candid. Mansidh Hemrom.
2. .. Takarna Samuel Bage
3. .. Govindpur Nathaniel Mundu
4. .. Kinkel Babu Samuel Minz. (—)
5. .. Lohardaga Yakub Lakra (Push)
6. .. Burju Joel Hemrom. —————X

In anticipation of your final approval I have given notice to the 1st three teachers that with effect from the 1st of February their work will not be in their schools but it will be in their Ilakas. I am now waiting to get your approval in the case of the last three three teachers and I request you to inform me your decision soon that notice from this office may go out to them in the right time.

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council
 Received... 26.1.32
 Register No. 640
 Date... 26.1.32
 File... 24
 Reply No.....
 Date.....

The number of teachers will be reduced by one from the 1st of February, 1932.

Inspection remarks on the Lutheran M. E. School at Koronje, 1. 32. by the Divisional Inspector of Schools.

I inspected this school on the 16th January, 1932, There are seven classes and nine teachers including the Bible teacher. The roll number is as follows :-

<u>Class.</u>	<u>Number.</u>
I	10
II	8
III	6
IV	28
V	30
VI	12
VII	16

Total 110

The Church Council is trying to get some loan to pay the teachers up to December, 1931. During last December the C.C. expected to get remittance from Germany but owing to financial crisis there no remittance was received. The Llyed Bank of Calcutta was at first approached for a loan but the Bank refused to give any loan. Now the C.C. is trying to get some loan from the Chotanagpur Bank to which application has been sent. As soon as the loan will be received the teachers' dues up to 31.12.31 will be paid to them. The loan will be paid back to the Bank by the Berlin Mission Board. From the 1st of January, 1932, the schools will be financed by the respective Ilakas under the supervision of the C.C. whose agent will be the Hd supervisor as it is now.

The average monthly collection of fees seems to be about Rs 32/- and the Government grant is Rs 88/-, making a total of Rs 120/-. The pay of the teachers amounts to Rs 269-8-0 per month. In the past the General Council of the Lutheran Church seems to have met the deficit to the extent of some Rs 150/- per month. For many months now the Church has been unable to do this with the result that the teachers in this school received their pay for July on the 21st of December and have not officially received any pay since. They seem to manage somehow by dividing the small income from fees amongst themselves and refunding this when they receive their pay. Building fund, library fund, prize fund, athletic fund and examination fund have all been placed under contribution for general school purposes so that the balance in the post office which ought to be somewhere about Rs 340/- is actually Rs 77/-. This state of things cannot go on. I had discussed the financial crisis with the members of the Advisory Body of the Church Council in connection with another school and hoped that some decision would have been reached by this time, but a

The Mission land and Bungalow near the English Club, where the Accountant General has his quarters at present has been pointed out to the Chotanagpur Bank for the loan as security and it is hoped that the Bank will pay the loan to C.C. and as soon as it is received the teachers' salaries will be paid to them.

The Hd Supervisor visited Keronje on the 21st & 22nd instant when he gave consolation to the teachers and ~~keys~~ that the C.C. will soon send to them their salaries and thus encouraged them to work for their school faithfully with having interest in it, for, they are working for the good of their own country.

time, but apparently nothing at all has been done and the schools are being carried on at the expense of the teachers. The Govindpur Elementary Training School has recently been closed which ought to set free some fund to relieve the situation in the Middle Schools. I must ask the Church Council for immediate decision on the matter. The work of the school is most undoubtedly suffering. I found the boys here dull and apparently under a great cloud of depression, and I attribute this very largely to the hopeless outlook of the teachers. I note also that the Head Supervisor of the Lutheran Mission has not paid a visit to the school at all in the year 1930.

Sd. H. Dippie,

Offg Inspector of Schools,
Chotanagpur Division.

Memo No.

Dated Ranchi, the 26th January, 1932.

Copy with marginal notes of the undersigned is submitted to the Inspector of Schools, Chotanagpur Division, Ranchi.

N. Gray

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 26th January, 1932.

Copy submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi, for information.

N. Gray

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 195

Copy submitted to the Church Council, Ranchi for information.

N. G. G.

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 26th January, 1932.

Copy forwarded to the Headmaster, M. E. School, Kerenje,
for information and guidance.

N. G. G.

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

26/1/32

श्रीमान् सेक्रेटरी, लुथेरान चर्च कौन्सिल, छोटा नागपुर और भासाम
रांची।

ता. 21 बी. जनवरी 1932 ई.

महाभाज्यवर महाशय!

मैं आप के कमल चरण पर निहायत ही
दौन ता पूर्वक निम्नांकित कारण सहित अपना दुःख तकलीफ तथा
कुहाल सुनाता हूँ और बहुत ही उम्मीद सहित आशा रखता हूँ
कि महाशय बहुत गूढ़ तथा गहिरा बिचार कर प्रार्थी का दुःख
और तकलीफ मानसिक और भौतिक रीति से समझ कर
निश्चय उद्धारार्थ ग्रहण करने की कृपा करेंगे।

१, महाशय, मैं गोबिन्दपुर ट्रेनिङ्ग स्कूल में सेक्रेटरी
परिडत का काम करता था। सरकार को और से उक्त ट्रेनिङ्ग
स्कूल उठा दिया गया। सो वहां दोनों परिडतों को नौकरी
भी साथ में बन्द हो गई। उन दोनों में मैं जो हूँ सो अपनी
मरडली का व्यक्तित्व तथा झुंझूँ। जी भी इस समय मरडली को
कुहालत तथा दुर्गति है एवं शोचनीय है ती भी अन्य शिक्षक
गणों को नौकरी जैसे वैसे बनो हो रहे हैं, पर मैं बिन रखवाले
भेड़ की नाई छोड़ दिया गया, मेरी मुर्छ को और किसी का
ध्यान नहीं हो रहा है यहां तक कि मेरा शिक्षारित करने
बाला कोई नहीं है सो मुझ दुखिया का कीन उपाय कर देंगे।
मैंने डेड सुपर बैजर से रो रो के अनर्जी दोहाई को कि मेरे
लिये कहीं कोई तरह से जगह दीजिये अनर्था कहीं नौकरी
का बन्दोबस्त कर दीजिये, पर वे मेरे लिये सन्देह युक्त जबाब
देते तथा अपनी दुर्बलता प्रगट करते गये, अभी तक उन्होने
कोई दिलीला का हल नही लिखे हैं न लिखते हैं। इस लिये
लाचार वश हो मुझे चर्च कौन्सिल में अपना दुःख सुनाना पड़ा है।
सो मैं जो चर्च कौन्सिल का नौकर था और हूँ और मरडली

का एक भङ्ग भी हूँ आश्रित हो अपना दुःख तथा अपनी सुनाता हूँ कि
महाशय मुझ दुखिया के साथ सम दुखी तथा समझी हो कर मेरे
उद्धारार्थ तथा मरडली को भी भलाई निमित्त इस दीन बिनती पर
अनन्य उचित विचार करेंगे।

मैं नीचे अपना दुःख तथा तकलीफ को घर देता हूँ, कृपया
महाशय सहानुभूति तथा सदय हृदय से समझने का प्रयत्न करेंगे।

2, मैं चैनपुर इलाके का एक ही व्यक्ति हूँ जो ब्रिद्धा के इस
दर्जे तक पहुँच कर अपने मिसन क्षेत्र में काम करता था, अर्थात् मैंने
१९२१ ई० में V.M. पास किया और करीब आठ वर्ष मिसन
स्कूलों में काम किया और बीते दो वर्ष जो बिनदपुर ट्रेनिंग स्कूल
में काम किया। उसी समय १९३१ ई० में C.T. पास भी किया।
मैंने P.P. M. & तथा D.T. स्कूल में काम किया पर नहीं मेरे
नाम में गलती नहीं पायी गई न कहीं बदनाम हुआ है।

खूद और बरव मैं लुचैरान भाई लोग ब्रिद्धा में बहुत घिरे
पड़े हुए हैं। स्कूल का नाम लेते ही नीकरी पर ध्यान देते हैं
तथा नीकरी करने वालों को नीकरी बन्द होने तथा ब्रिद्धियों
को नीकरी न मिलने से लड़कों को सिखाने से ठोकर खाते हैं।
मेरी हृदन देख सुन कर सिखाने तथा सिखाने वाले निरुत्साह
हो जाते हैं इस से यहां ब्रिद्धा को और बदनाम हो जाता है।
मैं ही अथवा अन्य ब्रिद्धितो लोग जो भाईयों को चलाने और
समझाने वाले हैं, ब्रिद्धा का कुल्लव दिखाते हैं से देश तथा
मरडली को भलाई निमित्त उपाय से करें, मूर्खों को नमूना चारिभे।

3, चैनपुर स्कूल जो मेरे निज इलाके का एक ही
नादान सा P.P. स्कूल है कितना ^{पछे} और तथा कुमकल्या में है।
मैं सारे दिवस तथा अन्तः करण खोल कर कहता हूँ कि मैं इसे
देख कर हृदय सघी आंख से आंसू बहाता हूँ। क्योंकि मैं
मरडली के चारों दिशा के इलाके के स्कूलों में काम करते घूमते
देखते तथा ब्रिद्धा का प्रचार एवं प्रबन्ध पर ध्यान देते आया
हूँ। सो चैनपुर में ऐसा प्रबन्ध तथा चाट का प्रचार करना
मेरे आभाष से नहीं बनता है क्योंकि मुझे अपने इलाके
P.T. 6.

मे नीकरी कीन कालन मे मिलेगी कि मेरी इच्छा तथा चाह जो
V.m. प्राप्त करते जल्दी है कि अपने इलाके को बिट्ठा को लीर
ले चलें से पूरी होगी। मुझे चारों दिशा घूमते दिन बीत रहा है
तो इच्छा तथा उपाय का काम देगा, पर मन ही मन घूम रहा है
है। घमण्ड से कहता हूँ कि चैनपुर इलाके का अन्य विद्वित जन
मेरे ऐसा विद्वान् प्रकार तथा प्रकल्प का ही जानता होगा।

४, आज अपने निज घर को हालत कहता हूँ कि
मे एक गरीब गृहस्थ आलस का हूँ। खेत टांड गांध भर में सब से
काम तथा सब के सब चीरा हो चीरा है। इस साल बरखा पानी
के छोखे से पैदा का ठिकाना नहीं है। खाने वाले कुछ छोटे बड़े
२७ प्राणों है एक ही में रहते हैं। ^{कुल} प्रायः दो लाना चीरा दोन है।

५, फिर नया तथा आगपुरी में रुझा पैसा उधार
पैचा किया गया, यह एक मंमट ला खड़ा हुआ।

६, इस साल मेरी एक बहिन को शादी है यह
भी अच्छे बढाने वाला काम है।

७, मेरा तलक ५ महीने का मिला है नहीं रहा है
नीकरी छुट गई तो तलक भी साथ हो व साथ दे के बिदा
करना या लीर है सो भी क्यों नहीं मिलता है। तलक पांच २
महीने उधार पैचा खाये है सो बीसे काम चलेगा।

८, १८३२ के दिखम्बर महीना लास प्राप्त लाया
खेत का आमीन खर्चा देता पड़ेगा। सो सब मंमट एक ही
समय ला घेरा है। इतना से नितना तकलीफ होगी।

इस प्रकार तकलीफ समय में मुझे बित रखवाते भेड़ के
समान छोड़ दिये तो कीन मुचि लेगा किह आचार को पकड़े।
मैं सोरे दिव से आजी करता हूँ कि इस समय यदि नीकिल
मेरी मुचि न लेगी तो मेरी आत्मिक लीर नीकिल दोनों
में बुरी हो दशा होगी। इस का जबाब कृपम जल्द मिले, इसी में
मैं नेक मनाऊंगा।

आप का आशीर्वाद देव के
Christochit Kijur
Vill. Angaon
P.O. Chaurpur
Ranchi.

No. 320 E.

\$H 22/1/32

From

Church Council
Received 25.1.32
Register No. 629
Date 21.1.32
File 24
Reply No.
Date

Baboo Bairagi Mishra B.A. D.E.L.

Deputy Inspector of Schools,
Gangpur State

To

P. Hurad Esquire

Secretary G.E.L. Mission
Church road Ranchi

Dated, Sundergarh, the 21st January '32

Sir,

I have the honour to draw your kind attention to the following situation of the Lutheran Education in Gangpur for favour of your kind Consideration and immediate steps:-

(i) Rajgangpur Middle School constitutes the Centre of all Lutheran Education in Gangpur like Gaibira for Romans. It made such rapid progress at first as made people think that it would be the first middle School in the State. But the condition of Rajgangpur School, the only hope for Lutheran children, is awfully serious and worse than you can imagine or I can put in black and white.

(ii) The condition of the other Lutheran mission primary schools in the interior is correspondingly bad.

(iii) The Romans who followed your example and

begin late have made such steady progress
in organizing their education and attracting
State aids, in ^{such} a proportion to the detriment of
your people in Gangpur, as may astonish
any observer. you may understand the
present situation if you happen to be here
for a few days.

(iv) The following may be cited as reasons
for the present head situation of Education
of your Children, as compared with the
Romans :-

(a) Lack of touch with the State administration
which means loss of State Aids.

(b) Absence of a german Missionary
(who as a race are generally
sensible & judicious people) or
any other head with authority to
Control Common folk and consequent
lack of discipline.

(c) Absence of a strait-forward,
just & good souled Padri of the
type of Johan Bhugra, sincerely
devoted to the true interest of
millions, may be said to be the
root- Cause of the damage of all
your schools in Gangpur, because
the Padri at Rajgangpur may be
said to be the right-hand of
the Head Missionary there.

(d) Consequent appearance of some misguided, little minded & selfish people who, for their mean self interest, would be ready to cut throats of the entire Lutheran children in Gangpur, and the most sorrowful aspect of the situation is that your Mission authorities who have now ceased to keep any connection with State administration, have allowed them free scope in their dreadful suicidal occupation.

(v) I am anxiously awaiting the arrival of the new Missionary F. Schulze Esquire who is expected at Rajgangpur early in February next.

(vi) Indeed I hope much good from him for your Community but the situation is so bad that it is high time to hold a representative Congregation at Rajgangpur as early as possible consisting of the following people:-

(a) Representatives of the Lutheran Christians of the whole of Gangpur.

(b) A good number of the responsible people of your Mission head quarters at Ranchi like your good self, Nirmol Roy Esquire, and if possible some good Germans working amongst

you for the good of the Mission people.

(c) Some good Padres like Johan Bhingra and if possible Johan Bhingra himself, who had good experience of the Rajgampur locality.

(vii) The sooner the said representative Congregation is arranged the better for your people in Gangpur, who, I assert, are now in grave danger. I hope to acquaint you with the particulars of the situation when we meet. I request you to kindly arrange it and inform me the date as soon as practicable.

In fine I request you to believe that I continue to be the sincere well-wisher of your community holding the sacred trust of millions of Gangpur Children including Lutherans. Being a staunch believer in the strength of truth I am now very anxious to meet you the heads of your Mission at Ranchi for the good of the helpless Lutheran children of Gangpur.

Thanking you in anticipation of a prompt reply.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant-
D.M.
D.F. of Schools.

True copy.

No. 844/32.
F.-24.

Lutheran Compound, Ranchi.

Date 25th. January, 1932.

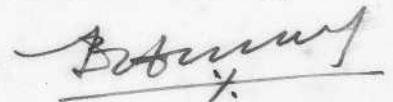
To,

Bairagi Misra, Esq.,
Deputy Inspectors of Schools
Gangpur State,
Sundargarh.

Dear Sir,

Received your letter No. 320E of date 21 January, 1932
on the subject of the situation of the Rajgangpur mission schools.
The same will be placed before the Council (Executive) and the
result communicated to you in due course.

Yours sincerely,



Secretary.

Church Council
Received... 25.1.32
Register No... 636
Date... 25.1.32
File... 24.
Reply No.....
Date.....

Memo No. 176

25/1/32

Office of the Head Supervisor, Lutheran Schools, Ranchi.

Dated Ranchi, the 25th January, 1932.

The undermentioned document is forwarded to the Church Council, for information with the request that immediate means and ways be expedited to pay the teachers' salaries of our schools that before the grant for the 1st quarter is received by us they may be paid out to the teachers up to 31-3-32 or the Govt may withhold the grant.



Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Copy of letter No. 169/1B-3-1932, dated 16.1.32, from the District Inspector of Schools, Ranchi.

" I have the honour to state that it appears from the monthly abstract accounts " Form C " that the teachers of the schools have been paid their salaries up to the month of July, 1931. As it is one of the conditions in the memorandum sanctioning the grant-in-aid that the teachers should be paid their salaries for any month on the 1st day of the following month, I request you to see that the teachers are paid their salaries up to date. It may also be noted that the grant-in-aid bills of M. E. schools under your control for the 1st quarter of 1932-33, will not be passed by this office until the teachers are paid their salaries up to 31-3-32."

Church
 Received 22.1.32
 Register No. 628
 Date 18.1.32
 File 24.
 Reply No.
 Date To,

mob g

The Secretary,
 Lutheran Church Council,
 Ranchi.

Memo No. 164 Through,
 d/- 18.1.32.

The Head Supervisor,
 Lutheran Schools, Ranchi

Forwarded to the
 Secy. C.C. This is
 only tit for tat.
 Why the petitioner
 did not inform the
 matters against the
 padri in time.

Dated Guwla, the 16th January 1932.

V. S. S.
 Hd Supr.
 Luth. Schools,
 Ranchi.

Dear Sir,

Having come to know that the Pastor
 Supervisor, Guwla, has reported against me as regards
 conduct and unfitness for the duty, I thought better
 to inform you some serious matters against him which
 are as follow :- (Talk among the teachers).

1. That regarding school and mission, I told the fellow
 teachers why the Padri is going to have the mission
 ground, Chaitu mokhtear has offered two plots of
 land, one plot in which the Padri has built his
 houses and the other plot back to the line in which
 I was living, as a donation to the mission, written
 on 26.6.1906 as a donation lease which I have seen
 with my own eyes. I have taken a true copy of it as
 it was in old and torn state. The Padri has taken them
 both and hidden them and did not show them to
 the Church Council Members when they had come
 to Guwla for enquiry. (cause of report)
- 2 That in the month of December '31, my mother-in-law

at Darutoli, was seriously ill for 15 days and so it was my duty as I am being ordered by Padri to look after the sick, I went to my mother-in-law's house for 15 days continuously, gave medicine, and handed over her to the Lord in prayer, the Padri seeing this was enraged with me thinking that I am belonging to the Uddhar Sauch.

3. That the Padri thought that I am belonging to the Uddhar Sauch and am not helping him in the church matter and bringing the people of the Uddhar Sauch into ours, is quite untrue. In the New Year's day the Uddhar Sauch tried to seize the church at Gumla, I beg to say I was the person that I stopped them from doing so. The fellow teachers as well as I tried our best to bring the people of the Uddhar Sauch to ours for 2 or 3 months but I regret to say that we could not. The Padri now thinks no bent to the Uddhar Sauch.

4. That the Padri is making me unfit for the work bestowed on me, I beg to say that whatever I did or am doing to the school, is satisfactory to the Government Inspecting Officers, as it is seen in the visitors' book and the school made a good progress during these 4 years since I joined the duty; moreover two candidates won the U. P. scholarships and the roll has

become double up to the time. The Padri has confessed before me, a week ago, that I am one of the best teachers in the Lutheran Schools and now he makes me unfit through his envy. From 1930 to 1931 i.e. for 2 years, I beg to say that by the Grace of the Lord, I was not a single day absent from the duty.

5. That the Padri is ordering me to take 800 Transfer Certificate Fee from the pupils but I lay some objection as in the Education code it is written that no T.C. fees should be taken from the pupils (section 233 note 1). Mr Juel Singh, Dy. Inspector of Schools, once forbade me to take T.C. fees from the pupils which I did. But now again the Padri forced me to do so. He is not responsible for it but I. Now he thinks that I am disobedient and reports against me.

6. That he reports against me a matter for a long time, I also inform you that in the beginning of November 1929, when the U.P. Examination was at hand, he sent for his son Dan Kuyar and Dorea Ekka, Revd Luther Balu's daughter in his office and dictated them the questions and thus they passed the Examination, which is a very serious matter and I think he is doing the same up to the time, the result of which is, one of his sons has come to the Matric Standard.

7. That during the four years, since I joined the duty, the Padri had come into the school only for four or five times, i.e. once a year. How can he know that the teachers are useful. If he is a true Supervisor, he must come and supervise the teachers and the classes, once a month. We are quite glad to receive him if he gives us some instruction in Biblical and other subjects.

8. That as to the admission fee I beg to submit that the admission fee from each pupil is only Rs 4/- only, but the Pastor is taking Rs 14/- from each pupil out of which Rs 4/- is shown in the C & D Forms monthly but the remaining Rs 10/- is being held by the Pastor. In 1929 Rs 25/- is collected in 1930 Rs 23/- and in 1931 Rs 24/- total Rs 72/-. This collection is contrary to the code (section 253 & d. code). The Padri tells us that he is spending it for the Boarding but no account is shown in the Boarding account. I think the Padri has spent it for his own. I beg most humbly that the same amount Rs 72/- may be recovered from him and out of which Rs 45/- the price of the furniture (school) may be given to the Contractor, which is still unpaid.

Under these circumstances, I beg to state that

These are the true facts talked of, at which the
Padri out of envy and anger has reported against
me, after a long time. I hope you will be
graciously pleased to decide the matter with
favourable consideration for which act of
kindness I shall, as duty bound, ever pray.
I am quite ready to witness about the matter
if the commission is coming to Gumla for enquiry.

I have the honor to be,
Sir,

Your most obedient servant,

Ignatius Lakra
Hd master,

Received, 15.1.32

Register No. 612

14.1.32 J0

24

The Secretary,
Church Council, Lutheran Church,
Bhotanagpur & Assam.

Through,

The Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 137
d/-14.1.32.

Burju, the 14th January, 1932.

Forwarded with
great pleasure
and favourable
recommendation.

Dear Sir,

N. S.

Head Supr.
Luth. Schools.

I have the honour to inform you that I have been given to learn that the post of a teacher is vacant in our Gossner High School, Ranchi, and I beg to offer myself for as a candidate for the same.

The Council is aware of the fact that I am in the capacity of a Headmaster in our Lutheran M.E. School at Burju with a pay of Rs 70/- per m. This is a school which has its roll number always lower than what any other of middle schools has. And I suppose consequently that this school receives very low income from school fees. Should I be transferred from here to our High School another Headmaster could be appointed for Rs 50/- and thereby the expenditure of this school can be lessened.

Therefore I request very earnestly that if some such arrangement could be made the Council will not find it unsound.

Yours sincerely,
B. Munde,
Hdmaster, Burju.

Church Council
Received 12.1.32
Register No. 610
Date 12.1.32
File 24
Reply No.
Date

The Secretary, Lutheran Schools Council, Ranchi,

Through, The Head Supervisor, Lutheran Schools, Ranchi

Dated: Gumla, 12th January 1932.

Sir,
Most humbly and respectfully I beg to lay a few following lines with reference to the letters Nos. 1908, 28 5/10/12/31 & 5/1/32 respectively and other letters also, if possible, for your kind and favorable consideration.

That the confiscation of books only meant to discourage the boys from keeping the government prescribed books.

That inconveniences and difficulties were duly shown in my

petition to you 5/27/11/31 but no reply sent to me or yet except a reply as per letter No. 1908 5/10/12/1931 which ^{was} the reply to the complain sent against me by the Local Padi not the Headmaster.

Memo No. 115
d/- 12.1.32.

The petitioner appears to be obstinate and in subordinate. The best remedy for him to let him stay there at Gumla permanently and his name be struck off the roll of the M.E. staff and his pr. rd. contr. be stopped from January, 1932.

The petition however, is forwarded to the Secy. C. C.

That regarding the letter No. 285/5/1/1932 I beg to state that the petitioner realises himself his inconveniences and difficulties who has had the experiences of them one after the other.

That regarding the climatic activities I beg to state that geographically and scientifically the different places within the area of 1 square mile may differ in climate on a/c of the earth crust and other natural phenomena then it will

certainly differ at the distance of 30 miles, that is half the geographical degree. It is also known to all that the climate of a place may suit one but may not suit the other on a/c of the differences in health of the different bodies.

It is not the lame excuse that my wife is sick but it is the real fact. The witness is the body of my wife itself.

That I don't want to rule over the Church Council but I want to serve under her as I served under her for so many years without any complain regarding the school. You may be convinced by the reports of the officers in the visitor's books. P. P. O.

A. Singh
Head Supervisor
Luth. Schools, Ranchi

That I sent a memorandum to the Church Council and a petition to the Inspector not an order. The Church Council herself promised me to transfer me to the M.B. School. But if she desires to keep me where I am so much the better for me on conditions that my P. Fund Contribution goes on as usual.

Moreover I never have been informed that the Church Council has fallen into the pecuniary difficulties except the information given by the Head Supervisor on 22/12/31.

That so far as my poor opinion goes I am not the servant of the mission alone but I am the servant of the mission plus government. Had I not been the servant of both I would have suffered greatly. Further because if the mission fulfils the conditions of the government then only there exists a school. The sooner the mission violates the rules and regulations the quicker the government brings the schools into non-existence. The Church Council and the Head Supervisor, the mission authorities, know all the rules and regulations by themselves. I therefore thought it better to write the next authority, the government for information and intimation only. Please refer these articles of the government = 33, 34, 344, 359 Sect: 325 and others also. These articles show that the government has full powers upon the schools except a few.

Further, Sir, everybody is at his liberty to submit his resignation but none will do it without full settlement.

Regarding a strong hand like that of the Local padri I have the honour to state that on Sunday, the 6th December 1931, I was sent to Bhaha by the Local padri to disallow the Gulinis party to go into the church for service. I did not know that the padri had brought a charge against them into the hands.

P. P. O.

I went there unhesitatingly. When I reached the village I saw a police outside and 3 persons inside the church. I inquired about it and learnt that a charge has been brought against the other party and the S.D.P. is expected soon. I waited for him. When he came I took him to the church. He got into the church and said to me "Why have you come?" I said to him, "I came not to allow the Julius party to come inside the church". He went on saying "If they come into it forcibly what will you do?" I said to him, "I shall do nothing to them." He then said, "Why, are they not Lutherans?" I said to him I don't know what padri has done in the Thana. Again the S.D.P. said to me "Is it proper that padri should report to the Khas and sit down idle at home?" At this I said to him a word I know that the padri has brought a charge against these people regarding religion. I would have not come. The S.D.P. gave emphasis on this sentence in the Thana and the padri was insulted by the following words:

There is no breach of peace but you bring false charges against these people." He then requested Julius to go on with his service outside and obtain the property from the mission authorities. The sun after his toilsome task went to the west to rest and we all came home for rest. It was dark and the clock struck 6 or 7. The padri came to the mission quarter from his red bungalow with his lantern. The lantern was too strong to allow the padri to see me who was in my verandah. He called me by my name and said to me come to my house. He reached his quarter first and went into the room with his lantern and called out to his sons, "Paper, Paper". By that time I reached the verandah. I am not sure whether he got a piece of paper or not but I know S.P.D.

these following things which I write you for information and consideration.

That he came out of his room with his lantern and seated himself on the long bench lying on his ^{wounds}. He did not ask me to sit down. I saw his countenance, posture and gesture that his anger was great. Had there been angels sent from heavens to extinguish his anger they would have failed to do it. He cried out with thundering words "I sent you to see the matter not to speak high of yourself. I said to him "Would you send me as well as the police?" He went on saying "Why did you insult Michael?" I said to him "Who will be responsible for not allowing me to attend the church service?" He said to me your wife does not come to church. I for the last time said to him, "How many times have you come over to my house?" He then at this said go and I came to my lodge. I kept the whole night awake thinking over the matter which happened between us before supper. This quarrel took place on the 6th Dec: 1931. On Monday the 7th Dec: before the sunrise I went to the padri to beg forgiveness for trespasses. The padri was in his verandah on the same long bench. I sat down by the side of the padri and prayerfully with low tones spoke these words. Last night I troubled you by my words. Please forgive me. The sooner these words uttered the quicker my eyes expressed sorrow with tears. He may not know but I know it and write it to you. But He the Almighty knows it. The padri said this much only to me "I sent them before but I know that they are not fit so I sent you to see the matter. He at that ^{time} never expressed that he has kept the same anger in his heart.

P. T. O.

True मुमकनो कानो पर्व रोज त त नो द तौ: १२-१३३३ को पादरी वरि
Copy ५३२ कुपू बुलाया खोले लेकेरि माष्टर के बारे लन्द-लन्द-भा
बानि पूधा सो सही -

Sd/- Helon Lakar

४. १२-१९३१-

True copy-

मै जागुवा सुरेभ उम १५ वर्ष थर सीर निवताहुं कि मुप्रको
वानी पर्व रोज तां ६-१२-१३३१ को पादरी बज
जिद कुपूर बुलाया श्रीर शक्तिप्रकाश माहर के बारे
भूठमूठ ने खलाबल पदा सो सही : सही किया

Shagun Suren
8.12.31.

He is a cunning experienced old padri. He manages his works in such a way that none can find faults with him. But it may be known to you that he has never forgiven me.

In spite of forgetting and forgiving them of my trespasses he has kept it in his heart and is endeavouring his utmost to ruin me and bring losses to me.

Please bear in mind his anger, malice, revengefulness, ambition and what not are his habits. He always unnecessarily adopts a hole and corner policy for the prosecution of his malicious design. I know this because he has brought a charge against me. The charge may have reached you by the dead mail as it especially concerns with school matters.

He also has impelled me to coach his sons on gratis. I am afraid to write you how should I go on with him in future regarding religious rites and ceremonies.

Herewith I beg to attach copies of evidences of witnesses.

Regarding the money from the boys I beg to state that the monitors had full responsibilities and I had no record of money. Herewith I beg to attach copies of records obtained from the class monitors and keep the vouchers and other necessary receipts with me.

Under the abovementioned circumstances I pray that you would kindly discontinue to trouble me on account of the complaints from the Local Padri and give him instructions to walk as a padri and have a spirit of a padri, for which act of kindness I shall ever remain grateful to you.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Shanti Prakash Baskla

U. P. School, Gumla.

True copies.

I clay

देर कर के आले वालों का जैन का दिनांक १६३१
गरिब लड़कों के लिये दान

क्रा.	प्राप्त	ता:	रखी	ता:
१	मैं जगुवा से ॥ पा ॥	६-१०-३१	शरमा को मिला	१२-१०-३१
२	॥ वे आस से ॥ ॥	६-१०-३१	१ आल मरवा ॥	१२-१०-३१
३	लेफन से ॥	६-१०-३१	२ पत्र ली ॥	१२-१०-३१
४	जगुवा से ॥ ॥	६-१०-३१	३ व्याकरण ॥ ॥	१२-१०-३१
	जगुवा से ॥ ॥	६-१०-३१	जमा ॥ ॥	
	सब रखी दान हाथ में रहे			
	मीनियर मरियर कुलूर सहे किया सहायक मीनियर कुलूर			ता: ६-१२-३१
				लक्ष्मी I class

It's class
देर कर के आने वाले का पैसा इत्यादि
गिनेब लड़कों का दाव

क्र.	नाम	पद	वर्ग	तारीख
१	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२	गङ्गा	६	१३०	१३
३	प्रसाद	७	१३०	१३
४	प्रसाद	७	१३०	१३
५	नाम	७	१३०	१३
६	प्रसाद	७	१३०	१३
७	जगन्नाथ	७	१३०	१३
८	जगन्नाथ	७	१३०	१३
९	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१०	जगन्नाथ	७	१३०	१३
११	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१२	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१३	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१४	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१५	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१६	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१७	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१८	जगन्नाथ	७	१३०	१३
१९	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२०	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२१	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२२	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२३	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२४	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२५	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२६	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२७	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२८	जगन्नाथ	७	१३०	१३
२९	जगन्नाथ	७	१३०	१३
३०	जगन्नाथ	७	१३०	१३

Church Council
 Received 11.1.32
 Register No. 605
 Date 11.1.32
 The Church Council,
 G. E. L. Church, Ranchi.
 Reply No.
 Dear Sir.

No. 108

11/1/32

Ranchi,
 January 11, 1932.

In obedience to the order of the Council I went to Gumla to investigate about the matter of Shantiprakash Bakhla's confiscating boys' books and taking fines from them without the permission of the pastor supervisor or the headmaster but because the school was then closed I could find only three boys from whom I could inquire about the case that the matter was just the same as it was reported by the pastor. But Babu S. P. Bakhla admitted before me that he did confiscate the books but he returned them to the boys before the examination. Now when the boys came back to school from their holidays the pastor again inquired into the matter from the boys in the presence of the teacher and then he found it quite different from what S.P. Bakhla told me in Gumla. Babu Bakhla made a false statement before me. The deposition of boys and the report of the padri is enclosed herewith and I consult the C. C. to advise me what I should do in this matter because Bakhla Babu made a false statement before me.

Yours sincerely,

N. S.

Head Supervisor,
 Lutheran Schools, Ranchi.

1. ~~उपरोक्त~~ उपर्युक्त के लिये आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को

मालिकता प्रमाणों को अपने सम्पत्ति से निम्न लिखे हैं 1032 से लगे
मा को माली को सम्पत्ति नहीं उर्फ है मालिक

1. कर्मचारी को प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को प्रमाणों
निम्न मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से

2. ~~उपरोक्त~~ प्रमाणों से 20 मालिकता प्रमाणों से को प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से

3. मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से
को मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से
को मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से
को मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से

इस प्रकार मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से

4. मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से
को मालिकता प्रमाणों को मालिकता प्रमाणों से को मालिकता प्रमाणों से

D. N. S.

मैं सच सच कहता हूँ

माने साफ से नहीं उतारा रस

लिपि सेकेन मास्टर १ वैसा

फेन लिया । मैं खुद

सेकेन मास्टर के हाथ में

दिया

कागुवा भुरेन

कुछही $\sqrt{\quad}$ काम ।

मैं सच कहता हूँ

माने साफ नहीं उतारा रस लिये

सेकेन मास्टर १ वैसा फेन लिखा था

पर वैसा न होने के कारण नहीं दिया

~~बहुत~~ ~~मंद~~ ~~प्रिया~~ समुच्च काम के

लड़का से जपता करवाया और वै

सब जपता फिताली के जो सेकेन मास्टर

को दिया । उस फिताली के मास्टर

लड़का को दिया कि नहीं मैं मुझ

मास्टर नहीं हूँ ।

हलीन लच्छाई इकावली

काम $\sqrt{\quad}$ वा ॥

मैं सच सच कहूँ कहूँ
 कि मेरेन्द्र मासय मेरा ५०
 हिन्दी लिख करीब परीक्षा
 के पहले जबत किया कस
 कि हिन्दी का मोने मियाही.
 लिखने कहा का जस के सिसा
 से लिखा और कहा की दो
 आना जरबसा दे के लिख
 लेजो पर १७ आना जरबसा
 दे के परीक्षा के पहले लिख
 लया।

जुसाप देपो
 गम्भारिया ह्मास
 ॥ वा

११
माँ सच २ कहता हूँ लि
सोने के मास्टर ने मेरा भूगोल
लिखा उसका दिया है
पढ़ाई हिंदी लिखाने
कहा का उसने लिखा
आर सिवही लिखने कह
का मगर चिन्ता है सिद्ध
झोरे ७ आना मेगा का
पर ७ आना नहीं दिया
मगर ७॥ मेगा दे के पाए वा
ने पढ़ने लिखने पपास
लाया -

गायरी लम्बु
ठागारिख के
सास ॥ वा

मे सच सच कहता हूँ कि
सेनेट मास्टर ने मेरा दो जितप
नमब्य गीत और उपर इतिहास
जपत किया। मैं क्यों कि हिंदी
का मेने लिखने कहा गया उसको
नही लिखा और जितप जपत
कर के १५५५ बना मंगा गया
पर १५५५ बना न उपब तब नही
दिया हूँ इमतिहान के कप हले
जपत किया और उपब तब नही
दिया गया है और मैं मंगने को
नही गया हूँ। न हूँ म गिद्ध
गम्भारिया

[illegible]

इतने लड़कों का तो बहुत बड़ा सभ में हाथों के साथ ही इमारत से साबुत पालना— जोड़ने को
सोसा से मिलने— जोड़ें गढ़वाली कुश— जोड़ें शक्तिदान के साथ प मिलान देते ल पालने व—
मिलने गढ़वाली के बाजार लड़कों से पूछ पाछ से साबुत पालना मिलने पालना मिलान
जबत मिल पाएगा— जोड़ें मिलने तो पैसा में साबुत मिलने—

૧- ભાગ્યદાન પુસ્તક - ૭૫ ભાગના ભાગના હતા
 ૨ ભાગ્યદાન ગાથાઓ ગાથાઓ માટે ૧૦ ભાગના હતા - ૭૫ ભાગના હતા
 ૩ મહાભારત ગાથાઓ - ૭૫ ભાગના હતા

४ होलेनलनडा ॥ परवाना मंगा-
५ यत्रकवर्गो स्वस्थभवत परवाना मंगा- मित्राववाधमनो-
६ परवाना ॥ गरीबमोरी गरीब परवाना मंगा ॥-
७ धुरन ॥ परवाना वासुल-
इनलडवों में से पहिले वनों का निज हाथ का निरवा हुमा तरेव म पौरी मिल में
मेक दते हैं- इन सब ठपरो का प्रमारा से ठोकर साधुता होगया है मिलनडवों का
मिताव अवत निज गया मिलनो को परवाना वासुल पारने से दिया गया मिलनो
का मिलन म मनीत क शांति प्रकाश व सत्ता के हाथ हो में है- बड़े माप सो सन्तो
वात हो निरव माध रतने बहुत दिन सोखने को मिलनो को अवत रखता है
मोरी लडवों से परवाना वासुल पारने चुपचाप रहता मोरी सुपर मैसर के
इमार के समय मिलन का के साथ प्रता हा मूठ खोजता है-
Pastor Supernumer Pastor J. Hujar
7.1.32

Church Council

Received. 7.1.32

Register No. 576

Date. 8.1.32

File. 24

Reply No.

Date.

7/1/32
Inspection remarks on the Koronjo Luth. M. E. School by the D. I/S, Ranchi, d/- 12. XII- 31.

I paid a visit this day to the G. E. L. M. E. School at Koronjo. The school is in receipt of a Govt. grant-in-aid which has recently been curtailed in pursuance of orders of retrenchment from the competent authority. Originally the grant stood at Rs 95/- per mensem. The monthly ~~cost~~ establishment charges on account of the teachers' salaries alone amount to Rs 269/8/- apart from Rs 34/- a month for contingencies, servant, prize, library, building repair and contribution ^{to} the teachers' provident Fund. This is met by Government grant-in-aid supplemented by the limited fee income and a considerable contribution by the mission.

The school buildings consists of three blocks. The main block accommodates classes IV-VII while the lowest three classes sit in out houses to which they are shifted sometime ago. The floor in more than one class room was found ^{to} littered with bits of paper which were quite out of place and which help only to give a slovenly appearance to the class rooms. I trust the teachers will spare no pains to see that the class rooms are kept scrupulously neat and tidy in future. The existing supply of furniture and equipment seems to be almost adequate for the present needs of the institution. The black-boards in a few cases seem to stand in need of petty repairs and of a fresh paint in all cases if they are to last longer.

The school library will have to be enriched by the purchase of a number of juvenile up-to-date publications. I am glad to find a number of good books on the art of teaching, though fresh additions of up-to-date publications will only help to remove a real want. I doubt very much, however, if the library has up-to-date been profitably turned to account by the teachers in particular.

The Hd.m's attention has been drawn to this.

Noted.

Noted.

Noted.

Now the teachers
have been paid up to
July.

The staff consists of nine teachers. The Head master is an I. A. who is stated to have passed the Departmental test. The 2nd master is a matric. The 3rd and the 4th masters are matric C. T's. The so called head pandit is a V.M. while the 2nd pandit is V.M. as well as C.T. The 3rd and 4th pandits are both trained on M. V. basis while the Bible teacher who brings up the rear, is a matriculate. The teachers have been ^{paid} paid in full up to June, 1931. The only I.P. scholar has received payment up to September last.

The numbers on the rolls seem to have materially sunk as compared with the same at the visit of my predecessor in February, 1930, as well as the by Inspector's last two visits. From 192 the numbers declined to 186 and then to 129. The falling off is abnormal and shows a steady decline and if such a tremendous leakage continues it is bound to give a rude shock to the stability of the institution. I was given to understand that the losses, striking as they are, are due to the worldwide economic depression and the consequent inability of a majority of parents to pay monthly school fees of their wards. The present number on the rolls stands at 102, of whom only 38 assembled this day and were distributed as follows :

Class VII 0/15, Cl ^{IV} 8/15, cl V 9/22, cl IVA 5/16, cl IVB 4/10, cl III 8/11, cl II 4/8 and cl I 0/5 equal 38/102.

I fail to see any need for duplication in class IV and the two sections could easily be amalgamated into one. If this were done, it would " ipso facto " reduce the number of teachers by at least one. The fact that the teachers have ^{not} been paid beyond June, 1931, is a clear index to the inability of the school to pay its way and points to the need for the exercise of economy being urgent. One way in which that can be effected is to transfer any two teachers to any other school and to reduce the strength of the staff ~~to~~ reasonable mini

Noted.

Noted.

to

num

As soon as the G.A. was received it was paid to the School.

Attempt is being made by the C. C. to get necessary fund.

It is absolutely essential however, that the teachers are paid up-to-date at as early a date as possible and are henceforth paid in time. This is one of the conditions to be complied with, otherwise the Government grant-in-aid would be liable to be withdrawn. I understand the grant for the 3rd quarter of 1931-32 has already been passed and there seems no reason now why payment to teachers should any longer be postponed.

The committee of management consists of 5 members. They should arrange to meet early and put their heads together to meet the present financial crisis the school has got to face.

Of the scholars on the rolls, 1 is a Hindu, 6 non-Christian aboriginals and 95 aboriginal Christians. There is a hostel attached to the school with 61 boarders.

The following are the results of the last annual examination (i. e. for 1930) : Class VII 9/18 Class VI 21/37, cl V 17/23, cl IV 27/45, cl III 18/19 cl II 16/18 cl I 6/9. The figures speak for themselves and leave much to be desired. The school can also hardly boast of having won any scholarship at the M.S.C. examination.

Noted.

The records and registers with accounts were duly checked. They are not up to date, as no accounts for November have been written. The balance at the credit of the school at the end of October last was stated to be as follows :

1. Library fund Rs 29-10- 6
2. Prize fund 19-10- 3
3. Contingent account 34-11- 0
4. Building repairs 115- 0- 0
5. Exn fee account 34-10- 3
6. Athletic account 31-13- 9

The balance in the General cash book at the end of October, 1931, was Rs 22-8- but as the Headmaster

The headmaster's attention has been drawn to this

do

The teacher in charge of the subject has been warned.

H.M.

It will take time for the aborigines to ~~pr~~ be able to pronounce " f " correctly

was away on leave, and as the post office Savings Bank books are stated to be in custody, I was unable to look at them and to verify the accounts on reference to them. The accounts are not neat and tidy nor are they free from arithmetical in accuracies. Vouchers could not be produced in a number of cases, on the spur of the moment when called for, though preserved in separate guard file. I am afraid they have not been carefully and accurately numbered which is really most annoying at the time of checking. I trust the accounts will henceforth be kept with due care and accuracy.

The admission register shows only 29 admissions this year. This register is also incomplete in places and the headmaster will be well advised to see that it is duly completed.

The classes were examined with the following results :. Cl VII.. having had their annual examination was dissolved after the recent M. S. C. examination. Cl. VI.. I was pleased to find English conversation fairly good on the whole. There are a few boys, however, who could hardly be said to be quite up to the subject but they can easily make it up with a little increased self-application. English pronunciation leaves much to be desired and the teacher in charge of the subject should take care to see that no mistakes or crudities of the boys go uncorrected at this stage. Words beginning with " f " seem to be the stumbling block to not a few. Arithmetic.. poor. None could work out a simple problem. Hindicomposition.. not bad but admits of further improvement. The boys are not well grounded in giving explanation. In Geography a frequent reference to maps is necessary, as courses of important rivers are not fully familiar to the boys.

Cl V. English conversation fairly good but there are a few boys who need to work hard to improve. Hindi composition poor, only 2 boys seem to have made some headway and to be ahead of others. In Geography the courses of rivers are not known to the boys.

Cl. IV:- English conversation fairly good. English pronunciation admits of improvement. An accurate use of the interrogative form should invariably be kept in view and never lost sight of. Arithmetic .. poor. None could do a simple problem requiring a little exercise of intelligence. Hindi Spelling requires attention and admits of improvement. Cl. III. Arithmetic.. poor. Spelling..poor Explanations.. poor. The boys were silent when asked to measure their class room.

Class II. Poor at notation. Spelling not bad. Hand writing should receive increased attention. Cl I. None present. Care should be taken to see that the beginners received close and constant attention. The teacher in charge of this class will be well advised to see that the children are kept fully occupied during school hours and that no pains are spared to make the work really interesting to the children. The use of reading sheets instead of text books for the 1st half of the year, is calculated to ensure marked progress, while the use of marbles, seeds, beans, or their coloured ^{sticks} ~~articles~~ of split bamboos tied up in bundles of ten each placed in the hands of each child to the extent of 100, would give the children a clearer and better grasp of numbers.

The headmaster's attention is drawn to this.

On the whole the school is doing fairly good work and is a veritable boon as having removed a real educational want in such an out of the way place in a backward area and I congratulate the Mission on the excellent work they are doing and the service to their fellow-men and wish them every ~~success~~ possible success.

The S. I. of schools, Simdoga East was with me.

P.S. A copy of the inspection note should be sent to me for record in my office.

Sd/- Harbans Lal,
District Inspector of Schools,
Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 8th January, 1932.

Copy with marginal notes of the undersigned is submitted
to the District Inspector of Schools, Ranchi.



Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 99

Dated Ranchi, the 8th January, 1932.

Copy forwarded to the Church Council, G. E. L. Church,
Ranchi, for information.



Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council
Received... 7.1.32
Register No. 595
Date... 8.1.32
File... 24
Reply No.
Date

Copy of inspection remarks by the D. I/S, Ranchi on
the Lohardaga M. E. School (G.E.L.) dated 10.12.31.

I visited the C. E. L. Lutheran M. E. School at Lohardaga on the 10th instant. The school building consists of two blocks. The main block is made use of for the accommodation of classes III--VII while the 2nd block rather an out house is used for joint classes of accommodating classes I and II. The existing accommodation is almost sufficient for the present needs of the school. Though there are few rooms that can hardly be said to be well lighted or well-ventilated. An enclosure on the back verandah of the main school building is really an eyesore and helps only to shut out light that would otherwise find its way into the building. The sooner it is set right the better for the teachers as well as taught.

The existing supply of furniture leaves much to be desired, but it does serve the purpose, nevertheless inspite of its misery. I am glad to notice the school authorities have taken the trouble to give effect to the Inspectors of Schools' suggestion in respect of cutting the long benches or desks into single desks or tables with little mats to seat them in each case. The ultimate aim should however be that each child can make his own mat for his own use. The little ones should also be trained to make their own little baskets in which they can put their coating materials, such as coloured marbles, beans, seeds or the sticks of split bamboos.

Noted.

There are 9 teachers on the staff. Beyond the 2 English teachers, one of whom is an I. A. and the other a matriculate there are 2 non-matriculates U.T's, 2 V.M's, one untrained M.E., one non-matriculate and one M.V.E.T. pass certificate holder. They have been paid up to July, 1931. The present number on the roll is no more than 182 of whom no more than 124 were actually present as detailed below :

cl VII 0/32, cl VIA 11/16, cl VIB 15/20, cl V 27/30
 cl IVA 19/27 cl IVB 16/21 cl II 12/12 cl I 13/13
 = 124/182.

Duplication will be kept
 only in class which will
 require.

I can see the need for duplication in class IV
 but the same for class VI is beyond comprehension
 unless there was a tremendous leakage during the
 course of the session, resulting in an abnormal sin-
 king towards the close of it.

The following is a statement of the monthly in-
 come and expenditure on the upkeep of the school :

Particulars	Monthly income	particular	monthly exp
Fee	50/-	Trs' sales	272/-
Govt. grant	82/-	Serv & conting	16/-
Mission contrib	178/3	Prize & Libr	4/-
		Trs' prov fd	8/3
		Buildg repairs	10/-
Total	310/3		310/3

As C. C. is trying
 hard to get money to
 pay the teachers in
 full but up till now
 it has not been success-
 full and it has not
 given up its attempt.

The mission contribution is in heavy arrears
 due to the world wide economic depression and the
 teachers have been paid only up to July, 1931. This
 is a matter for serious consideration and unless
 money is raised locally by the followers and autho-
 rities of the Lutheran mission to meet the long out-
 standing deficit to pay the teachers in full up to
 date, the Government grant-in-aid that is given on
 certain conditions would be liable to be withdrawn--
 payment ^{to} teachers in time being the first and for-
 most on the list. I do not wish to be misunderstood
 on this point. I shall certainly be the last person
 to throw cold water on the enthusiasm of the staunch
 followers of the Lutheran mission or the public spi-
 ritized teachers who have shown unflagging enthusiasm
 and a spirit of patience and self-sacrifice in the
 house of trial. For all that I have nothing but the
 most uninstructed praise. In respect of a break of
 the grant-in-aid rules however my hands are tied and
 all are bound to abide by the rules on the subject.

I trust the mission will rise to the occasion and put full herculean effort to tide over the present financial crisis.

There are six Hindus, 5 muhammadans 56 aboriginal non-Christians and the rest namely 115 aboriginal Christians.

There are 10 freestudentships holders in the middle classes taken to gether and 26 in the primary classes the ~~number~~ number in the former case is in excess of the prescribed maximum and needs to be brought in to line with the limit as laid down in the relevant permission of the code. There are 53 boarders. They should be scrupulously neat and tidy henceforth. The ~~cost~~ per boarder is stated to be Rs 3/- a month apart from a seat-rent of annas -4- per boarder. There is one U.P. scholar who has been paid up to August last. His bill for the remaining months is over due and should now be submitted to my office immediately.

The result of the M.S.C. examination were not so bright as only 8 out of 13 sent up were able to get through. Though 1 scholarship was obtained in 1929. The result of the last annual examination for the other classes were as follows :
cl VI 27/56, cl V 19/31, cl IV 28/63, cl III 13/15
cl II 11/14 and cl I 6/11. I am satisfied the promotions are allowed with discretion but the results leave much to be desired.

The registers and records were examined. The T.C. guard file should be kept systematically. T.C. No 88 could not be traced out as there has been no systematic filing of T.C's. The admission book shows 96 admissions this year. It should be completed. The cash book is not written up to date. Receipt side is filled up to September, 1931, but the disbursement side is filled only up to July, 1931. In the teachers' acquittance roll the teachers' receipt should be stamped for more than one ^{mn} month. Teachers' salaries for June and July, 1931, paid as they are in full do not

The free studentship was granted in January in classes VI & VII when the roll No. was 40 in cl VII and 58 in VI. But in course of time on account of economic depression the roll No. fell ~~to~~ ^{amendously} amandously.

Hd.m.

Steps will be taken to keep the boys neat and ~~given~~ tidy.

Hd.m.

The hd master's attention has been drawn to this.

The teachers have stamped the acquittance roll.

Hd.m.

The Hd.m. has been warned to keep ~~the~~ all the account books up to date.

appear on the disbursement side in the cash book. This is very irregular and the account must be kept up to date. The other accounts are also not clear nor were they found up to date.

The classes were examined. The teaching of 3 R's in classes I & II should receive careful attention on the lines pointed out this day and reading sheets should be turned profitably to account. Arithmetic throughout requires careful handling and was found far below the mark except in class V that did well. English pronunciation is not bad but classes IV to VI need plenty of drilling in English conversation in a variety of ways.

The S.I./s. Lohardaga was with me.

Sd/- Harbans Lall,

District Inspector of Schools,

Ranchi. 10.12.31.

Memo No.

Dated Ranchi, the 8th January, 1932.

Copy with marginal notes of the undersigned is submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi.

Memo No. 105 Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Dated Ranchi, the 8th January, 1932.
Copy forwarded to the Church Council, Ranchi for information.

Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Inspection remarks by the D. I/S, Ranchi on the Luth. M. E. School at Takarma, dated 14. 12. 31.

24/1/32

Church Council
Received..9.1.32
Register No. 594
Date..8.1.32
File..24
Reply No.
Date.

Noted. As soon as funds permit the matter will be attended to.

I paid a visit this day to the G. E. L. M.E. school at Takarma. The sub-inspector of schools, Simdega East and Basia were also with me. The school building consists of six class rooms, and accommodates classes V to VII (both the sections). The smaller has got three class rooms and is made use of for the accommodation of the two sections of class IV and class III. The existing supply of furniture and equipment somehow serves the purpose but it needs to be supplemented to the extent fund permits, A number of wall maps will have to be ~~procured~~ purchased while a few black boards have to be painted a fresh. There are a few rooms that one would naturally wish, were better lighted and better ventilated. The Geometrical apparatus will ^{have} likewise to be supplemented to meet the requirements of the duplicate sections.

The staff consists of ten teachers including the religious teacher. The Headmaster is an I.A. and B.D. and has got 3 matric C.T's to assist him. Besides this there are two V.M's and three teachers who are trained on the M.V. basis, apart from the Bible teacher. The teachers were all present this day and have received payment in full up to June, 1931. It is really a pity to find that the teachers remain unpaid for months and months. I trust that the Church Council will put their heads together and find ways and means to ensure that the teachers are henceforth paid in time.

There are 3 L.P. scholars who have been paid up to September, 1931.

There were 53 new admissions this year. The admission work should be completed as pointed out this day. No signature need be obtained from guardians or witnesses in case of admissions on transfer in future. I need hardly say that such signatures were ~~unnecessarily~~ unnecessarily obtained in a number of cases this year.

The C. C. is trying its best for this purpose.

Out of 182 on the rolls 99 were present this day distributed in the several classes as follows :

Cl VIIA 0/18, cl VIIB 0/17, cl VIA 16/19, cl VIB 15/21
cl VA 10/18 Cl VB 12/20, Cl IVA 18/26 Cl IVB 13/21
cl III 15/22 = 99/182.

Class VII has been dissolved after the last M.S.C. examination. There is also a hostel attached to the school with 93 boarders. 97 boys are living with recognised guardians.

There are 6 Hindus, 171 Christians and 5 others.

Free studentship was granted to boys in the beginning of the year when the roll Nos were high but owing to financial depression they came down and so the number of free students towards the end of the year appears to be excess.

There are 13 free studentship holders in the middle stage and 30½ in the primary stage, apart from the 3 L.P. scholars, the number in the middle classes is far in excess of the prescribed maximum and needs to be curtailed and brought into line with the limits laid down in the relevant section of the Code.

The average number of the roll, average daily attendance and the percentage of attendance for the last six months are stated to be 204, 172 and 86^{respective of} against 236, 205 and 86 in each case for the corresponding period last year. The decline in the numerical strength is attributed to the fall in the price of food stuffs.

The cost of upkeep of the school on account of the teachers' salaries alone amounts to Rs 279-4-0. This is met in part by a Govt grant of Rs 95/- a month, though it has had to be curtailed of late. The income from school fees as calculated on the strength of the last year's actual collections was Rs 89/- a month but there is also a recent falling off in this and the income has then come down to Rs 66/8/- more or less. The rest is contributed by the mission. As this is a big amount, the Council would be well advised to raise money locally to keep the school going.

The committee of management consists of 7 members
The meetings are held fairly regularly.

This is exactly so.

The Hdmaster has been asked to keep all ~~xxx~~ vouchers.

The school accounts were checked. I was sorry to note that vouchers were wanting in not a few cases. The accounts do not seem to have been audited for a long timepast. Vouchers need to be obtained in all these cases in which they were wanting as pointed out. The school like other Lutheran schools is face to face with a financial crisis but that is no reason why accounts should not ^{be} kept up to date. Moreover I discovered a number of grave irregularities in the

The matter will be ~~looked~~ writing of Cash Book. As an instance in points, payment looked into. An explanation will be asked for why the hd. m. should show that the April and May payments are for Jun

of the teachers' salaries for two months, April and May, 1931, though made actually, on 7.7.31 as evidenced from the teachers' acquittance roll, appears on the Disbursement side for June, 1931 in the Cash Book. This is irregular in the extreme. This should be set right and instructions given on this score, should be strictly followed in future.

Agreed that it must have to be so.

A checking of accounts shows the following balance of the credit of the school under each account on 31. 10. 1931 :

- | | |
|-------------------------|-----------------|
| 1. Prize account | Rs 24- 9- 0 |
| 2. Library | , 10- 2- 6 |
| 3. Contingent ... | , 11- 0- 0 |
| 4. Athletic ... | , 1- 7- 6 |
| 5. Building repairs ... | , 66-15- 3 |

Step is being taken to curtail the number of staff.

It is a point of serious consideration if in view of the prevailing financial stringency the staff could not possibly be curtailed.

There are 331 books in the school Library. The last prize giving was held in December, 1930. There are 4 play grounds.

The results of the last three years' M.S.C. examinations are as follows :

Year	No sent up	No passed	No winning schship
1928	28	14	1

1929	27	15	..
1930	30	11	..

The figures speak for themselves and leave much to be desired.

The classes were examined with the following results
 Cl VIA.. English Reading -- should be more fluent and should not be a merely mechanical process. Power of expression and understanding in English should be developed more carefully. In Geography courses of rivers are not fully familiar to the boys. Geometry has not been taught intelligently. Arithmetic-- poor. Boys should be given plenty of drilling in the solution of problems requiring an exercise of intelligence.

Cl VIB.. English conversation fairly good. English pronunciation admits of improvement. English text should receive closer attention. Geography and Hindi were found rather below the mark.

Cl VA English conversation.. fair but plenty of drilling is needed. The teacher in charge of English seems sensible. Arithmetic.. far below the mark. Geography and Hindi Spelling.. should receive careful attention.

Cl VB.. English conversation.. needs closer attention and students in need of improvement. Pronunciation as well as enunciation require closer attention. Hindi reading. good. Power of understanding .. good on the whole. Explanation of difficult words should receive increased attention. In Arithmetic the boys were rather slow and need to be given plenty of drilling. Geography and Hygiene.. fair.

Cl IV.. Hindi reading, spelling and explanation.. fair Hindi composition should be closely attended to. Geography. fair. In Arithmetical calculations the boys are rather slow. History should be more carefully attended to. English fairly good. Hygiene.. fair.

Cl III.. Hindi reading, spelling and explanation.. fair. Geography .. not satisfactory. Arithmetic .. not

bad. Hygiene.. fair.

The headmaster impressed me much and I trust the school will do well under his guidance in the near future and will give a good account of itself at the M. S. C. examination for 1931.

Sd/- Harbans Lall,

District Inspector of Schools, Ranchi.

14.12.31.

Memo No.

Dated Ranchi, the 8th January, 1931.

Copy with marginal notes of the undersigned is submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 102 ✓

Dated Ranchi, the 8th January, 1932.

Copy forwarded to the Church Council, Ranchi, for information.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.